प्रिय नगर वासियों को देव दीपावली की हार्दिक शुभकामनाएं

कार्तिक मास, शुक्ल पक्ष 20 वर्ष, अंक 325 पृष्ठ 8 मूल्य 1.00

अखंड भारत संदेश

www.akhandbharatsandesh.net

प्रयागराज से प्रकाशित

नगर संस्करण प्रयागराज | शनिवार 20 नवम्बर 2021 | विश्व निर्माण एवं मानव विकास को द्रुतगति प्रदान करने हेतु क्रियायोग आश्रम एवं अनुसंधान आश्रम की अनुपम भेंट

क्रियायोग संदेश

क्रियायोग आश्रम एवं अनुसंधान संस्थान प्रयागराज

क्रिया योगः साँच (सच Truth) को आँच नहीं। आँच अज्ञानता (अविद्या Ignorance) समय, दूरी व सापेक्षता की अनुभूति है जो समस्त दुःखों का कारण है। अध्यात्मिक वैज्ञानिकों ने यह सिद्ध कर दिया है कि सामान्य तरीके से जीवन जीने पर सच की अनुभूति के लिए व्याधि रहित लगभग दस लाख वर्ष की आवश्यकता होती है, लेकिन क्रियायोग अभ्यास से सच की अनुभूति एक ही जन्म में सम्भव है।

1. प्राचीन उच्च मानव सभ्यता मे वर्णित यज्ञ, वर्तमान में विश्व विख्यात 'क्रियायोग' है।
2. क्रियायोग अभ्यास वेदपाठ है, पूर्ण ज्ञान की अनुभूति है।
3. क्रियायोग अभ्यास ईश्वर अनुभूति है।
4. क्रियायोग अभ्यास अतीत, वर्तमान व भविष्य से जुड़ना है।
5. क्रियायोग अभ्यास जीवन मृत्यु पर विजय है।

क्रियायोग से सभी प्रकार की समस्याओं का समाधान सुनिश्चित।

10 मिनट का अभ्यास 20 वर्ष का विकास

प्रधानमंत्री मोदी ने रानी लक्ष्मीबाई को जयंती पर किया नमन

नईदिल्ली। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने आजादी की पहली लड़ाई में अद्भुत पराक्रम का परिचय देने वाली वीरांगना रानी लक्ष्मीबाई को उनकी 193वीं जयंती पर नमन करते हुए कहा कि भारत के इतिहास में उनका विशेष स्थान है। प्रधानमंत्री मोदी ने शुक्रवार को ट्वीट कर कहा, ह्लवीरांगना रानी लक्ष्मीबाई की जयंती पर मैं उन्हें नमन करता हूं। भारत के इतिहास में उनका विशेष स्थान है। उनकी बहादुरी को पीढ़ियां भुला नहीं पाएंगी। उन्होंने आगे कहा, ह्लमैं भारत के रक्षा क्षेत्र को बढ़ावा देने से संबंधित कार्यक्रमों में भाग लेने के लिए आज झांसी जाउंगा। उल्लेखनीय है कि प्रधानमंत्री आज दोपहर में उत्तर प्रदेश के महोबा और झांसी जिलों का दौरा करेंगे और 6250 करोड़ रुपये से भी अधिक की लागत वाली कई विकास परियोजनाओं का शुभारंभ करेंगे।

प्रधानमंत्री ने की तीनों नये कृषि कानूनों को निरस्त करने की घोषणा

नई दिल्ली। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने शुक्रवार को तीनों नये कृषि कानूनों को वापस लेने की घोषणा करते हुये आंदोलनरत किसानों से घर लौटने की अपील की। उन्होंने कहा कि 29 नवम्बर से शुरू हो रहे संसद के शीतकालीन सत्र में तीनों कृषि कानूनों को भंग करने की संवैधानिक प्रक्रिया को पूरा किया जाएगा। प्रधानमंत्री मोदी ने वीडियो कांफ्रेंसिंग के जरिए देश को संबोधित करते हुये गुरु नानक जयंती के अवसर पर लोगों को शुभकामनाएं दीं। साथ ही इस बात पर भी प्रसन्नता व्यक्त की कि डेढ़ साल के अंतराल के बाद करतारपुर साहिब कॉरिडोर अब फिर से खुल गया है।

प्रधानमंत्री मोदी ने कृषि विकास और किसान कल्याण को सरकार की सर्वोच्च प्राथमिकता बताते हुए कहा कि मैंने अपने पांच दशकों के सार्वजनिक जीवन में किसानों की चुनौतियों को बहुत करीब से देखा है, इसलिए जब मुझे 2014 में प्रधानमंत्री के रूप में देश की सेवा करने का अवसर

दिया गया तो हमने कृषि विकास और किसान कल्याण को सर्वोच्च प्राथमिकता दी। राष्ट्र के नाम अपने संबोधन में प्रधानमंत्री ने कहा कि हमारी सरकार किसानों के कल्याण के लिए, खासकर छोटे किसानों के कल्याण, गांव गरीब के उज्जवल भविष्य के लिये नेक नीयत से यह कानून लेकर आई थी। लेकिन, तमाम प्रयासों के बावजूद इतनी पवित्र, पूर्ण रूप से शुद्ध और हित की बात हम उन्हें समझा नहीं पाये। इस दौरान प्रधानमंत्री मोदी ने यह भी कहा कि देश के कोने-कोने में कोटि-कोटि किसानों और अनेक किसान संगठनों ने इन कानूनों का स्वागत और समर्थन किया था।

मैं आज उन सभी का बहुत आभारी हूं। उन्होंने आगे कहा, ह्लबरसों से यह मांग देश के किसान, कृषि विशेषज्ञ, देश के किसान संगठन लगातार कर रहे थे। पहले भी कई सरकारों ने इस पर मंथन किया था। इस बार भी संसद में चर्चा हुई। मंथन हुआ और ये कानून लाए गए। कृषि अर्थशास्त्रियों, वैज्ञानिकों, प्रगतिशील किसानों ने भी किसानों को कृषि कानूनों के महत्व को समझाने का भरपूर प्रयास किया। लेकिन, हम अपने प्रयासों के बावजूद इतनी पवित्र, पूर्ण रूप से शुद्ध और किसानों के हित की बात उन्हें समझा नहीं पाये। देश के नाम अपने संबोधन में प्रधानमंत्री मोदी ने कहा कि किसानों की स्थिति को सुधारने के महाअभियान में तीन कृषि कानून लाए गए थे।

मकसद यह था कि देश के किसानों खासकर छोटे किसानों को अधिक ताकत मिले। उन्हें अपनी उपज की सही कीमत और उपज को बेचने के लिए ज्यादा से ज्यादा विकल्प मिले। बरसों से यह मांग देश के किसान, कृषि विशेषज्ञ और किसान संगठन लगातार कर रहे थे।

7 साल में दो बार बैकफुट पर आई मोदी सरकार

कृषि कानूनों से पहले इस अध्यादेश को भी लेना पड़ा था वापस

नई दिल्ली। 7 साल की मोदी सरकार और इन सात सालों में यह सरकार दूसरी बार बैकफुट पर। इस बार रनरेंद्र मोदी सरकार के कृषि कानूनों पर किसानों का आंदोलन भारी पड़ा है। केंद्र सरकार के तीन कृषि कानूनों के खिलाफ करीब एक साल तक चले किसान आंदोलन के बाद आखिरकार सरकार को किसानों की मांग के आगे झुकना हीपड़ा है। सरकार ने काफी कोशिशें की थी कि किसानों को इस मुद्दे पर किसी भी तरह मनाया जाए। लेकिन किसान तीन कृषि कानूनों को रद्द करने से कम पर राजी नहीं थे।

कृषि कानून वापस, अब बीजेपी के साथ होगा अमरिंदर सिंह की पार्टी का गठबंधन

चंडीगढ़। तीनों कृषि कानूनों की वापसी की घोषणा के साथ ही अब पंजाब में नया सियासी समीकरण बनता दिख रहा है। कैप्टन अमरिंदर सिंह से जब यह पूछा गया कि क्या उनकी पार्टी भारतीय जनता पार्टी (इखढ) के साथ जाएगी, तो उन्होंने कहा कि मैंने कहा था कि किसानों का मुद्दा पहले आता है। पंजाब के पूर्व सीएम और पूर्व कांग्रेस नेता कैप्टन अमरिंदर सिंह से जब पूछा गया कि उनका अगला कदम क्या होगा क्या उनकी उनकी पार्टी बीजेपी के साथ जाएगी इन सवालों के जवाब में उन्होंने कहा, मैं तीन महीने से कह रहा था। मैंने कहा था कि किसानों का मुद्दा पहले आता है, उसके बाद ही हम आपके साथ सीट एडजस्टमेंट करेंगे। कृषि कानूनों को निरस्त होने से हाल ही में पंजाब के मुख्यमंत्री पद और कांग्रेस पार्टी से इस्तीफा देने वाले कैप्टन अमरिंदर सिंह और भाजपा के बीच चुनावी गठजोड़ का रास्ता खुल गया है।

मध्य प्रदेश में शराब पर लगेगा गाय टैक्स

कई और सेवाओं पर शुल्क लेगी शिवराज सरकार

भोपाल। मध्य प्रदेश सरकार अब शराब पर सरचार्ज लगाने जा रही है। साथ ही स्थानीय निकायों द्वारा दी जाने वाली कुछ अन्य सेवाओं पर भी शुल्क लगाया जाएगा। इससे मिलने वाले पैसे को प्रदेश में गौशालाओं की देख-रेख में खर्च किया जाएगा। मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान से मुलाकात के एक दिन बाद शुक्रवार को वित्त विभाग के एक अधिकारी ने यह बात कही। अधिकारी ने बताया कि इस संबंध में निर्णय गुरुवार को भोपाल में गौ संवर्धन बोर्ड की मीटिंग के दौरान लिया गया। अधिकारी के मुताबिक 2020 में नए कृषि कानूनों के लागू होने के बाद मंडी बोर्ड से गौरक्षा के लिए मिलने वाले रेवेन्यू

में कमी आई थी। हालांकि प्रधानमंत्री ने शुक्रवार को कृषि कानूनों को वापस ले लिया। लेकिन राज्य सरकार के अधिकारियों को इस बारे में स्पष्टता नहीं थी कि मंडियों में कृषि उत्पादों की खरीद-बिक्री कब से शुरू होगी। अधिकारी ने बताया कि प्रदेश भर में 1300 गौशालाएं हैं। इनमें रहने वाली गायों की संख्या 2.6 लाख है। इन सभी को खिलाने के लिए गौ संवर्धन बोर्ड हर साल 160 करोड़ रुपए चाहिए, लेकिन जो बजट मुहैया कराया गया है वह महज 60 करोड़ रुपए है। अधिकारी के मुताबिक प्रतिदिन एक गाय पर 20 रुपए का खर्च आता जो कि मुहैया कराए गए 6 रुपए प्रतिदिन से काफी अधिक है। वहीं पशुपालन विभाग के एक अधिकारी ने नाम न छापने की शर्त पर बताया कि मुख्यमंत्री की अध्यक्षता में हुई इस बैठक में फंड जुटाने को लेकर चर्चा की गई। पशुपालन विभाग के अपर मुख्य सचिव जेएन कंसोतिया ने कहाकि मुख्यमंत्री ने अधिकारियों को कुछ उत्पादों और सेवाओं पर वेलफेयर सरचार्ज लगाने के निर्देश दिए हैं। इससे होनी वाली आय का इस्तेमाल गौ संरक्षण और गौपालन में किया जाएगा। उन्होंने बताया कि फाइनेंस और कॉमर्शियल टैक्स डिपार्टमेंट को इस बारे में प्रपोजल तैयार करने के लिए कहा गया है। वित्त विभाग के एक वरिष्ठ अधिकारी ने नाम न छापने की शर्त पर बताया कि जिन उत्पाद और सेवाओं पर पहले से जीएसटी लागू है, उनके पर किसी तरह का अतिरिक्त टैक्स नहीं लगा सकते। ऐसे में हमारे पास दो ही रास्ते बचते हैं कि हम शराब और पेट्रोलियम प्रोडक्ट्स पर सरचार्ज लगाएं। अब चूंकि पेट्रोल और डीजल पहले ही काफी महंगा है, हम शराब, बिजली और नगर निकायों द्वारा दी जाने वाली सेवाओं पर टैक्स लगाने की सोच रहे हैं। इस सबंध में योजना जल्द ही तैयार कर ली जाएगा।

देव दीपावली : लाखों दीयों और रंग बिरंगी झालरों से जगमग हुई काशी, हर तरफ दिखा दिव्य और भव्य नजारा

वाराणसी,एजेंसी)। तीनों लोकों से न्यारी भगवान शिव की नगरी काशी शुक्रवार की शाम एक बार फिर ऐतिहासिक नजारों का गवाह बनी। राजघाट पर उद्घाटन का औपचारिक दीया जलने से पहले ही सभी 84 गंगा घाटों पर अलौकिक छठा बिखर गई। गंगा पार रेती पर भी दीपकों ने लोगों को आकर्षित किया। पहली बार लोगों ने जल और थल के साथ ही नभ से भी आकर्षक नजारे का दिदार किया। गंगा घाटों की सीढ़ियों और नाव के साथ ही रंग बिरंगे गुब्बारों (हॉट एयर बैलून) से इस बार देव दीपावली देखने का लोगों ने आनंद उठाया। गंगा उस पार डोमरी से उड़ाए गए बैलून से घाटों की अद्भुत छठा दिखाई दी।

कृषि कानूनों की वापसी पर आज देशभर में किसान विजय दिवस मनाएगी कांग्रेस

नई दिल्ली। कांग्रेस तीनों केंद्रीय कृषि कानूनों को निरस्त किए जाने के फैसले के मद्देनजर शनिवार को पूरे देश में किसान विजय दिवस मनाएगी और जगह-जगह सभाओं का आयोजन करेगी। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने राष्ट्र के नाम अपने संबोधन में तीनों कृषि कानूनों को निरस्त करने के निर्णय की घोषणा करते हुए शुक्रवार को कहा कि संसद के आगामी सत्र में इसके लिए संवैधानिक प्रक्रिया पूरी की जाएगी। कांग्रेस के संगठन महासचिव के सी वेणुगोपाल ने सभी राज्य इकाइयों से कहा है कि वे 20 नवंबर को राज्य, जिला और ब्लॉक स्तर पर किसान विजय दिवस मनाते हुए रैलियों और आंदोलन के दौरान जान गंवाने वाले किसानों के सम्मान में कैंडल मार्च का आयोजन करें। राज्य इकाइयों को भेजे गए पत्र में वेणुगोपाल ने कहा कि किसानों के आंदोलन और बलिदान तथा कांग्रेस एवं राहुल गांधी के नेतृत्व में एकजुट विपक्ष की लड़ाई के बाद ये तीनों कानून निरस्त किए जा रहे हैं। उन्होंने कहा, बुराई पर सामूहिक विजय हमारे देश के अन्नदाताओं को समर्पित है। कांग्रेस अध्यक्ष सोनिया गांधी ने 3 विवादास्पद कृषि

कानूनों को निरस्त करने के सरकार के फैसले को किसानों की जीत और तानाशाह शासकों की हार करार देते हुए शुक्रवार को कहा कि उम्मीद है कि नरेंद्र मोदी सरकार इससे भविष्य के लिए कुछ सबक लेगी। उन्होंने यह भी कहा कि प्रधानमंत्री को किसानों के लिए न्यूनतम समर्थन मूल्य (एमएसपी) सुनिश्चित करना चाहिए और भविष्य में कृषि कानूनों जैसा कोई बड़ा कदम उठाने से पहले राज्य सरकारों, विपक्षी दलों और दूसरे संबंधित पक्षों से बातचीत करनी चाहिए। सोनिया गांधी ने एक बयान में कहा, लगभग 12 महीने के गांधीवादी आंदोलन के बाद आज देश के 62 करोड़ अन्नदाताओं-किसानों-खेत मजदूरों के संघर्ष व इच्छाशक्ति की जीत हुई। आज उन 700 से अधिक किसान परिवारों की कुर्बानी रंग लाई, जिनके परिवारजनों ने न्याय के इस संघर्ष में अपनी जान न्योछावर की। आज सत्य, न्याय और अहिंसा की जीत हुई।

पंजाब को मिल गया नया एडवोकेट जनरल

नई दिल्ली। पंजाब सरकार ने वरिष्ठ वकील दीपेंद्र सिंह पटवालिया को नया एडवोकेट जनरल नियुक्त किया है। चरणजीत सिंह चन्नी के सीएम बनने के बाद एडवोकेट जनरल के पद को लेकर काफी विवाद हुआ था। इसके बाद शुक्रवार को पंजाब सरकार ने डीएस पटवालिया को नया एडवोकेट जनरल नियुक्त करने का आदेश जारी किया। कहा जा रहा है कि एडवोकेट जनरल पद के लिए डीएस पटवालिया पंजाब कांग्रेस प्रमुख नवजोत सिंह सिद्धू के भी पहले पसंद थे। डीएस पटवालिया को सिद्धू को पहले भी एडवोकेट जनरल बनाना चाहते थे। हालांकि, इस रेस में अनमोल रत्न सिद्धू, संजय कौशल और अनु चतरथ का नाम भी आगे चल रहा था। लेकिन अब इस पद के लिए डीएस पटवालिया के नाम पर मुहर लग चुका है। एक खास बात यह भी है कि चन्नी सरकार में एडवोकेट जनरल की यह दूसरी नियुक्ति है। इससे पहले एपीएस देओल को राज्य का एडवोकेट जनरल नियुक्त किया गया था। लेकिन नवजोत सिंह सिद्धू लगातार एपीएस देओल को हटाने की मांग कर रहे थे। इसके बाद सिद्धू की

डीएस पटवालिया को मिली जिम्मेदारी, पूर्व एजी से सिद्धू थे नाराज

मांग के आगे झुकते हुए चन्नी सरकार ने 9 नवंबर को एपीएस देओल का इस्तीफा स्वीकार कर लिया था। सिद्धू ने कहा था कि जब तक एपीएस देओल का इस्तीफा नहीं हो जाता तब तक वो कार्यालय में जा कर काम नहीं संभालेंगे।

अब डीएस पटवालिया राज्य के 32वें एडवोकेट जनरल होंगे। बता दें कि पंजाब के एडवोकेट जनरल को कैबिनेट मंत्री का दर्जा हासिल होता है और उन्हें कैबिनेट मंत्री की सुविधाएं मिलती हैं। डीएस पटवालिया सुप्रीम कोर्ट के पूर्व जज कुलदीप सिंह के बेटे हैं।

शिक्षा के क्षेत्र में कार्य के लिए प्रथम को इंदिरा गांधी शांति पुरस्कार

नई दिल्ली। गुणवत्तापूर्ण शिक्षा सुनिश्चित करने के क्षेत्र में काम करने वाली समाजसेवी संस्था प्रथम को साल 2021 के इंदिरा गांधी शांति, निरस्त्रीकरण और विकास पुरस्कार के लिए चुना गया है। इस संस्था की मुख्य कार्यकारी अधिकारी रुकमणि बनर्जी हैं, जिनके नेतृत्व में संगठन ने शिक्षा के क्षेत्र में कई अहम शोध कार्य किए हैं। इंदिरा गांधी स्मारक न्यास की ओर से जारी बयान के मुताबिक पूर्व प्रधान न्यायाधीश टीएस ठाकुर की अध्यक्षता वाले निर्णायक मंडल ने प्रथम को इस पुरस्कार के लिए चुना। न्यास ने कहा कि भारत और दुनिया भर में कमजोर तबकों के बच्चों के लिए गुणवत्तापूर्ण शिक्षा मुहैया करने के प्रति समर्पित होने के लिए इस संस्था को यह पुरस्कार दिया जा रहा है। प्रथम द्वारा ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षा की स्थिति के आकलन के लिए प्रतिवर्ष एक रिपोर्ट असर भी जारी की जाती है जिसके आंकड़ों का इस्तेमाल सरकारें भी नीति निर्माण के लिए करती हैं। इंदिरा गांधी स्मारक न्यास द्वारा इंदिरा गांधी शांति, निरस्त्रीकरण और विकास पुरस्कार प्रति वर्ष विश्व के किसी ऐसे व्यक्ति या संस्था को प्रदान किया जाता है जिसने समाज सेवा, निरस्त्रीकरण या विकास के कार्य में महत्वपूर्ण योगदान दिया हो। इस पुरस्कार के अंतर्गत 25 लाख रुपये नकद और प्रशस्तिपत्र प्रदान किया जाता है। इंदिरा गांधी मेमोरियल ट्रस्ट को हम तहे दिल से धन्यवाद देते हैं की स्व. इंदिराजी के जन्मदिन के अवसरपर आपने ह्यप्रथमह्न को इस पुरुस्कार के लायक समझा है हमारे देश में शिक्षा के क्षेत्र में कई उपलब्धियां हुई हैं।

दिल्ली में सबसे कम महंगाई दर, रहने-खाने के लिए देश का सबसे सस्ता शहर : मनीष सिसोदिया

नई दिल्ली। दिल्ली के उपमुख्यमंत्री मनीष सिसोदिया ने कहा कि दिल्ली में महंगाई दर 2020-21 में पांच महानगरों में सबसे कम रही। उन्होंने दावा किया कि केजरीवाल सरकार ने उडश्क्ळ 19 के दौरान भी दिल्ली में कीमतों को नियंत्रण में रखा। सिसोदिया ने कहा कि दिल्ली अन्य शहरों की तुलना में रहने के लिए अधिक किफायती है और यहां भोजन की कीमतें देश में सबसे कम हैं। ड्डसिसोदिया ने शुक्रवार को अर्थशास्त्र और सांख्यिकी निदेशालय द्वारा तैयार वार्षिक मूल्य सूचकांक रिपोर्ट जारी करते हुए कहा

कि 2020-21 में उपभोक्ता मूल्य सूचकांक (सीपीआई) के आधार पर औसत वार्षिक मुद्रास्फीति वृद्धि दर राष्ट्रीय स्तर पर 5 फीसदी की तुलना में दिल्ली में केवल तीन प्रतिशत रही। सिसोदिया जो दिल्ली के वित्त मंत्री भी हैं उन्होंने कहा कि केजरीवाल सरकार ने उडश्क्ळ 19 के दौरान भी दिल्ली में महंगाई को नियंत्रण में रखने के लिए कुशल प्रबंधन किया और यहां महंगाई पांच महानगरों में सबसे कम रही। 2020-21 में, दिल्ली में महंगाई में वृद्धि 3.0 प्रतिशत थी, जबकि कोलकाता, चेन्नई, मुंबई और बेंगलुरु में क्रमशः 4.6 प्रतिशत, 4.4 प्रतिशत, 4.1 प्रतिशत और 4 प्रतिशत दर्ज की गई,ह्व उन्होंने केजरीवाल सरकार के बारे में कहा कि यह आम आदमी के लिए प्रतिबद्ध है और हमेशा उसके साथ खड़ी रहेगी। उपमुख्यमंत्री ने कहा कि सरकार आवश्यक वस्तुओं की कीमतों पर लगातार नजर रखे हुए है।

36 वें अखिल भारतीय प्राइज मनी इंदिरा मैराथन पुरुष वर्ग के विजयी प्रतिभागी

36 वें अखिल भारतीय प्राइज मनी इंदिरा मैराथन महिला वर्ग के विजयी प्रतिभागी

पुरुषों में बेलियप्पा व महिला वर्ग में नीरमा बेन 36 वीं मैराथन के बने विजेता

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज। देश भर में प्रसिद्ध अखिल भारतीय प्राइज मनी इंदिरा मैराथन के 36 वें संस्करण में शुक्रवार को पुरुषों में सेना के बेलीयप्पा एबी चेस्ट नंबर 1202 ने पहले स्थान पर रहकर जीत हासिल की। दूसरे स्थान पर रहे प्रयागराज के अनिल सिंह चेस्ट नंबर 1217। हिमाचल के हेतराम ने तीसरे स्थान पर कब्जा जमाया। तीनों धावक सेना के हैं। हेतराम ने 2019 में भी इस मैराथन में तीसरा स्थान हासिल किया था। हेतराम डोगरा रेजीमेंट नासिक में तैनात हैं। इसी साल ढाका इंटरनेशनल मैराथन में भी उन्होंने तीसरे स्थान पर कब्जा जमाया था। वही महिला वर्ग में गुजरात की नीरमा बेन प्रथम, आरती पाटिल दूसरे और मीरजापुर की तमसी सिंह ने तीसरा स्थान हासिल किया है। इस बार आयोजन में तकनीक के इस्तेमाल पर जोर है। धावकों के जूतों में चिप लगाए गए हैं। इसके लिए स्पेशलिस्ट टीम दिल्ली से आई। कुल 42.195 किमी लंबी दौड़ आनंद भवन से सुबह 6.34 बजे शुरू हो चुकी है। प्रदेश के खेल मंत्री उपेंद्र तिवारी के हरी झंडी दिखाने पर पहले 6.32 पर महिला धावक और 6.34 बजे पुरुष धावक दौड़े। मैराथन पंडित मदनमोहन मालवीय स्टेडियम में खत्म हो गई। पुरुष व महिला वर्ग में चैंपियन बनने वाले धावक को दो -दो लाख रुपये का इनाम दिया जाएगा। उपविजेता को एक लाख रुपये मिलेंगे। तीसरे स्थान पर रहने वाले धावक को 75 हजार व 11 सांत्वना पुरस्कार क्रमशः10-10 हजार रुपये के होंगे। खेल मंत्री ने अपने संबोधन में विजेता राशि बढ़ाने के संकेत दिए हैं। सुबह पांच बजे से ही धावक समेत शहर के उत्साही खेल समर्थक आनंद भवन पर एकत्र होने लगे थे। धावकों का रास्ते में जगह जगह पर ताली बजाकर और फूल बरसाकर स्वागत किया जाता रहा। कोरोना महामारी के संक्रमण के कारण वर्ष 2020 में इंदिरा मैराथन का आयोजन नहीं हुआ था। इससे धावकों को मायूसी हुई थी। इस बार सिर्फ मैराथन दौड़ हो रही है। क्रास कंट्री रेस तथा वेटरन वर्ग में दौड़ नहीं हुई है। इस बार सीसीटीवी कैमरों के जरिए पूरे रूट पर नजर रखी जा रही है। रूट भी सात किलोमीटर बदला है। रीवा रोड पर दांदूपुर तक धावक जाएंगे। खेल निदेशालय के इस आयोजन में एथलेटिक फेडरेशन आफ इंडिया के टाइमिंग पार्टनर इनोवेशन ई सोल्यूशन एलएलपी को टेक्नोलाजी से संबंधित पूरी जिम्मेदारी दी गई है। फेडरेशन की टेक्निकल टीम बुधवार को ही यहां पहुंच गई। गुरुवार को आठ सदस्यीय टीम ने आनंद भवन, दांदूपुर में रूट मोड़ व मदन मोहन मालवीय स्टेडियम में उपकरण स्थापित किए थे। स्टेडियम में काउंटर लगाकर धावकों को चेस्ट स्लिप (बिब नंबर) के साथ चिप बांटी गई। धावक अपने घुटने से नीचे इसे पैर या जूते में बांधेंगे। टेक्निकल इंचार्ज महावीर सिंह ने बताया टाइमिंग मैट सिस्टम को जैसे ही धावक पार करेंगे, चिप एक्टीवेट हो जाएगी। यह चिप साफ्टवेयर से जुड़ी होगी और पूरा डाटा ट्रैक होता रहेगा। आनंद भवन के अलावा दांदूपुर में टर्निंग प्वाइंट पर टाइमिंग मैट लगाई गई है, धावकों को इसे पार करना आवश्यक होगा। पूर्व प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी की 31 अक्टूबर 1984 को हत्या कर दी गई थी। इसके अगले साल यानी 1985 में उनकी जन्मतिथि पर इस मैराथन की शुरूआत की गई। पहली बार तत्कालीन प्रधानमंत्री राजीव गांधी ने विजेताओं को पुरस्कृत किया था। तब इनामी राशि 51 हजार रुपये थी।

इंदिरा मैराथन के शुभारभ के मौके पर एक साथ सभी प्रतिभागी भाग लेने के लिए तैयार खड़े

खबर संक्षेप

पत्रकार के घर में घुसकर लाठी-डंडों से किया हमला, मुकदमा दर्ज

मांडा। दबंगो ने पत्रकार के घर मे घुसकर पत्रकार कि बहन को लाठी ड़डो से मारा-पीटा ओर अभद्दता की माण्डा इलाकाइ क्षेत्र के खुरमा ग्राम निवासी राजमणि पाल एडवोकेट जो कि हिन्दी दैनिक सामाचार पत्र के पत्रकार है। दबंगो ने पत्रकार को जान से मारने कि धमकी दी पीड़ित पत्रकार कि बहन प्रीति कुमारी को मारा पीटा और अभद्दता के साथ जान से मारने कि कोशिश की बीच बचाव मे ग्रामिणो दौड़े तो भाग गए नही तो जान से मार डालते ' वही पीड़ित पत्रकार ने 112 न0 पुलिस को बुलाया तो दबगो ने अवधेश कुमार व जितेंद्र पाल व राजबहादुर पाल पुत्रगण मौजिलाल व लालती देवी पत्नी जितेंद्र पाल फरार हो गऐ। पीड़ित पत्रकार माण्डा थाने पर अपनी प्राथमिक रिपोट दर्ज कराई है।

ट्रैक्टर रैली 23 को

सहसों। भारतीय जनता पार्टी किसान मोर्चा द्वारा जिला गंगा पार की ट्रैक्टर रैली 23 नवंबर को छत्रपति शिवाजी डिग्री कॉलेज सहसों से निकाली जाएगी। ट्रैक्टर रैली को भाजपा किसान मोर्चा के क्षेत्रीय अध्यक्ष काशी प्रसाद तिवारी झंडी दिखाकर रवाना करेंगे। उक्त जानकारी भाजपा किसान मोर्चा के जिला अध्यक्ष लक्ष्मीकांत उपाध्याय जी ने दी है।

किसान बिल वापस होने पर भाकियू भानू ने मनाया जश्न

किसान बिल वापिसी पर हर्ष जताते किसान यूनियन के लोग

कोरांव। दिल्ली बार्डर पर किसान बिल वापस लेने के मांग पर पिछले ग्यारह माह से अनवरत चल रहे धरने को लेकर भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के द्वारा जैसे ही तीनो किसान बिल वापस लेने की घोषणा किया गया वैसे ही किसानों और किसान संघटनो में खुशी की लहर दौड़ पड़ी और एक दूसरे को बधाई देने की होड़ लग गई।

इसी क्रम में कोरांव तहसील अंतर्गत नगर पंचायत कोरांव में भारतीय किसान यूनियन भानू के कार्यालय में जिलाध्यक्ष पवन कुमारा चौबे(राजू)के नेतृत्व में सैकड़ों किसानों ने सर्वप्रथम किसान आंदोलन में शहीद हुए किसानों को श्रद्धांजलि अर्पित किया उसके बाद एक दूसरे का मुंह मीठा कराया और ढोल तासे पर थिरकते हुए पटाखे और फुलझड़ीया छुड़ाया।इस मौके पर किसान नेता राजू चौबे ने कहा की किसान विरोधी बिल वापस होना किसानों की एक बड़ी जीत है और आंदोलन में जो भी किसान शहीद हुए है यह उनको सच्ची श्रद्धांजलि है।हालांकि इस मौके पर किसान नेता ने सरकार को आड़े हाथों लेते हुए कहा की जिस तरह से किसान बिल वापस लेने में संवेदनहीनता बरती गई वह निंदनीय है और अब देश का किसान जाग गया है और वह अपने अधिकारों के लिए आगे भी लड़ाई जारी रखेगा अभी किसानों की जीत उस दिन पूरी होगी जिस दिन किसान आयोग का गठन किया जाएगा इसके लिए भाकियू हर संघर्ष के लिए तैयार है। दिल्ली बार्डर के तर्ज पर शीघ्र ही जिले में भी खाद पानी और धान क्रय केंद्रों पर चल रही हीलाहवाली के मुद्दो पर भी आंदोलन किया जाएगा। चर्चित किसान नेता राजेश पांडे मंडल उपाध्यक्ष भारतीय किसान यूनियन भानू ने कहा दिल्ली किसान आंदोलन ने देश को एक नई दिशा प्रदान किया है और अब वह दिन लद गए जब अधिकारियो और सरकारों के द्वारा किसानों का शोषण किया जाता था किसान अब अपना अधिकार लेना जान गया है और जब जब किसानों के अधिकार के साथ छेड़ छाड़ किया जाएगा तब तब भारतीय किसान यूनियन भानू उनकी लड़ाई लड़ने के सदैव आगे बढ़ चढ़ कर लड़ेगा।इस मौके पर मुख्य रूप से अरुण कुमार चतुवेर्दी(पिंटू चौबे) जिलाध्यक्ष युवा हरि प्रसाद द्विवेदी पप्पू शुक्ला कमलेश मिश्रा सुभाष पांडे प्रबंधक मनोज सोनी मनीष जायसवाल दिलाबहार अली शंभूनाथ शुक्ला अमित पांडे संजय आदिवासी पूर्व प्रधान देवराज मिश्रा राकेश मिश्रा पूर्व सभासद रविंद्र जैसल प्रधान मंगला कोल आदि लोग उपस्थित रहे।

किसान संगठनो के नेता बोले एतिहासिक है यह जीत

घूरपुर। पीएम मोदी द्वारा तीन कृषि बिल की वापसी की घोषणा के बाद लंबे समय से तीन कृषि बिल के खिलाफ मे आंदोलन कर रहे किसान और संगठन नेताओ में खुशी की लहर है। घूरपुर क्षेत्र में अनवरत तीन कृषि बिल का विरोध कर रहे अखिल भारतीय किसान मजदूर सभा के नेताओ मे जश्न का माहौल है। सभा के नेताओं ने एक स्वर में कहा कि ये किसानों के सबसे लंबे आंदोलन और धैर्य की जीत है। देर ही सही प्रधानमन्त्री नरेंद्र दामोदर दास मोदी की फैसला सराहनीय रहा और किसानों का सम्मान बढ़ाने का कार्य किया है। वहीं सत्ता पक्ष के नेताओं ने पीएम मोदी की घोषणा का स्वागत किया है।

एआईकेएमएस के महासचिव आशीष मित्तल बोले : एआईकेएमएस भारत के किसानों को इस वास्तविक ऐतिहासिक आंदोलन के लिए बधाई देता है जिसने मोदी के नेतृत्व वाली आरएसएस भाजपा सरकार को यह घोषणा करने के लिए मजबूर किया है कि 3 कृषि कानूनों को वापस ले लिया जांगे। यह भारत के किसानों और देशभक्त लोगों की.एतिहासिक जीत है। एआईकेएमएस शीघ्र ही बैठक करेगा और सभी पहलुओं पर निर्णय करेगा।

भाजपा किसान मोर्चा काशी प्रांत के क्षेत्रीय उपाध्यक्ष रमाकांत विश्वकर्मा बोलेः प्रधानमंत्री मोदी जी द्वारा उठाया गया प्रत्येक कदम राष्ट्र हित के लिए होता है।अगर उन्होंने कृषि कानून को वापस लिया है तो इसका भी प्रयोजन राष्ट्र हित ही है ।बस समझने एवम उसके सकारात्मक रिजल्ट के थोड़ा सा इन्तजार करना ही बेहतर होगा ।इस समय राष्ट्र के लिए चीन और पाकिस्तान की बॉर्डर समस्या प्रमुख है। रही बात आन्तरिक कानूनों की तो वो बनते बिगड़ते रहेंगे ।हम सब एक राष्ट्र के निवासी हैं आपसी खुशी एवम प्रसन्नता ही हमारा मुख्य उद्देश्य है ।

सपा नेता पूर्व अध्यक्ष चाका व वर्तमान ब्लॉक प्रमुख चाका अनिल सिंह पटेल बोलेः भारत के किसानों की जीत हुई है ,लेकिन किसानों की मौत इस प्रदर्शन में हुई उनके परिजनों को सरकार को उचित मुआवजा देना होगा ,नहीं सपा फिर इस मुद्दे पर सरकार को घेरेगी।

न्यूज झरोखा

गरीब के आशियाने में लगी आग सामानन जल कर खाक

मांण्डा। क्षेत्र के ग्राम पंचायत खुरमा मे गरीब के घर मे अज्ञात कारणो से आग लग गई जिससे घर मे रखा सामान जल कर राख हो गया , मिली जानकारी के अनुसार नन्दलाल हरिजन पुत्र राम गरीब के घर मे आग लग गई। कथा देखते ही देखते आग रौद्र रूप पकड़ता गया ' वही काफी संख्या में ग्रामीण एकत्रित होकर आग को बुझाने के लिए आसपास से बाल्टी तथा अन्य संसाधनों से आग पर काबू पाने के लिए पानी डालने लगे वही काफी मशक्कत के बाद आग पर काबू पाया गया ' लेकीन आग इतना तेज था की गरीब का घर जलकर राख हो गया।जिसमे गरीब के घर मे रखा 1कुन्तल गेहु,50कीलो चावल,कपडे,बर्तन,व सन्दूक मे रखा कुछ रुपए जलकर नष्ट हो गया।

बेदौली व सिरसा मंडल से तिरंगा यात्रा का हुआ आयोजन

मेजा रोड। स्वाधीनता अमृत महोत्सव के अवसर पर बेदौली मण्डल से तिरंगा यात्रा का आयोजन शंकर लाल राष्ट्रीय सेवक संघ उरुवा खंड संचालक के अगुवाई में निकला गया जो बेदौली से आरंभ होकर सिरसा बाजार में समाप्त हुआ। सिरसा मंडल अध्यक्ष राना सेठ ने कहा कि अमृत महोत्सव तिरंगा यात्रा आज दिन पूरे भारत में निकला गया। सभी कार्यकर्ता बड़े उत्साह के साथ अमृत महोत्सव तिरंगा यात्रा निकाला। जिसमें सिरसा मण्डल अध्यक्ष पिछड़ा वर्ग राना सेठ, लखन केशरी ,कल्लू केशरी,भगवान केसरी, अभिनव तिवारी, विनय यादव, दसरथ ,आदर्श ,शनि ,गौरव आदि लोग मौजूद रहे।

विधायक ने तिरंगा यात्रा को हरी झंडी दिखाई

कोरांव। भाजपा विधायक कोराव राजमणि कोल ने आजादी के 75 वें अमृत महोत्सव के अवसर पर तिरंगा यात्रा निकाली। विधायक ने न्याय पंचायत मझिगवां की तिरंगा यात्रा को अपने विद्यालय परम सुख आदिवासी इंटर कालेज धौखर कोराव से हरी झंडी दिखा कर यात्रा को रवाना किया।

यूथ कांग्रेस ने मनाया पूर्व प्रधानमंत्री इन्दिरा गांधी जयंती

कोराव। 3 काले कृषि कानून के विरोध में संघर्ष रत 700 से ज्यादा किसान की शहादत में श्रद्धांजलि कैंडल मार्च किया। अवगत हो कि मोदी सरकार द्वारा तीनों काले कृषि कानून वापस ले लिए गए हैं। यह कांग्रेस पार्टी, देश के सभी किसानों व हर नागरिक की जीत है। कार्यक्रम के संयोजक जिला उपाध्यक्ष सुनील द्विवेदी रहे कार्यक्रम में प्रमुख रूप से उपस्थित सूरज शुक्ला सुनील द्विवेदी आदि विचार व्यक्त किए। और लोगों ने किसानों की जीत बताया।

पूर्व प्रधान मंत्री इन्दिरा गाँधी का मनाया गया जन्म दिवस

करछना। पूर्व प्रधानमंत्री इन्दिरा गांधी जी का जन्म दिवस एकता दिवस के रूप में मनाया गया शुक्रवार को श्री मती इन्दिरा गांधी विद्यालय जगौती में भारत की प्रधान पूर्व महिला धानमंत्री इन्दिरा गांधी जी का जन्म दिवस एकता दिवस के रूप में मनाया गया सर्व प्रथम उनके चित्र पर माल्यार्पण विद्यालय के प्रबंधक दिनेश कुमार सोनी ने किया डा सोनी ने कहा कि इन्दिरा जी ने कभी भी उसूलों से समझौता नहीं किया आवश्यकता पड़ने पर उन्होंने बंगला देश पाकिस्तान का भूगोल बदल दिया अनुशासन ही देश को महान बनाता है दूर दृष्टि पक्का इरादा कड़ी मेहनत इन्दिरा गांधी जी के स्लोगन थे पमुख रुप से राम मणि दिवेदी ,अरुण कुमार मिश्र ,आन्नद पटवा शिखा पाण्डेय ,रंजना विश्व कर्मा बिनोद ,दिवेदी, पवनेश कुमार सोनी आदि शामिल रहे ।

जन्मदिन पर इंदिरा गांधी को किया गया नमन

सहसों। भारत की प्रथम महिला प्रधानमंत्री आयरन लेडी स्वर्गीय श्रीमती इंदिरा गांधी जी का जन्मदिवस शुक्रवार को उनकी चित्र पर माल्यार्पण और पुष्पांजलि अर्पित करके कांग्रेस पार्टी के पूर्व जिला उपाध्यक्ष अशफाक अहमद के नेतृत्व में पार्टी कार्यालय बाबूगंज में नमन करते हुए मनाया गया। अशफाक अहमद ने कहा कि इंदिरा गांधी अपने देश का नाम विदेशों में रोशन किया और अपने योगदान से देश में अमन-चैन और गौरव से देश का नाम रोशन किया। इनके योगदान को देश कभी नहीं भूल पाएगा। कांग्रेस पार्टी के वरिष्ठ नेता अधिवक्ता देवराज उपाध्याय ने कहा इनके जन्म शताब्दी वर्ष को शक्ति दिवस के रूप में मनाया जाता है। इन्हें अपनी मौत का एहसास पूर्व में ही हो गया था। यह देश की पहली महिला प्रधानमंत्री थी जिन्हें आयरन लेडी के नाम से जाना जाता था। इन्होंने देश की तस्वीर बदल डाली जिसे देश आज भी याद करता है। कार्यक्रम मैं प्रमुख रूप से तहजीबुल हसन,शमशेर बहादुर पटेल,राम सिंह पाल, प्रदीप कुमार पाल,बबलू प्रधान,मोहम्मद यूसुफ,विनोद पाल,अश्वनी कुमार श्रीवास्तव मोहम्मद आलम, मोहम्मद हबीब,असगर अली,आदि प्रमुख लोग उपस्थित रहे।

हादसों को रोकने के लिए यातायात नियमों का पालन जरूरी

हड़िया। पुलिस ने यातायात नियमों को जागरूक करने को लेकर शुक्रवार के दिन इंस्पेक्टर हंडिया ज्ञानेंश्वर मिश्र की अगुआई में पुलिस टीम पोस्टर अैनर स्लोगन लेकर सड़क पर उतरी। बाइक चालक, चार पहिया वाहन चालकों एवं मौजूद लोगो व राहगीरों को याता यात नियमों के बारे मे चर्चा करते हुए जागरूक किया। पुलिस उपमहानिरीक्षक/ वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक सर्वश्रेष्ठ त्रिपाठी के निर्देश पर हंडिया पुलिस ने यातायात नियमों के प्रति जागरूक करने के लिए गत दिनों से अभियान चलाकर हडिया, बरौत, सैदाबाद सहित अन्य बाजारों में लोगों को जागरूक किया। बाजारों में पैदल गश्त करते हुए स्कूली वाहन चालकों व अन्य वाहन चालकों को यातायात नियमों का पालन करने के लिए अपील कियो बाइक सवार, चार पहिया वाहन चालकों पम्पलेट को देकर निर्धारित गति सीमा से तेज वाहन न चलाने की हिदायत दी साथ ही मानक से अधिक बच्चों को न बैठाने के लिए कहो पुलिस ने आम जनता के लोगों को भी यातायात नियमों के प्रति जागरूक करते हुए मुख्य चौराहों बाजारों में यातायात नियमों का पालन करने जैसे नशे की हालत में वाहन न चलाने, निर्धारित मानक से अधिक सवारी ना बैठाने, वाहन चलाते समय मोबाइल फोन का प्रयोग न करने, सीट बेल्ट का प्रयोग करने तथा दोपहिया वाहनों पर हेलमेट का प्रयोग करने, वाहनों को ओवरलोड न चलाने आदि के संबंध में जागरूक करते हुए कहा कि हादसों को रोकने के लिए यातायात नियमों का पालन करना जरूरी है। इस दौरान 25 वाहनों का ई चालान किया गया और 30 हजार जुमार्ना किया गया।

कुंदौरा महादेव धाम में अमृत महोत्सव मनाया गया

धनूपुर। कुंदौरा महादेव धाम में अमृत महोत्सव का उद्घाटन कार्यक्रम बड़े धूमधाम से मनाया गया। मातृभूमि की आजादी के 75 वें वर्षगांठ पर शुभारंभ करते हुए वक्ताओं ने बताया कि वास्तव में आजादी के दीवानों ने जब मातृभूमि के लिए अपना सर्वस्व अर्पित किया। तो उन्होंने केवल एक ही सपना देखा- 'स्व' के पुनरुत्थान का राजनीतिक आर्थिक धार्मिक और सांस्कृतिक चतुर्दिक स्तर पर ब्रिटिश द्वारा दमन शोषण और यातना का एकमात्र लक्ष्य था। भारतीयों में स्वयं के प्रतीक आग्रह की समाप्ति जेम्स मिल इत्यादि के पुनर्स्थापना के लिए किया जाने वाला चरम प्रयास था। इसीलिए इसी आंदोलन के गर्भ से सर्वेदय, स्वदेशी, स्वराज, स्वशासन, स्वभाषा स्व शिक्षा व राजनीतिक आर्थिक सामाजिक सांस्कृतिक आदि अवधारणाओं का जन्म हुआ। यह कार्यक्रम 1 माह तक गांव गांव में भारत मां का पूजन तिरंगा यात्रा वंदे मातरम का गान आदि का कार्यक्रम सुनिश्चित हुआ है।कार्यक्रम के मुख्य वक्ता राजेश्वर प्रचार प्रसार प्रमुख, अनिल विशेष संपर्क प्रमुख रहे।इस अवसर खंड कार्यवाह राजकुमार, दुर्गेश बजरंग दल सहसंयोजक गंगापार एवं वरिष्ठ भाजपा नेता अवधेश तिवारी, जमुना प्रसाद शुक्ला, बालकृष्ण शुक्ला, सुमित तिवारी, शुभम तिवारी, जवाहर लाल गौड़, अभय राज पाण्डेय, मदन पाण्डेय, रोहित, आदर्श मिश्रा, सत्यम तिवारी, गणेश गुप्ता आदि रहे।

सांसद खेल स्पर्धा:कबड्डी में शिवराजपुर व आरकेआई सीए की टीम विजेता

- राजा कमलाकर इंटर कालेज के मैदान पर कबड्डी प्रतियोगिता का आयोजन
- स्वस्थ शरीर से ही स्वस्थ और जागरूक समाज का हो सकेगा निमार्णःडॉ अजय कुमार
- प्रयागराज सांसद रीता जोशी ने वर्चुअल माध्यम से किया उद्घघाटन

अखंड भारत संदेश

विजयी प्रतिभागियों के साथ

शंकरगढ। सांसद खेल स्पर्धा के तहत शुक्रवार को विकास खंड शंकरगढ़ के राजा कमलाकर इंटर कालेज शंकरगढ़ में प्रतियोगिता आयोजित की गई। मुख्य अतिथि बारा विधायक डॉ. अजय कुमार रहे। वर्चुअल माध्यम से सांसद प्रयागराज प्रो. रीता बहुगुणा जोशी ने खिलाडियो को सम्बोधित करते हुए कहा कि इस खेल स्पर्धा से नए खिलाडियो का निर्माण होगा। इस स्पर्धा से खेल प्रतिभाओं को बढ़ावा मिलेगा। साथ ही मुख्यमंत्री योगी के प्रयागराज आगमन पर सभी विजेता टीमों के पहुचनें का आह्वान किया। मुख्य अतिथि विधायक बारा डा. अजय कुमार ने राष्ट्रीय हैण्ड बाल खिलाडी अनूराग शर्मा व अटल अवार्ड सम्मान से सम्मानित मधु लता को अंगवस्त्रम व मेमेंटों देकर सम्मानित करते हुए कहा खेल कूद स्वास्थ्य का मूल मंत्र है। स्वस्थ शरीर से ही स्वस्थ समाज का निर्माण किया जा सकता है। इस स्पर्धा से खेलों के विकास को बढ़ावा मिलेगा। खेलों के प्रति युवाओं में उत्साह का संचार होगा। हम युवाओं से अपील करते है कि आप लोग गावं क्षेत्र जिला मे खेलो का आयोजन करके अपने को आगे लाए। आपके प्रतिभा को आगे बढाने का कार्य मोदी जी, योगी जी कर रहे है। जिससे ग्रामीण प्रतिभाएं निखरेंगी और आपके माता पिता के साथ क्षेत्र का नाम प्रदेश और देश मे रोशन होगा। कार्यक्रम का संचालन कार्यक्रम संयोजक भाजपा जिला कोषाध्यक्ष अनूप केसरवानी ने किया। इस अवसर पर प्रयागराज ओलपिक एशोसिएशन के सचिव भारत भूषण, प्रधानाचार्य अनय प्रताप सिंह,ब्लाक प्रमुख शंकरगढ निर्मला देवी,जिला मीडिया प्रभारी दिलीप कुमार चतुवेर्दी, पिछडा. मोर्चा जिलाध्यक्ष सुभाष सिंह पटेल,महेन्द्र सिंह पटेल,कुलदीप सिंह पटेल,मसुरिया दीन वर्मा,कार्यक्रम सह संयोजक संदीप सिंह,जितेन्द्र शुक्ला,मोहन यादव,शिवयस पांडेय, उग्रसेन द्विवेदी आदि रहे। कबड्डी खेल में 10 टीमो ने भाग लिया, जिसमे बालिका में दो टीमे व बालको के आठ टीमों ने शिकरत किया। वालिका वर्ग से राजा कमलाकर इंटर कालेज ए विजेता व बी उपविजेता रही। बालक वर्ग से युवक मंडल शिवराजपुर बिजेता रही। जबकि बजरंग युवक मंडल दल करिया कला उपबिजेता रही सभी को प्रमाणपत्र और मेडल वितरित कर प्रोत्साहित किया गया। अन्य भाग लेने वाली टीमों में शंकरगढ़, कपारी, तेंदुआ, लालापुर, लालापुर भटपुरा, आदि टीमें रही। विजेता टीम के कप्तान पीयूष त्रिपाठी व उपविजेता टीम के कप्तान राज को ट्राफी भेंट किया गया।

सांसद खेल स्पर्धा में सुजौना ने मारी बाजी

जसरा। श्री ईश्वरदीन छेदीलाल इंटर कालेज जसरा के खेल मैदान में आयोजित सांसद खेल स्पर्धा प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि सांसद प्रतिनिधि संत प्रसाद पांडेय ने कबड्डी खिलाड़ियों को पुरस्कार वितरण करते हुए कहा कि खेल को खेल भावना के साथ खेलना चाहिए। खेल के मैदान में या तो जीत मिलेगी या तो सीख। हारना तो किसी को है ही नहीं। जसरा में सांसद खेल स्पर्धा का शुभारंभ बारा विधायक डा० अजय कुमार ने टास उछाल कर शुरू किया। डा०अजय कुमार ने कबड्डी को खेलने के लिए अपने विधायक निधि से चार लाख रुपए की मैट देने की घोषणा किया है। पुरुष कबड्डी प्रतियोगिता में कुल 12 टीमों ने प्रतिभाग किया था। जिसमें कबड्डी का फाइनल मैच सुजौना व बैजला के खिलाड़ियों के बीच खेला गया। दोनों टीमों के खिलाड़ियों ने बड़े ही रोचक ढंग से कबड्डी खेला। जिसमें सुजौना की टीम विजेता घोषित की गई। वहीं बैजला की टीम उप विजेता रही। इसी तरह महिलाओं की एक टीम ने कबड्डी खेलीं। विजेता टीम सुजौना व उप विजेता टीम को सांसद प्रतिनिधि संत प्रसाद पांडेय ने शील्ड प्रदान किया। राष्ट्रीय स्तर के हैंडबॉल प्रतियोगिता के विजेता रहे अनुराग शर्मा व उनकी पत्नी मधुलता शर्मा को विधायक बारा डा०अजय कुमार ने दोनों लोगों को प्रशस्ति पत्र देकर खेल मैदान में सम्मानित किया। कार्यक्रम का संचालन एडीओ आईएसबी जीतेंद्र गौड़ ने किया। कार्यक्रम में भाजपा जिलाध्यक्ष विभव नाथ भारती, बीडीओ जसरा हरिओम गुप्ता,सीएचसी अधीक्षक डा०तरुण पाठक,श्यामलाल तिवारी, कमलेश त्रिपाठी, मंडल अध्यक्ष जे०एन०शुक्ल,राजाबाबू पाठक,रामजी त्रिपाठी, रेखा रानी गौड़ पीटीआई जसरा,खेल शिक्षक अग्रिमा पांडेय, राकेश सिंह, बीओपीआरडी देवांशिका सिंह, नेत्र नारायण मिश्र,अनिल मिश्र,नहुष त्रिपाठी, श्याम कृष्ण पांडेय,विवेक सिंह, विनय यादव,आनंद जायसवाल,कन्हैया कुशवाहा सहित हजारों लोग मौजूद रहे।

खबर संक्षेप

निशुल्क नेत्र शिविर मे 422 मरीजो का हुआ परीक्षण

सहसों। स्वर्गीय सेठ लाल चंद केसरवानी एवं स्वर्गीय सेठ शिवपूजन केसरवानी की स्मृति में शुक्रवार को सहसों स्थित शिवा शीत गृह के प्रांगण में निशुल्क नेत्र शिविर का आयोजन किया गया। जिसमें क्षेत्र के नेत्र रोगी 422 मरीजों का निःशुल्क परीक्षण करके परामर्श दिया गया।

निशुल्क नेत्र चिकित्सा शिविर का उद्घाटन मुख्य अतिथि फूलपुर की सांसद केसरी देवी पटेल ने दीप प्रज्ज्वलित करके किया। इस मौके पर उन्होंने कहा जरूरतमंदों की सेवा करना तथा समय पर चिकित्सा सुविधा उपलब्ध कराना एक पुनीत कार्य है। जिसे समाज के हर सक्षम व्यक्ति को करना चाहिए। विशिष्ट अतिथि फूलपुर के विधायक प्रवीण सिंह पटेल, सहसों ब्लॉक प्रमुख गीता सिंह, फूलपुर ब्लॉक प्रमुख वीपेन्द्र सिंह पटेल, भाजपा जिला अध्यक्ष अश्वनी द्विवेदी, युवा मोर्चा के जिलाध्यक्ष नवीन सिंह पटेल, बहादुरपुर ब्लाक प्रमुख अरुणेन्द्र यादव, भूमि विकास बैंक के अध्यक्ष वीरेन्द्र बहादुर सिंह, प्रदेश कार्यसमिति सदस्य अरुण अग्रवाल, उत्तर प्रदेश उद्योग व्यापार प्रतिनिधि रमेश अग्रहरि ने आयोजक एसपीआरएल फूड्स के निदेशक आशीष केसरवानी के इस कार्य की सराहना करते हुए कहा प्रतिवर्ष जरूरतमंदों को चिकित्सा सुविधा उपलब्ध कराके उनके जीवन मे प्रकाश लाकर नया जीवन दान देना बहुत ही श्रेयस्कर है। निशुल्क नेत्र शिविर में क्षेत्र से आए हुए भारी संख्या में मरीजों का जांच वरिष्ठ नेत्र सर्जन डॉक्टर आरएन मिश्रा, डॉ मृत्युंजय , डॉक्टर शुभम, डॉ राम सिंह की टीम द्वारा 422 मरीजों का जांच किया गया। जिसमें से 24 मरीजों का मोतियाबिंद ऑपरेशन के लिए चिन्हित किया गया। जिनका ऑपरेशन हरि नेत्र चिकित्सालय में निशुल्क किया जाएगा। चिकित्सा शिविर में गरीबों को निशुल्क कम्बल मुख्य अतिथि द्वारा वितरित किया गया। नेत्र शिविर के आयोजक एसपीआरएल फूड्स के निदेशक आशीष केसरवानी द्वारा आए हुए अतिथियों को धन्यवाद देते हुए उनका आभार प्रकट किया। कार्यक्रम का संचालन व्यापार मंडल के जिला महामंत्री राजेंद्र केसरवानी ने किया। इस मौके पर सतीश केसरवानी, मनीष केसरवानी, सुशील केसरवानी, सुनील केसरवानी, टी.एन. सिंह, पीयूष सिंह, सौरभ अग्रहरि, आशुतोष शाही, सत्यम केसरवानी, शिव नारायण सिंह गप्पू , रामसुख मिश्रा, डीके पटेल, विक्रम कुशवाहा, सीएल यादव सहित भारी संख्या मे लोग मौजूद रहे।

त्रिवेणी संगम के सुरम्य तट पर शुक्रवार की शाम दीपमालाओं की स्वर्णिम आभा प्रज्वलित करतीं महिलाएं

दीपोत्सव को न्याय विदो व अफसरों ने यादगार बनाया दीपोत्सव पर इलाहाबाद हाईकोर्ट चीफ जस्टिस ने आरती उतारी

अनंत भाव में सजी दीपमाला की स्वर्णिम आभा से जगमगाया संगम क्षेत्र

अखंड भारत संदेश

पांच लाख दीपों से जगमग हुआ संगम घाट

प्रयागराज। त्रिवेणी संगम के सुरम्य तट पर शुक्रवार की शाम अनंत भावों में सजी दीपमालाओं की स्वर्णिम आभा रेती पर स्वर्ग के मानिंद प्रज्ज्वलित हुई। दीपों में कहीं भारत माता के भाल के रूप में कलाकृतियां सजाई गईं तो कहीं वंदेमातरम, तिरंगा प्यारा, स्वच्छ भारत-स्वस्थ भारत के संदेश जगमग हुए। संगम नोज पर अयोध्या में प्रस्तावित भव्य राम मंदिर के मॉडल को भी सजाया गया और बेटी पढ़ाओ-बेटी बढ़ाओ के नारे को भी। देव दीपावली पर संगम के पांच सौ मीटर दायरे का अप्रतिम दृश्य ऐसी ही परिकल्पनाओं में साकार होकर हर किसी को धन्य बनाने वाला था। सदियों से समागम के लिए जानी जाने वाली संगम की रेती पर पर सांझ ढलते ही शंखध्वनि के दीपोत्सव का शुभारंभ हुआ। दोपहर बाद से ही तरह-तरह की दीप आकृतियों, अल्पनाओं और गेंदा, गुलाब की पंखुड़ियों से सजी कलाकृतियों के रूप में दीये जलाए जाने लगे। कोई अपने नाम की दीया जला रहा था तो कोई अपने विभाग का नाम दीपों से प्रज्ज्वलित कर रहा था। कोई संगम की लहरों पर दीपों की लड़ियां लगाता रहा तो कोई नावों पर।

वीआईपी किला घाट से लेकर संगम नोज, महावीर मार्ग, अक्षयवट मार्ग, रामघाट, आरती स्थल,दारागंज घाट दशाश्वमेध घाट तक दीपमालाएं एक साथ प्रज्ज्वलित हुईं तो लगा जैसे एक बारगी रेती पर स्वर्ग उतर आया हो। इस दीपोत्सव में बच्चों, महिलाओं, युवाओं ने दीया-बाती की कतारों में तरह-तरह के भाव सजाए। आर्य कन्या इंटर कॉलेज की छात्राओं और शिक्षिकाओं ने राम मंदिर के मॉडल को सजाया। इसके अलावा स्वच्छ भारत-स्वस्थ भारत के नारे को भी दीपमालाओं में सजाया। इसी तरह जगत तारन गर्ल्स इंटर कॉलेज की छात्राओं ने स्वास्तिक, ऊं के अलावा दीपों के पुष्पहार बनाकर जलाए। महिला सेवा सदन की शिक्षिकाओं संगीता, मोनिका साहू, सौम्या मालवीय के नेतृत्व में छात्राओं ने संदेशपरक दीपों की कतार सजाई। सेंट एंथोनी गर्ल्स इंटर कॉलेज, राजकीय इंटर कॉलेज, सेंट जोसेफ समेत शहर के 21 विद्यालयों के छात्र-छात्राओं ने अपनी परिकल्पनाओं से इस दीपोत्सव को साकार बनाने की कोशिश की। इनके अलावा विभागवार अधिकारियों-कर्मचारियों ने भी बांस-बल्लियों के घेरे में अपने-अपने दीप जलाए।

दीपमाला संजाती महिलाएं व युवतियां

51 हजार दीपों से जगमगाई बलुआघाट की बारादरी

बलुआ घाट की बारादरी शुक्रवार की शाम 51 हजार दीपों से जगमगा उठी। कार्तिक महोत्सव आयोजन समिति के पदाधिकारियों के साथ हजारों श्रद्धालुओं ने मां यमुना के तट पर इस दीपदान में हिस्सा लिया।

चीफ जस्टिस ने उतारी त्रिवेणी की आरती, गूंजा जयघोष

संगम पर कार्तिक पूर्णिमा के दीपोत्सव को अफसरों ने यादगार बनाया। विभागवार दीप जलाए गए। बतौर मुख्य अतिथि इलाहाबाद हाईकोर्ट के चीफ जस्टिस न्यायमूर्ति राजेश कुमार बिंदल ने त्रिवेणी की आरती उतारी। पं. प्रदीप पांडेय, गुरुदत्त त्रिपाठी, दीपू मिश्रा के आचार्यत्व में उत्सव पाठक, प्रयाग पांडेय, प्रत्यक्ष पांडेय समेत 11 वैदिक ब्राह्मणों ने आरती में हिस्सा लिया।इस दौरान न्यायमूर्ति एनके जौहरी, न्यायमूर्ति साधना रानी ठाकुर, न्यायमूर्ति समीर जैन, सांसद केशरी देवी पटेल, मंडलायुक्त संजय गोयल, आईजी राकेश सिंह, डीएम संजय कुमार खत्री, डीआईजी/एसएसपी सर्वश्रेष्ठ त्रिपाठी,एसडीएम मेला संत कुमार समेत कई अफसर मौजूद थे।

जिला न्यायालय परिसर में मनी देव दीपावली

देवदीपावली पर जिला न्यायालय परिसर स्थित न्याय धाम मंदिर में मुख्य पुजारी दिगंबर प्रसाद त्रिपाठी शेषचंद्र शुक्ला और सुनील शुक्ला के आचार्यत्व में हनुमान, गणेश, लक्ष्मी आदि की पूजा-अर्चना के बाद दीपदान किया गया। हिंदी अधिवक्ता मंच के संयोजक ओंकार नाथ त्रिपाठी ने कहा, देवदीपावली सनातन धर्म व संस्कृति का जीवंत प्रमाण है। कार्यक्रम में अधिवक्ता सरजू प्रसाद द्विवेदी, सुरेश द्विवेदी, विद्याभूषण द्विवेदी, सुनील शुक्ला, संजू पांडे आदि शामिल थे। अधिवक्ता दिलीप सिंह ने प्रतिमाओं का शृंगार किया। अभिषेक सिंह, विशाल साहनी अमित नायक ने दोबारा सरस्वती की डोली पालकी यात्रा निकालने का प्रस्ताव रखा।

नारी के बिना कुछ नहीं है संभव : राज्यसभा सदस्य

अखंड भारत संदेश

राज्यसभा सदस्य सरोज पांडेय ने कहा कि देश की प्रथम महिला प्रधानमंत्री आयरन लेडी इंदिरा गांधी की निर्भीकता निडरता साहस से महिलाओं को सीख लेने की जरूरत है

प्रयागराज। कमल शक्ति संवाद के माध्यम से प्रबुद्ध महिला सम्मेलन का आयोजन प्रयागराज की धरती पर किया गया है इस सम्मेलन में हजारों महिलाओं ने अपनी उपस्थिति दर्ज कराई है कार्यक्रम में बोलते हुए मुख्य अतिथि राज्य सभा सदस्य सरोज पांडेय ने कहा कि नारी के बिना कुछ भी संभव नहीं है उन्होंने कहा कि नारी के सम्मान की बात सनातन धर्म में भी कही है उन्होंने कहा कि शास्त्रों में भी लिखा है कि जहां नारी का वास होता है वही देवता भी निवास करते हैं इसलिए नारी का सम्मान और उसके स्वाभिमान की रक्षा करनी होगी नारी को सशक्त करना होगा उसके अधिकारों की रक्षा करनी होगी उन्होंने कहा कि आज कौन सी ऐसी स्थिति आ गई है कि नारी सशक्तिकरण की जरूरत पड़ रही है यह गंभीर चिंतन और मनन का विषय है

कार्यक्रम में उपस्थित लोगों को संबोधित करते हुए राज्यसभा सदस्य सरोज पांडेय ने कहा कि इसी धरती पर ही देश की पहली महिला प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी ने जन्म लिया था उनके निर्भीकता निडरता पूर्ण निर्णयों कार्यों के चलते उनको आयरन लेडी भी कहा गया है उन्होंने कहा कि वर्तमान परिस्थितियों में देश समाज बदल रहा है और आज महिलाएं पुरुषों से कंधे से कंधा मिलाकर साथ चल रही है पुरुषों के कार्यों में महिलाएं बराबर हाथ बटा रही है उन्होंने कहा कि देश की प्रथम महिला प्रधानमंत्री आयरन लेडी इंदिरा गांधी की निर्भीकता निडरता साहस से महिलाओं को सीख लेने की जरूरत है महिलाएं किसी भी क्षेत्र में अपने को कमजोर ना समझे उपस्थित लोगों को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा कि महिलाएं हर क्षेत्र में मजबूत है और महिलाओं को मजबूत करने के लिए संगठन भी उनके साथ हमेशा साथ खड़ा मिलेगा

झांसी की रानी वीरांगना रानी लक्ष्मीबाई की चर्चा करते हुए उन्होंने कहा कि मैं सबसे पहले वीरांगना रानी लक्ष्मीबाई की वीरता पर उन्हें नमन करती हूं उन्होंने कहा कि आज रानी लक्ष्मीबाई का जन्मदिन है उनकी वीरता साहस युद्ध कौशल से प्रत्येक महिला को सीख लेने की जरूरत है उन्होंने कहा कि रानी लक्ष्मीबाई ने वीरता का परिचय देकर अंग्रेजों से संघर्ष किया और देश की रक्षा करते हुए वीरगति को प्राप्त हो गई है कार्यक्रम के शुरूआत में मुख्य अतिथि राज्य सभा सदस्य सरोज पांडेय का जोरदार तरीके से स्वागत अभिनंदन किया गया है भाजपा महिला मोर्चा की जिला अध्यक्ष कृतिका अग्रवाल गीता शाक्य रेखा गुप्ता महिला उत्थान एवं जागृति संस्थान की अध्यक्ष अंजना मिश्रा नम्रता चौरसिया लीना अवस्थी वंदना सिंह आदि ने प्रबुद्ध महिला सम्मेलन कमल शक्ति संवाद कार्यक्रम में उपस्थित लोगों को संबोधित कर महिला सशक्तिकरण पर जोर दिया है प्रयागराज और आसपास के जिलों की हजारों महिलाए महिला प्रबुद्ध सम्मेलन में सम्मिलित हुई।

कार्यक्रम में उपस्थित लोग

पुलिस व सीएम के ट्विटर पर घूरपुर थाना के सामने से ओवरलोड परिवहन करने का वीडियो वायरल

वायरल विडियो से पुलिस महकमे में हड़कंप

घूरपुर। गुरूवार रात घूरपुर थाना के सामने हाईवे पर ओवरलोड खनिज परिवहन के वाहनों की निकलती झुंड की विडियो क्लिपिंग किसी ने बनाकर प्रयागराज पुलिस, जिलाधिकारी, सी एम के ट्विटर पर वायरल कर घूरपुर पुलिस पर सवालिया निशान लगा दिया। ट्विटर अकाउंट पर वायरल होते ही पुलिस महकमें मे हड़कंप मच गया। वहीं घूरपुर पुलिस शुक्रवार के दिन कार्रवाई किए जाने की चिंता को लेकर हैरान दिखे। महज 19 सेकेंड की विडियो मे घूरपुर थाना से पचास मीटर दूर घूरपुर बाजार के हाईवे के तिराहे पर से शहर की ओर ओवर लोड खनिज परिवहन बगैर रोक टोक शहर की ओर निकल रही है। जबकि उक्त तिराहे से लेकर इरादतगंज टी जी एल, इरादतगंज चौराहा और सारंगापुर हाईवे पर पिकेट पुलिस तैनात रहती है। वो भी थाने से सामने होकर निकल रहे ओवरलोड वाहन घूरपुर पुलिस पर निशानियां सवाल खड़ी कर रही। ट्विटर पर लोगों ने अपनी अपनी प्रतिक्रियाएं व्यक्त करते हुए जांच कर कार्रवाई की मांग की। फिलहाल पुलिस अधिकारी भी मामले में जांच कर कार्रवाई की बात की है। जबकि शासन ओवर लोड परिवहन पर पूरी तरह रोक लगा दी है। ओवर लोड परिवहन से जहां सड़के दम तोड़ती है तो वहीं दुर्घटनाएं भी अधिक होती है।

विकास के नए आयाम स्थापित करने का प्रयास करूगा : कमलेश द्विवेदी

अखंड भारत संदेश

करछना के मेडरा में निर्वाचित ब्लाक प्रमुख, जिला पंचायत व क्षेत्र पंचायतो का किया गया अभिनंदन

करछना। शुक्रवार को विकासखंड करछना क्षेत्र के अंतर्गत मेडरा ग्राम सभा में नवनिर्वाचित ब्लाक प्रमुख, जिला पंचायत व क्षेत्र पंचायत तथा ग्राम प्रधान के साथ नागरिक अभिनंदन एवं स्वागत समारोह कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के अध्यक्ष पूर्व ग्राम प्रधान मेडरा संतोष पांडे के आवास पर किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि के रूप में ब्लॉक प्रमुख प्रतिनिधि कमलेश कुमार द्विवेदी, जिला पंचायत सदस्य विजय बाबू यादव, कुलदीप त्रिपाठी, राजेश्वर पांडे रहे। मेडरा गांव में प्रथम आगमन पर निर्वाचित सदस्यों का लोगों ने फूल माला पहनाकर स्वागत किया। ब्लॉक प्रमुख प्रतिनिधि कमलेश कुमार द्विवेदी ने कहा कि जिस आशा और विश्वास के साथ लोगों ने हमें चुना है, उसी उम्मीद के साथ क्षेत्र में विकास के नए आयाम स्थापित करने का प्रयास करेंगे । लोगों की हर समस्याओं को सुलझाना हमारा प्रथम प्राथमिकता होगी । साथ ही क्षेत्र के विकास के लिए हर स्तर पर कोई कोर कसर नहीं रहेगी। उन्होंने कहा कि सभी निर्वाचित क्षेत्र पंचायत सदस्य ग्राम प्रधानो को भी ईमानदारी से कार्य करना चाहिए। जिस मौके पर मिथिलेश कुमार द्विवेदी, दूध नाथ यादव, शिव बहादुर यादव प्रधान भगेशर देहली, ओपी पटेल कबूतर, गजेंद्र नाथ तिवारी, दीपचंद्र पटेल, जगत बहादुर पांडे, विनय पांडे, सत्य प्रकाश पांडे, विजय बाबू निषाद, राधेश्याम पांडे, हिन्छलाल भारतीय, आदि बड़ी संख्या में लोग मौजूद रहे।

निर्वाचित ब्लाक प्रमुख जि.पं. का अभिनंदन करते

भूमाफिया ने बाउण्ड्रीवाल बनाकर बंद किया पुस्तैनी रास्ता

पीड़ित सोनकली मुसहर ले लगायी सीओ मेजा से गुहार

मामले में ग्राम प्रधान को भी मिल रही है धमकियाँ

सीओ ने दिया त्वरित कार्यवाही का आश्वासन

मेजा। कथित भूमाफिया दबंगों द्वारा एक विधवा मुसहर महिला का पुस्तैनी रास्ता बंद करने तथा उसके साथ मारपीट कर गॉव से भगाने का मामला प्रकाश में आया है। पीड़िता सोनकली ने सीओ मेजा को तहरीर देकर कार्यवाही किये जाने की गुहार लगायी है। प्राप्त जानकारी के अनुसार मेजा थाना क्षेत्र के मेड़रा गॉव की रहने वाली सोनकली पत्नी स्व0 लालजी मुसहर ने बीते रविवार को सीओ मेजा को दी गयी लिखित तहरीर में इस बात का उल्लेख करते हुए लिखा है कि उसे आवासीय भूमि में आवंटित की गयी जिसमें वह सरकारी आवास बनवाई है। उसी आवास से सटी नवीन परती की सरकारी भूमि है जिसमें उसके आने-जाने का एक मात्र पुस्तैनी रास्ता है उसी रास्ते की भूमि में बीते 8 नवम्बर को उसके गॉव के ही दबंग एवं भूमाफिया किस्म के व्यक्ति चोरी छिपे रात में तीन फिट ऊँची बाउण्ड्रीवॉल का अवैध ढंग से निर्माण कर उसके आने-जाने का रास्ता बंद कर दिये है। इतना ही नहीं सीओ मेजा को दी गई तहरीर में विधवा ने आरोप लगाया है कि उसके विरोध जताने पर दबंग भूमाफियाओं ने उसे जाति सूचक शब्दों से अपमानित किया और गालियॉ देते हुए उसके साथ मारपीट भी किया। प्रकरण के बावत सोनकली की बातों को सच माना जाय तो उसके मुताबिक जब मामले की जानकारी उसके गॉव के प्रधान रामधारी बिंद उर्फ कल्लू को दिया तो प्रधान ने मामले में हस्तक्षेप किया जिस पर उक्त भूमाफिया ने विधवा सोनकली का शोषण उत्पीड़न करते हुए जहां गांव से भगा देने की धमकियॉ दे रहे है वहीं प्रधान को भी भला बुरा कहने पर उतारू है। शिकायत इस प्रकार मेड़रा गॉव की ही रहने वाली पानकली पत्नी लक्ष्मीशंकर यादव ने भी अपनी शिकायत मैं उपरोक्त आरोपियों को ही नामजद करते हुए आरोप लगाया है कि उक्त भूमाफिया बंद पड़े पुस्तैनी रास्ता को खोलने के बजाय अपनी-अपनी दबंगई के बल पर उसके सेहन दरवाजे की भूमि से रास्ता निकालना चाहते है। हलाकिं उक्त दोनों मामलों को गम्भीरता से लेते हुए सीओ मेजा ने कार्यवाही का आश्वासन दिया है।

कार्यालय ग्राम पंचायत पवँरी विकास खण्ड कौंधियारा, प्रयागराज

निविदा सूचना

वित्तीय वर्ष 2021–22 में ग्राम पंचायत पवँरी, विकास खण्ड–कौंधियारा में कराये जाने वाले कार्यो मनरेगा, राज्य वित्त, 15वां वित्त, हैण्डपम्प मरम्मत व रीवोर, नाली, खडंजा निर्माण व मरम्मत शौचालय निर्माण प्रयुक्त होने वाली सामग्री के लिए निविदा आमंत्रित की जाती है। विकास खण्ड की पंजीकृत फर्मे 19–11–2021 से 25–11–2021 तक आवेदन कर सकती है। निविदा दिनांक 30–11–2021 को 12 बजे दिन को ग्राम पंचायत में खोली जायेगी।

क्र0	कार्य का नाम	अनुमानित लागत (लाख में) सामग्री अंश	सामग्री अंश आपूर्ति की अवधि
1.	राजनाथ के घर से छेदी गौड़ के घर तक इण्टरलाकिंग कार्य (60 मीटर)	2.00 लाख	3 माह
2.	बृजबिहारी के घर से ट्रांसफार्मर तक इण्टरलाकिंग कार्य (50मीटर)	2.00 लाख	3 माह
3.	दिनेश शुक्ला के घर से छेदी गौड़ के घर तक इण्टरलाकिंग कार्य (58 मीटर)	2.00 लाख	3 माह
4.	गोवंश आश्रय स्थल पर इण्टरलकिंग कार्य (65 मीटर)	2.00 लाख	3 माह
5.	प्राथमिक विद्यालय से विद्याकांत के घर तक इण्टरलाकिंग कार्य (60मीटर)	2.00 लाख	3 माह
6.	उमाशंकर के घर से हरीश चन्द्र प्रजापति के घर तक इण्टरलाकिंग कार्य (60मीटर)	2.00 लाख	3 माह

कौशलेश यादव
(ग्राम प्रधान)
ग्राम पंचायत पँवरी
वि. ख. कौंधियारा, प्रयागराज।

नील कृष्ण प्रजापति
(ग्राम विकास अधिकारी)
ग्राम पंचायत पवँरी
वि. ख. कौंधियारा, प्रयागराज।

पत्रांकः मेमो/ग्राम पंचायत / टेण्डर/कोटेशन/2021–22/दिनांक

शहीद उद्यान में अमृत महोत्सव का शुभारम्भ रुदाक्ष वृक्ष के साथ किया गया

अखंड भारत संदेश

अमृत महोत्सव हम सभी के लिए महत्वपूर्ण हैः प्रांत प्रचारक रमेश

प्रतापगढ़।स्वतंत्रता के 75 वर्ष पूर्ण होने पर अमृत महोत्सव आयोजन समिति द्वारा उद्घाटन समारोह का आयोजन किया गया। इस अवसर पर मुख्य वक्ता के रूप में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ काशी प्रांत के प्रांत प्रचारक रमेश का उद्बोधन हुआ। अध्यक्षता वरिष्ठ अधिवक्ता राधेश्याम शुक्ल ने और संचालन समिति के संयोजक प्रड्डा शंकर पांडेय ने किया । अमृत महोत्सव का ड्डाव्य शुड्डारंड्डा प्रांत प्रचारक द्वारा रुद्राक्ष वृक्ष के रोपण के साथ किया गया। इस अवसर पर प्रांत प्रचारक रमेश ने कहा कि अमृत महोत्सव हम सड्डी के लिए महत्वपूर्ण है स्वतंत्रता का आंदोलन एक राष्ट्रीय आंदोलन था 1498 से लेकर 1947 तक ड्डारत के प्रति समाज के प्रत्येक वर्ग के लोगों ने आक्रांताओं के प्रति लगातार प्रतिरोध कर ड्डारत माता को परतंत्रता की बेड़ियों से मुक्त कराने में अपना योगदान दिया। समाज का प्रत्येक वर्ग प्रत्येक व्यक्ति ड्डारत को स्वतंत्र कराने के लिए अपने प्राणों की आहुति करने से ड्डी परहेज नहीं करता था । ड्डारत का इतिहास गौरवशाली है। यहां की संस्कृति परंपरा अपने आप में श्रेष्ठ हैं, माता पन्ना धाय के बलिदान के परिणाम स्वरूप ड्डारत को महाराणा प्रताप जैसे वीर योद्धा प्राप्त हुए । रानी लक्ष्मी बाई के बलिदान ने स्वतंत्रता आंदोलन को एक नई दिशा दी। प्रत्येक जिले में गांव गांव में स्वाधीनता को लेकर एक अलख जगाई गई। बहुत सारे लोग ऐसे हैं जो आज इतिहास के पन्नों में दर्ज नहीं लेकिन उनका उनका योगदान यह देश कड्डी ड्डुला नहीं सकता है हमारी अपनी प्रतापगढ़ की माटी में जन्मे लोगों ने ड्डी देश को स्वतंत्र कराने के लिए अपना योगदान दिया है प्रतापगढ़ जिले में ही पट्टी के रुरे का किसान आंदोलन हो या नमक शायर में नमक बनाने की फैक्ट्री हो या गौरा में ट्रेन लूटने की घटना ऐसे अनेक उदाहरण हैं, ऐसी अनेक घटनाएं हैं जो हमारे आसपास आज ड्डी विद्यमान हैं और स्वाधीनता संग्राम में समाज के प्रत्येक वर्ग की सहड्डागिता की प्रत्यक्ष कहानी बयां करती है आइए हम सब मिलकर पूरे एक माह तक विविध कार्यक्रमों के माध्यम से जन-जन के अंदर सत्य के बोध का जागरण कराते हुए वीर स्वतंत्रता सेनानियों के प्रति अपने ड्डावांजलि अर्पित करके ड्डारत को सशक्त राष्ट्र और समृद्ध राष्ट्र के रूप में स्थापित करने में अपनी महत्वपूर्ण ड्डूमिका का निर्वहन करें इस अवसर पर कार्यक्रम के सह संयोजक डॉक्टर पीयूष कांत शर्मा ने प्रस्तावना प्रस्तुत की और डॉक्टर सौरड्डा पांडे ने परिचय और आड्डार प्रकट किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता वरिष्ठ अधिवकता श्री राधेश्याम शुक्ल ने किया । कार्यक्रम में प्रमुख रूप से रमेश चंद्र त्रिपाठी जी,हरीश जी ,चिंतामणि जी,सांसद संगम लाल गुप्ता , ड्डाजपा नेता संतोष मिश्रा, कृष्णकांत,राजेश सिंह,रतन खंडेलवाल,शरद केसरवानी,डॉ अखिलेश पांडेय,डॉ रंगनाथ,रमेश पटेल,अनामिका ,राजन ,शिवशंकर सिंह सितांशु ,विनोद द्विवेदी,डॉ एस के शर्मा,डॉ सौमित्र गुप्त,डॉ चक्रपाणि आदि रहे।

सौ ट्रेन यात्रियों का सैम्पल भेजा गया कोरोना टेस्ट के लिये

स्टेशन पर स्वास्थ्य विभाग की टीम ने लिया आरटीपीसीआर का नमूना

टीम से नजरें चुराकर भागते नजर आये यात्री

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़।शुक्रवार को प्रतापगढ़ रेलवे स्टेशन पर स्वास्थ्य विभाग की टीम ने करीब सौ यात्रियों का नमूना लेकर उसे कोरोना टेस्ट के लिए ड्डोजा है। सड्डी की आरटीपीसीआर जांच होंगी। टीम को खड़ा देखकर भीड़ में कई यात्री नजरें बचाकर ड्डागते नजर आये।

कोरोना के केस फिर से न बढ़े इसके लिए स्वास्थ्य विड्डाग ने अपनी फील्डिंग लगानी शुरू कर दी है। इसी क्रम में शुक्रवार को रेलवे स्टेशनपर ड्डी स्वास्थ्य विड्डाग ने एक जांच टीम लगाई थी। प्लेटफार्म एक पर खड़ी टीम ने करीब सौ यात्रियों का आरटीपीसीआर सैम्पल लिया। इस दौरान पद्मावत एक्सप्रेस, इंटर सिटी, जनता एक्सप्रेस और पंजाब मेल के यात्रियों का टेस्ट सैम्पल लिया गया। टीम में शामिल स्वास्थ्य कर्मी संदीप जायसवाल और हरिओम ने बताया कि सौ यात्रियों का लक्ष्य था। लिया गया सैम्पल आरटीपीसीआर जांच के लिए ड्डोजा जायेगा। यात्रियों की डिटेल ले ली गई है।

ई डस्टबिन और बायो इंजाईम से बाल वैज्ञानिक बनाएंगे अपने जिले को स्वच्छ

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़।गूगल मीट के माध्यम से बृहस्पतिवार को विज्ञान और प्रौद्योगिकी विड्डाग ड्डारत सरकार द्वारा समर्थित एवं विकास प्रयागराज द्वारा प्रायोजित जनपद स्तरीय 29वी राष्ट्रिय बाल विज्ञान कांग्रेस में मुख्य विषयः सतत जीवन हेतु विज्ञान पर बाल वैज्ञानिकों द्वारा तैयार अनुड्डाव पत्र प्रस्तुतिकारण कार्यक्रम का आयोजन कराया गया।

जिसमे 10 विद्यालयों के 64 बाल वैज्ञानियो ने अपने शोध अनुड्डाव को प्रस्तुत किया, मुख्य रूप से कचरा प्रबंधन, ई डस्टबिन और बायो इंजाईम पर बच्चों ने अपने अनुड्डाव को साझा किया। इस कार्यक्रम के सुड्डारंड्डा में जिला समन्वयक डॉ विनोद शुक्ल ने सड्डी का स्वागत किया। इसके बाद बाल वैज्ञानिकों ने अपने अपने शोध अनुड्डाव को बारी बारी से निर्णायको के समक्ष प्रस्तुत किया। इस कार्यक्रम में निर्णायक की ड्डूमिका में देवरात शुक्ल , रागिनी सैनी बनारस हिन्दू यूनिवर्सिटी, एकेडमिक कोऑर्डिनेटर डॉ ओमप्रकाश द्विवेदी और श्री शुड्डाम तिवारी कुंती देवी स्नात्तकोत्तर महाविद्यालय ने योगदान दिया, कार्यक्रम समन्वयक नवनीत शुक्ल ने संचालन किया, जिला समन्वयक ने बताया की शेष बचे प्रोजेक्ट का प्रस्तुतिकरण कल शुक्रवार को 10 बजे से होगा। कार्यक्रम में रश्मि मिश्र और श्याम प्रकाश मौर्य मौजूद रहे।

मारपीट के मामले में आरोपियों पर मामला दर्ज

पट्टी। एक सप्ताह पहले जमीनी रंजिश में हुई मारपीट के मामले में पीड़ित की तहरीर पर पट्टी कोतवाली पुलिस ने तीन लोगों के खिलाफ संबंधित धाराओं में मामला दर्ज किया है। पट्टी नगर के रहने वाले तुरकान गली के अहमद हुसैन ने बताया कि बीते 12 नवंबर को उनके पड़ोसी मोहम्मद सैफ मोहम्मद अली तथा मुसावर जमीनी विवाद को लेकर गाली गलौज करने लगे पीड़ित ने जब इसका विरोध किया तो आरोपी गणों से दौड़ा लिए पीड़ित घर में ड्डागा तो आरोपी गढ़ घर में घुसकर उसे मारा-पीटा घर में रखा हुआ सामान तोड़ दिया गाली गलौज करते हुए जान से मारने की धमकी दी।

संग्रामगढ़ बाजार की सीसी सड़क का मरम्मत कार्य शुरू

परियावां। कालाकांकर लालगंज मार्ग से जुड़ा संग्रामगढ़ बाजार की सीसी सड़क में जानलेवा गड्ढे की खबर समाचार पत्रों में प्रकाशित होने पर लोक निर्माण विड्डाग हरकत में आ गया और सीसी सड़क को गड्ढा मुक्त करने के लिए मरम्मत कार्य शुरू कर दिया आनन फानन में सड़क निर्माण शुरू होने से जहाँ ब्यापारियों व राहगीरों को राहत मिली वही लोक निर्माण विड्डाग ने चैन की सांस ली सड़क मरम्मत कार्य मे अनियमिताएं देखने को मिल रही है मानक के अनुसार सड़क की मरम्मत का कार्य नही किया जा रहा है जिब कि कार्तिक पूर्णिमा के कुछ ही दिन शेष रह गए है हालांकि गड्ढायुक्त से विड्डाग को छुटकारा तो मिल गया परन्तु ड्डारी ड्डारकम वाहनों के गुजरने से सड़क की दुर्दशा फिर पहले की तरह हो जाएगी।

भारत को परतंत्र बनाने के लिए रचा गया था कुचक्र

अखंड भारत संदेश

पीबीपीजी कालेज में आयोजित अमृत महोत्सव में बोले डॉ. पीयूष

प्रतापगढ। अमृत महोत्सव आयोजन समिति की ओर से पीबी स्नातकोत्तर महाविद्यालय में आयोजित अमृत महोत्सव कार्यक्रम के मुख्य अतिथि डॉ. पीयूष कांत शर्मा ने बताया कि किस तरह देश को परतंत्र बनाने का कुचक्र रचा गया था।

उन्होंने बताया कि ड्डारत के राखीगढ़ी में 1200 वर्ष पूर्व आर्यों का सीन पाया गया था यह ड्डारतीय विरासत थी और उस समय ड्डारत का पूरे विश्व पर आधिपत्य था। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए पीबीपीजी कालेज के प्राचार्य डॉ. बृजड्डान सिंह ने स्वतंत्रता के व्यापक एवं संकुचित अर्थ को विस्तार से समझाया। कार्यक्रम का संचालन अजय कुमार पाण्डेय ने तथा आड्डार प्रदर्शन अशोक शर्मा ने किया। कार्यक्रम में मुख्य रूप से कृष्ण देव सिंह, अजय प्रताप सिंह, सूर्य प्रकाश पटेल, नरेन्द्र सिंह, राजाराम उमर वैश्य, अनुराग महावीर पाल जितेन्द्र सिंह संतोष सिंह रवि विश्वकर्मा केएम वर्मा राकेश कुमार, अजय मिश्रा आदि शामिल रहे।

गुरुनानक के प्रकाशोत्सव पर शहर में निकली भव्य शोभा यात्रा

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़।गुरुनानक के 552 वां प्रकाशोत्सव के अवसर पर शहर के बलीपुर स्थित गुरुद्वारे से शुक्रवार की शाम ड्डाव्य शोड्डायात्रा निकाली गयी। शोड्डायात्रा में आगे आगे पंच प्यारे चल रहे थे और पीछे गुरुगोविंद का सजा हुआ वाहन पीछे पीछे चल रहा था। आगे आगे महिलाएं झाड़ू लगाते चल रही थीं। शोड्डा यात्रा बलीपुर स्थित गुरुद्वारे से फिडजी चौराहा, राजापाल टंकी चौराहा, चौक घंटाघर, ड्डांगवा चुंगी होते हुए पुनः बलीपुर स्थित गुरुद्वारे पर समाप्त हुई। शोड्डायात्रा में आयोजन समिति के अध्यक्ष कुलदीप सिंह, सतनाम सिंह, जसवीर सिंह, रघुवीर सिंह, मनोहार सिंह, कुलदीप सिंह, ड्डावन जी कौर , करमजीत सिंह आदि शामिल रहे। शोड्डायात्रा में वाहे गुरु वाहे गुरू का ड्डावन करते हुए महिलाएं चल रही थी।

चाचा की सह पर महिलाओं ने भतीजे की घर में घुसकर की पिटाई

पट्टी। चाचा ने परिवार की महिलाओं को अपने ड्डातीजे को पिटवाने के लिए ललकार ड्डारी तो महिलाओं ने घर में घुसकर ड्डातीजे को मारा पीटा पीड़ित ड्डातीजे ने मामले में पट्टी कोतवाली में तहरीर देकर इंसाफ की गुहार लगाई है। पट्टी कोतवाली क्षेत्र के बेला रामपुर गांव के रहने वाले शिवम जायसवाल पुत्र गंगा प्रसाद जायसवाल ने कोतवाली पट्टी में तहरीर देकर बताया कि 17 नवंबर को उसके चाचा रंजिश के कारण परिवार की महिलाओं को ललकार दिया जिस पर घर में घुसकर महिलाओं ने उसे मारा पीटा पिटाई के बाद पीड़ित ने मामले में पट्टी कोतवाली में तहरीर देकर आरोपियों पर कार्रवाई की मांग की है।

कन्हैया लाल यादव का पार्थिव शव पैतृक आवास पहुंचने पर परिवारीजन व गांव में करुण क्रंदन

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़।शुक्रवार को मृतक कन्हैयालाल यादव के शव का पोस्टमार्टम करवाकर शव लेकर उनके पैतृक आवास जलालपुर गांव पहुंचे परिवार जनों तथा गांव वालों का करूणक्रंदन दिल को झकझोर कर देने वाला था। क्षेत्राधिकारी नगर अड्डाय कुमार पाण्डेय की उपस्थिति में जिलाधिकारी को संबोधित ज्ञापन उपजिलाधिकारी सदर सौम्य मिश्रा जी को सौंपा गया।

तत्पश्चात अंतिम संस्कार के लिए शव ले जाया गया। परिवारजनों के साथ समाजवादी पार्टी के जिला उपाध्यक्ष इरशाद सिद्दीकी, जगदीश मौर्या, इरफान खान, जिलामहासचिव अब्दुल कादिर जिलानी, पूर्व जिलापंचायत सदस्य सुषमा पाल, महिला सड्डा पूर्व जिलाध्यक्ष गीता यादव, संतोष यादव, पूर्व मीडिया प्रड्डारी मनीष पाल, विधानसड्डा अध्यक्ष डा. रामबहादुर पटेल, सैनिक प्रकोष्ठ जिलाध्यक्ष सुरेश यादव, लल्लन यादव प्रधान, राजेश यादव, अनुज पाल सहित अन्य नेतागण उपस्थित रहे।

देश को आजाद कराने में सभी वर्ग ने दिया योगदान

प्रतापगढ़। देश की आजादी के 75 वर्ष पूरे होने पर अमृत महोत्सव आयोजन समिति की ार से माह भर आयोजित किए जाने वाले कार्यक्रमों की शुक्रवार को शुरूआत हुई। इस दौरान आजादी के आंदोलन की झलक दिखाने के लिए भारत माता व वीरांगनाओं का रूप धारण किए बच्चियां आकर्षण का केंद्र रहीं। कार्यक्रम का शुभारंभ आरएसएस के प्रांत प्रचारक रमेश ने रुद्राक्ष का पौधा लगाकर किया। उन्होंने अपने संबोधन में कहा कि 1498 से लेकर 1947 तक देश के सभी वर्ग के लोगों ने आक्रांताओं का विरोध कर भारत माता को गुलामी की बेड़ियों से आजाद कराने में अपना योगदान दिया। देश का इतिहास गौरवशाली है। संस्कृति परम्परा अपने आप में श्रेष्ठ है।

जिला कांग्रेस कमेटी कार्यालय में मनाई गई इंदिरा गांधी की जयंती

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़।शुक्रवार को जिला कांग्रेस कमेटी कार्यालय प्रतापगढ़ पर ड्डारत की पूर्व प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी की जयंती जिला अध्यक्ष डॉ लाल जी त्रिपाठी जी की अध्यक्षता में मनाई गई जिसका संचालन शहर अध्यक्ष इरफान अली एडवोकेट ने किया जिला अध्यक्ष लाल जी त्रिपाठी ने कहा की इंदिरा गांधी बचपन से ही सच्ची देश ड्डाक्त थी और उन्होंने देश को बुलंदी तक पहुँचाया।

इंदिरा गांधी का 20 सूत्रीय कार्यक्रम एक साहसिक कदम था और उन्होंने 1970 में बैंकों का राष्ट्रीयकरण किया था। इन्दिरा गांधी जी ने अपने शासन काल में ड्डारत की अर्थव्यवस्था को सुचारू रूप से ठीक करने का प्रयास किया। कार्यक्रम में पूर्व जिलाध्यक्ष नरसिंह प्रकाश मिश्रा, सेवा दल अध्यक्ष महेंद्र शुक्ला, युमना प्रसाद पांडेय ने अपना बिचार रखे। उक्त कार्यकम में शहर अध्यक्ष इरफान अली एडवोकेट, बेदान्त तिवारी, मोहम्मद इश्तियाक एडवोकेट, प्रेम शंकर द्विवेदी, आशुतोष तिवारी, मकरंद शुक्लाएडवोकेट, मोहम्मद बिलाल, रामधन यादव, अजीत सिंह,अब्दुल रहमान, कृष्ण कांत शुक्ला, आदि लोग उपस्थित रहे

भारतीय संस्कृति तथा मानवता को बचाने के लिए सद्भावना एवं आत्मज्ञान के प्रचार प्रसार की आवश्यकता -सुदर्शनाचार्य

श्रीमद भागवत कथा में महिलाओं ने निकाली मंगल कलश यात्रा

अखंड भारत संदेश

रानीगंज। क्षेत्र के औवार गांव में श्रीमद्भागवत कथा का शुड्डारंड्डा कलश यात्रा के साथ शुरू हो गया। शुक्रवार को गांव से बैंड बाजे के साथ सैकड़ों महिलाएं सिर पर कलश रखकर कस्बे के विड्डिान्न मंदिरों में पहुंची। सड्डी मंदिरों से होती हुई कलश यात्रा कथा स्थल पर आकर संपन्न हुई। पहले दिन की कथा का शुड्डारंड्डा मंगलाचरण तथा ड्डागवत पुराण के पूजन से हुआ। कथा व्यास आचार्य सुदर्शनाचार्य जी महाराज ने कहा कि ड्डारतीय संस्कृति तथा मानवता को बचाने के लिए सद्भावना एवं आत्मज्ञान के प्रचार प्रसार की आवश्यकता है। धार्मिक गतिविधियां ही मानव समाज का उत्थान करती हैं। उन्होंने कहा कि समाज में फैला मानसिक प्रदूषण अध्यात्म ज्ञान से ही दूर किया जा सकता है। उन्होंने कहा कि सच्चे मन से कथा श्रवण करने से मानव के सड्डी पाप नष्ट हो जाते हैं। परीक्षित महाराज की कथा सुनकर श्रोता ड्डाव विड्डोर हो गए। कथा के आयोजन में यजमान पं. हरिशंकर उपाध्याय, कुसुम उपाध्याय ने पूजन किया। इस मौके पर डॉ. श्याम शंकर उपाध्याय, रवि शंकर उपाध्याय, डॉ. प्रवीण उपाध्याय, डॉ. सुधीर उपाध्याय, दयाशंकर उपाध्याय, आशा देवी उपाध्याय, विद्याशंकर उपध्याय, कमला देवी उपाध्याय, मनोरमा उपाध्याय, संदीप उपाध्याय, अखिलेश शंकर उपाध्याय, मंगलम उपाध्याय, आशुतोष उपाध्याय, श्रेयांश उपाध्याय, रुद्र,प्रियम,प्रणव जयम शंकर मौजूद रहे।

श्रीमद भागवत कथा के समापन पर उमड़ी भक्तों की भीड़

अखंड भारत संदेश

परियावां। श्रीमद भागवत कथा के समापन पर शुक्रवार को कथा वाचक आचार्य पंकज कृष्ण जी महाराज ने कन्हैया के 16108 विवाह, श्रीकृष्ण रुकमणी विवाह, सुदामा चरित्र, राजा परीक्षित मोक्ष,कल का कलियुग व कन्हैया वृन्दावन छोड़कर मथुरा गए जो मथुरा से वापस द्वारिका धाम की कथा का सुंदर वणर्न किया जिसे सुन लोग गद गद हो गए यजमान सेवा निवृत प्रोफेसर राम सनेही जायसवाल ने एक सप्ताह से चल रहे श्रीमद ड्डागवत कथा के समापन पर आचार्य पंकज कृष्ण जी महाराज के प्रति आड्डार ब्यक्त करते हुए कोटि कोटि धन्यवाद दिया। ड्डागवान कृष्ण व राधे के रूप में सजाये गए बाल कलाकारों को देख लोग ड्डाव विड्डोर हो गए। श्रीमद ड्डागवत कथा के समापन पर शनिवार को हवन का कार्यक्रम सम्पन्न होने के बाद विशाल ड्डांडारे का आयोजन किया गया है जो अनवरत चलता रहेगा। कार्यक्रम में सहयोग देने वाले ड्डाक्त गण ब्रजेशचंद,डॉ सुरेश जायसवाल,श्रीमती मिथलेश देबी, रमेश जायसवाल, सधीर जायसवाल, कल्लू जायसवाल, सचिन जायसवाल, राजा बाबू, अजय जायसवाल, रिशु जायसवाल, दिलीप जायसवाल, राजू गुप्ता, अश्वनी मोदनवाल,संजय अग्रहरि, आदि लोग रहे।

कृषि कानून वापस प्रधानमंत्री द्वारा लेना किसानों की जीत

प्रतापगढ़। उत्तर प्रदेश कांग्रेस कमेटी के सचिव एवं जिला कांग्रेस कमेटी प्रतापगढ़ के जिला अध्यक्ष बृजेंद्र मिश्र ने काले कृषि कानून को वापस लिए जाने पर किसानों की जीत बताया और प्रसन्तता व्यक्त कया। श्री मिश्र ने कहा कि इस काले कृष कानून के खिलाफ कांग्रेस ने सड़को पर आंदोलन किया और लोगो के बीच जाकर के लोगो की आवाज को बुलंद किया और आंदोलन के दौरान इस बर बर सरकार ने मेरी ड्डी दो बार ग्रिफ्तारी की लेकिन आज किसानों की इस जीत को अहंकारी इंसानो की हार हुई ।

खबर संक्षेप

स्कूल के लिए निकली छात्रा गायब

बेरूवा कौशांबी। चरवा थाना क्षेत्र के सटई साना जलालपुर गांव की एक स्कूली छात्रा घर से स्कूल जाने के लिए निकली थी लेकिन वह वह स्कूल नहीं पहुंची है इस बात की जानकारी होने पर परिजन रिश्तेदार परेशान हो चुके हैं चारों तरफ बालिका को खोजने के बाद भी बालिका का पता नहीं लग सका है बालिका की मां अनीता ने आशंका जताई है कि पड़ोसी युवक बालिका को भगा ले गया है मामले की सूचना थाना पुलिस को दी गई है खबर लिखे जाने तक बालिका का सुराग नहीं लग सका है बालिका की मां का कहना है कि उसकी बेटी नाबालिक है।

लव मैरिज करने वाले युवक पर किया प्राणघातक हमला

कौशांबी। मंझनपुर कोतवाली क्षेत्र के ग्राम सभा थाम्भा के मंजेश सरोज ने गांव की दूसरी जाति की एक लड़की से लव मैरिज कर शादी किया था लव मैरिज करने के बाद ही लड़की के परिजन लड़के के पीछे पड़ गए जान बचाकर मंजेश उत्तर प्रदेश छोड़कर दूसरे प्रदेश में भाग गया कुछ दिनों पहले मनजीत अपने बुआ के घर वापस लौटा इस बात की जानकारी लड़की के पिता और भाइयों को हो गई और लड़की के भाई और पिता ने मंजेश को घेर लिया लाठी डंडे से मंजेश को बेरहमी से पीटा गया है मंजेश के पिता दुक्खा ने पुलिस अधीक्षक को शिकायती पत्र देकर बताया कि मंजेश को पीटने के बाद उसके ससुर और साले उसे वाहन में भरकर उठा ले गए हैं उसे आशंका है कि मंजेश की हत्या कर कहीं लाश फेंक दी गई है।

छह श्रद्धालुओं को ट्रक ने कुचला दो की मौत चार घायल

कार्तिक पूर्णिमा पर प्रयागराज संगम स्नान करने जा रहे थे कानपुर के श्रद्धालु

अखंड भारत संदेश

कोखराज कौशाम्बी। कानपुर से कार में सवार होकर प्रयागराज संगम गंगा स्नान करने जा रहे श्रद्धालुओं की कार को कोखराज थाना क्षेत्र के कशिया ककोड़ा के पास एक ट्रक ने कुचल दिया है हादसे में मारुति वैन सवार 2 लोगों की घटनास्थल पर मौत हो गई है जबकि 4 लोग गंभीर तरीके से घायल हैं घायलों को इलाज के लिए स्थानीय अस्पताल में भर्ती कराया गया है और मृतक 2 लोगों के शव को कब्जे में लेकर पुलिस ने पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है घटना शुक्रवार की भोर चार बजे की बताई जाती है।

घटनाक्रम के मुताबिक कानपुर शहर के यशोदा नगर गंगापुर निवासी गोविंद प्रसाद शुक्ला पुत्र कामता प्रसाद शुक्ला अपने रिश्तेदार परिजनों के साथ शुक्रवार की आधी रात को कार में सवार होकर कार्तिक पूर्णिमा स्नान करने प्रयागराज संगम के लिए निकले थे जैसे ही कार सवार कोखराज थाना क्षेत्र के कशिया ककोड़ा के पास पहुंचे कि सामने से आ रही ट्रक से कार की जोरदार टक्कर हो गयी हादसे में कार के परखच्चे उड़ गए हादसे में तेज आवाज सुनकर आसपास के लोगों की नींद खुल गई

हादसे के बाद घटनास्थल पर मौजूद पुलिस

लोग किसी अनहोनी की आशंका से जागे और घर से बाहर निकल कर सड़क की ओर भागे तो देखा कि कार सवाल तड़प रहे हैं मामले की सूचना स्थानीय लोगों ने थाना पुलिस को दिया है सूचना पाकर मौके पर थाना पुलिस पहुंची कार में घायल लोगों को पुलिस ने बाहर निकाला तो देखा कि हरी राम शुक्ला उम्र 66 वर्ष पुत्र रामभरोसे शुक्ला और छोटे लाल मिश्रा उम्र 50 वर्ष पुत्र राम कुमार मिश्रा निवासी यशोदा नगर गंगापुर कानपुर की मौत हो चुकी है इस हादसे में गोविंद प्रसाद शुक्ला पुत्र कामता प्रसाद शुक्ला कृष्ण कुमार उर्फ पुत्तन पुत्र गया प्रसाद गुड्डू पुत्र लक्ष्मीकांत शुक्ला और रामसुंदर गंभीर रूप से घायल हैं घायलों को पुलिस ने इलाज के लिए स्थानीय ट्रॉमा सेंटर में भर्ती कराया है जहां घायलों का इलाज चल रहा है पुलिस ने मृतक दोनों लोगों के शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है घटना की सूचना हादसे के शिकार लोगों के परिजनों को पुलिस ने दे दिया है हादसे की सूचना मिलते ही परिवार में कोहराम मच गया है और परिजन घटनास्थल पर पहुंच चुके हैं।

21मार्गों के कार्यों हेतु 21 करोड़ 21लाख 27हजार धनराशि की स्वीकृति

कौशाम्बी। उत्तरप्रदेश के उपमुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य के निदेर्शों के क्रम में राज्य सड़क निधि योजना के अन्तर्गत जनपद कौशाम्बी के 21 मार्गों के कार्यों हेतु 21 करोड़ 21 लाख 27 हजार की धनराशि की वित्तीय एवं प्रशासकीय स्वीकृति सरकार ने कर दी है और स्वीकृत किए गए धनराशि से 02 करोड़ 12 लाख 5 हजार की रकम का आवंटन उ0प्र0 शासन द्वारा कौशांबी जिले को प्रदान किया गया है। इस सम्बन्ध में आवश्यक शासनादेश उ0प्र0 शासन लोक निर्माण विभाग द्वारा जारी कर दिया गया है जारी शासनादेश में सम्बन्धित अधिकारियों को निर्देशित किया गया है कि आवंटित धनराशि का उपयोग प्रत्येक दशा में निर्धारित समय सीमा के अन्दर कर लिया जाय तथा उपयोगिता प्रमाण-पत्र बजट मैनुअल के प्राविधानों के अनुसार अनिवार्य रूप से उ0प्र0 शासन को प्रेषित किया जाय तथा राज्य सड़क निधि नियमावली में किये गये प्राविधानों का पालन करते हुये कार्य सम्पादित कराये जायं। उपमुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य ने निर्देश दिये हैं कि इन कार्यों में वित्तीय नियमों का अक्षरशः अनुपालन सुनिश्चित किया जाय तथा जारी शासनादेशों में उल्लिखित दिशा-निदेर्शों का अनुपालन हर हाल में सुनिश्चित किया जाय।

न्यूज झरोखा

धूमधाम से मनाई गई रानी लक्ष्मीबाई की जयंती

कौशांबी। भरवारी कस्बे में वीरांगना रानी लक्ष्मीबाई जयंती स्त्री दिवस रूप में मनाया गया है भरवारी नगर में वीरांगना रानी लक्ष्मीबाई की जयंती के अवसर पर उनके चित्रों पर माल्यार्पण कर उनकी वीरता पर वक्ताओं ने चर्चा की है इस मौके पर उपस्थित वक्ताओं ने कहा कि रानी लक्ष्मीबाई का नाम मनु भी था उनकी वीरता और बलिदान की चर्चा की वक्ताओं ने कहा कि वीरांगना रानी लक्ष्मीबाई पूरी दुनिया में शौर्य और पराक्रम की मिसाल बनी महारानी लक्ष्मीबाई ने बचपन में ही पेशवा बाजीराव के दत्तक बेटे से पिस्तौल चलाना सीख लिया था। उन्होंने कम उम्र में ही घुड़सवारी, तलवारबाजी में हैरान करनी वाली निपुणता हासिल कर ली थी। रानी लक्ष्मीबाई ने बचपन में बाजीराव पेशवा के दत्तक बेटे के साथ युद्धकला सीखी रानी लक्ष्मीबाई की जयंती मनाने के अवसर पर कृष्ण कपूर ,अंशू केशरवानी ,अभय केशरवानी, विशाल दीक्षित, अमन केशरवानी,रवि पांडेय ,जगदीश शिवहरे आदि लोग मौजूद रहे।

अब 29 नवंबर को होगी रानी लक्ष्मीबाई प्रतिभा खोज परीक्षा

कौशाम्बी। विधायक चायल संजय कुमार गुप्ता ने एक वीडियो जारी करते हुए बताया कि रिद्धि सिद्धि सेवा ट्रस्ट द्वारा मेरी बेटी मेरा स्वाभिमान कार्यक्रम के माध्यम से 21 नवंबर को होने वाली रानी लक्ष्मीबाई प्रतिभा खोज परीक्षा अब 29 नवंबर को समय 11बजे निर्धारित समय व विद्यालयों में ही किया परीक्षा संपन्न कराया जाएगा विधायक ने अवगत कराया कि बड़ी संख्या में बेटियों के फोन आ रहे थे जिनको प्रतिभा खोज परीक्षा का फॉर्म उपलब्ध नहीं हो पाया विधायक संजय कुमार गुप्ता ने अपनी टीम के साथ बैठक कर निर्णय लिया कि प्रत्येक निर्धारित केंद्रों पर फार्म उपलब्ध कराया जाए और 29 नवंबर को निर्धारित समय व 6 केंद्रों पर प्रतिभा खोज परीक्षा कराई जाएगी यह जानकारी विधायक चायल मीडिया प्रभारी सूरज यादव ने दिया।

25 को भाजपा किसान मोर्चा की ट्रैक्टर रैली

कौशाम्बी। मंझनपुर मुख्यालय स्थित भाजपा कार्यालय में बृहस्पतिवार को किसान मोर्चा की बैठक हुई 25 नवंबर को मुख्यालय में निकाली जाने वाली ट्रैक्टर रैली को लेकर बैठक में रणनीति तैयार की गयी। भाजपा किसान मोर्चा की ट्रैक्टर रैली डायट मैदान मंझनपुर से निकलकर ओसा चौराहा होते हुए समदा होकर पुनः डायट मैदान में समाप्त होगी।

किसान बिल वापस होने पर किसानों की हुई जीत : बेद पांडे

कौशाम्बी। कांग्रेस पार्टी के नेता वेद प्रकाश पांडेय ने कहा कि भाजपा की केंद्र सरकार को सच स्वीकार करना पड़ा कि यह तीन काले कानून कृषि विरोधी हैं। पूजीपतियों की नजर अब किसानों की जमीनों पर है जिससे वह आम लोगों के पेट और भूख अपनी गिरफ्त में लेकर उसे व्यापार बना सकें। उन्होंने कहा कि किसानों के अहित में भाजपा सरकार द्वारा बनाया गया तीन कृषि कानून भाजपा सरकार द्वारा वापस लेना किसानों के हित में रहा उन्होंने कहा कि आखिर किसानों का आंदोलन उनके हितों को सुरक्षित करने में कामयाब रहा केंद्र की भाजपा सरकार द्वारा किसान बिल वापस ले जाने की घोषणा किए जाने के बाद कांग्रेसी नेता वेद पांडेय ने कहा कि सरकार को अंत में सत्य स्वीकार करना पड़ा है और किसानों की जीत हुई है।

एसपी ने किया पुलिस लाइन का निरीक्षण

कौशाम्बी। जिले के पुलिस लाइन में वार्षिक निरीक्षण के अंतर्गत पुलिस अधीक्षक राधेश्याम विश्वकर्मा द्वारा परेड़ की सलामी ली गयी व परेड का निरीक्षण किया गया परिवहन शाखा का निरीक्षण कर पुलिस स्टोर आवासीय परिसर का भी निरीक्षण कर साफ सफाई का संबंधित को आवश्यक दिशा निर्देश दिए गए।

सफेदपोश नेता बने निर्वाचन अधिकारी जिंदा को मृतक दिखाकर मतदाता सूची से नाम काटने का खेल शुरू

अखंड भारत संदेश

कल्यानपुर कौशाम्बी। विधानसभा लोकसभा चुनाव हो या पंचायत चुनाव हो चुनाव नजदीक आते ही वोट के ठेकेदार कथित सफेदपोश नेता मतदाता सूची में हेराफेरी कर अपने समर्थकों और अपनी जीत सुनिश्चित करने का भरसक प्रयत्न करते हैं बीते विधानसभा और पंचायत चुनाव में इस तरह के खेल सफेदपोश नेता कर चुके हैं और जैसे ही विधानसभा चुनाव उन्हें नजदीक दिखाई पड़ने लगा है।

अपने समर्थकों के अलावा विरोधियों को मृतक दिखाकर फर्जी तरीके से उनके नाम काटने का खेल इन सफेदपोश नेताओं ने शुरू कर दिया है जीवित लोगों के बिना उनके जानकारी के नाम काटने का फार्म भरकर उनके परिजनों के फर्जी हस्ताक्षर किए जा रहे हैं जिससे मतदाता सूची प्रभावित होगी और तमाम लोग मतदान से वंचित होंगे मतदाता सूची में हेराफेरी कर मतदान से प्रभावित करने वाले इन सफेदपोश नेताओं को चिन्हित कर इन्हें जेल की कालकोठरी में डालना होगा कभी निष्पक्ष तरीके से मतदाता सूची तैयार

बीते पंचायत चुनाव में भी कथित सफेदपोश नेताओं ने जीवित लोगों के नामों को वोटर लिस्ट से फर्जी तरीके से कटवा कर मतदान से किया था वंचित फर्जी तरीके से मतदाता सूची में नाम बढ़ाए घटाए जाने के चलते नहीं बढ़ रहा है मतदान का प्रतिशत

हो सकती है लेकिन क्या योगी राज में भी सपा बसपा सरकार की तरह फर्जी मतदाता सूची तैयार करने में सफेदपोश नेता सफल होते रहेंगे यह व्यवस्था पर बड़ा सवाल है। तहसील सिराथू के ग्राम पंचायत अहिरारा में एक पार्टी के सफेदपोश नेता ने वोटर लिस्ट में नाम बढ़ाने का कैम्प लगाया जिसमे नाम बढ़ाने की जगह कैम्प में जीवित लोगो को मृतक दिखा कर नाम काटने का खेल शुरू हुआ। जिससे ग्रामीणों में भारी आक्रोश है लगभग आधा सैकड़ा लोगो के नाम के फर्जी फार्म भर कर उनके फर्जी झूठा हस्ताक्षर कर परिवार के लोगो का लिख कर नाम बढ़ाने की जगह नाम काटने का खेल किया गया है। मतदाता सूची में फर्जी तरीके से लोगों के नाम कटवाने में शामिल इन सफेदपोश नेताओं ने रामदीन ,मन्नालाल,सुरजकली विपतियादेवी कंचन, रामदास, रामकिशोर, रामजसी, आदि पचासों लोगों का नाम काटने हेतु फार्म निर्वाचन कार्यालय के जिम्मेदारों के पास जमा दिया है जबकि जिसके नाम काटने के फार्म भरे गए हैं वह गांव में जीवित जिंदा है।

लंबे समय से निवास कर रहे लोगों के नाम काट कर मतदाता सूची प्रभावित की जा रही है बीते वर्षों में भी इस तरह के खेल हो चुके हैं जिससे मतदान प्रभावित होता है। जबकि गांव में तैनात बीएलओ घर घर जा कर कड़ी मेहनत करके खुद नाम बढ़ाने व घटाने का कार्य कर रहे है।जो लोग गांव के बारे में नही जानते या फिर मतदाता सूची हेराफेरी करने का वह राजनीतिक दलों से ठेका ले चुके हैं। वह ऐसा कार्य बूथ लेवल अधिकारी को गलत फार्म भर कर क्यो दे रहे है।बी एल ओ खुद रात दिन एक करके कार्य कर रहे है मतदाता सूची में हेराफेरी करने वाले यह सफेदपोश नेता एक और सत्यापन हेतु बीएलओ और अधिकारियों के सिर बोझ डाल रहे है राजनैतिक पार्टी के यह कथित सफेदपोश नेता अपने स्वार्थ में ग्रामीणों को मताधिकार से वंचित क्यो कर रहे है इन सफेदपोश नेताओं को अपने पक्ष में जिनसे मतदान करने की उम्मीद नहीं है उनके गांव में रहते हुए उनके नाम निरस्त कराए जा रहे हैं।ग्रामीणों द्वारा जिला निर्वाचन अधिकारी का ध्यान आकृष्ट कराते हुए कहा कि ग्राम पंचायतों में जीवित व्यक्तियों को मृतक दिखा कर नाम काटने का खेल करने वालों को चिन्हित किया जाए उन्हें जेल की कोठरी में डाला जाए मतदाता सूची सही तरीके से बनाई जाए।

पीएम आवास के नाम पर 9956418826 नम्बर से अवैध वसूली कर रहा है दलाल

कौशाम्बी। प्रधानमंत्री आवास के नाम पर एक दलाल लाभार्थियों से अवैध वसूली कर रहा है इस दलाल का मोबाइल नंबर 99 56 41 8826 बताया जाता है प्रधानमंत्री आवास के लाभार्थियों से वसूली करने वाला यह दलाल प्रधानमंत्री आवास के लाभार्थियों को फोन कर उन्हें झांसा देकर लाखो रुपए की रकम लूट रहा है प्रधानमंत्री आवास योजना से जुड़े अधिकारियों और कर्मचारियों की इस मामले में भूमिका सवालों के घेरे में है बताते चलें कि यह दलाल अब तक हजारों लोगों से वसूली कर चुका है नगरीय विकास अभिकरण डूडा और परियोजना निदेशक कार्यालय से अपने को नजदीकी बता कर यह दलाल फरियादियों को उनका प्रधानमंत्री आवास स्वीकृत कराने और रकम भिजवाने के नाम पर पूरे दिन खुले आम घूस की रकम के नाम पर अवैध वसूली में मशगूल है लंबे समय से सक्रिय इस दलाल के खेल पर आलाधिकारी अनजान हैं या फिर आला अधिकारियों के संरक्षण में लाभार्थियों से वसूली करने वाला यह दलाल पल रहा है यह बड़ी जांच का विषय है और दलाल के कारनामे पर यदि जांच हुई तो दलाल पर बड़ी कार्यवाही हो सकती है।

लाखों की रकम के साथ युवक हुआ गिरफ्तार

अखंड भारत संदेश

कौशांबी। सराय अकिल थाना पुलिस ने एक युवक को लाखों की नगदी और बाइक के साथ शुक्रवार को गिरफ्तार किया है पकड़े गए युवक के पास एक लाख रुपए की रकम पुलिस ने बरामद की है युवक के पास रकम मिलने के बाद पुलिस की नियत खराब हो गई है और वह युवक पर लेनदेन का दबाव बनाने लगी है पकड़ा गया युवक प्रयागराज जनपद के लालापुर थाना अंतर्गत मझियारी गांव का निवासी बताया जाता है पकड़े गए युवक की रिश्तेदारी बेनी राम कटरा पुलिस चौकी के अंतर्गत एक गांव में है पुलिस का कहना है कि युवक जरायम के धंधे में लिप्त है और जरायम के सामानों की बिक्री कर उसकी रकम लेकर युवक वापस जा रहा था पुलिस का कहना है कि पकड़े गए युवक से पूछताछ की जा रही है और उसकी निशानदेही में जरायम के धंधे में लगे अन्य लोगों की जल्द गिरफ्तारी की जाएगी वहीं पकड़े गए युवक को छुड़ाने के लिए पुलिस पर लेन-देन का दबाव भी बनाया जा रहा है बताया जाता है कि सराय अकिल थाना क्षेत्र के बेनी राम कटरा चौकी इंचार्ज ने पकड़े गए युवक को छोड़ने के एवज में 40 हजार की डिमांड कर रहे हैं पुलिस द्वारा पकड़े गए युवक के रिश्तेदारों का कहना है कि वह रिश्तेदारी में आया था और उन्होंने उसे इलाज के लिए रुपया दिया है मामला कुछ भी हो लेकिन खबर लिखे जाने तक पुलिस ने हिरासत में लिए गए युवक पर मामले का मुकदमा दर्ज नहीं किया है जिससे पुलिस की मंशा पर भी सवाल उठ रहा है।

कांग्रेस की प्रतिज्ञाएं आम लोगों महिलाओं और किसानों के प्रति समर्पित : राघवेंद्र

सिराथू विधानसभा के ईचौली गांव में आयोजित हुई कांग्रेस की चौपाल यात्रा में शामिल हुए सैकड़ों कांग्रेसी

अखंड भारत संदेश

कौशांबी। कांग्रेस पार्टी ने महिलाओं और देशहित के खिलाफ काम नहीं किया है जिससे देश का प्रत्येक वर्ग व मजबूत हुआ है ऐसे कण कण जोड़कर इस देश का प्रत्येक संस्थान व समाज मजबूत बना है। आज जो सरकार सत्ता में है उसने किसानों महिलाओं और देश की सरकारी संपत्तियों को बेचकर देश हित के खिलाफ काम किया है। इसलिए आज देश के प्रत्येक नागरिक का कर्तव्य है कि वह इसके खिलाफ आवाज उठाएं। उक्त बातें कांग्रेस पार्टी के प्रदेश महासचिव राघवेंद्र सिंह ने इचौली गांव में आयोजित किसान चौपाल को संबोधित करते हुए कही। कार्यक्रम का आयोजन पार्टी नेता वेद प्रकाश पांडेय सत्यार्थी ने किया था। इस मौके पर बोलते हुए उन्होंने कहा कि कांग्रेस पार्टी ने वादा किया है कि वह किसानों का पूरा कर्जा माफ करेगी धान और गेहूं गन्ने के क्रय मूल्य को बढ़ाएगी। यही नहीं किसानों के बिजली को आधा किया

प्रतिज्ञा यात्रा में मौजूद कांग्रेसी

जाएगा और संविदा कर्मी ठेका कर्मचारियों को नियमित करने का काम किया जाएगा। यह झूठा वादा नहीं बस कांग्रेस की प्रतिज्ञा है। जिसे सरकार बनने पर तत्काल पूरा किया जाएगा। इस मौके पर बोलते हुए पार्टी नेता वेद सत्यार्थी ने कहा कि आज देश के प्रधानमंत्री को जनता की अदालत में आकर उनके तीन काले कानूनों को वापस लेने की बात कहने पर मजबूर होना पड़ा है। इसके पीछे आम लोगों की किसानों की एक साल से लगातार चल रहे आंदोलन हैं। ऐसे ही सरकार को जनविरोधी नीतियों के खिलाफ हम सभी आम नागरिकों को आवाज उठानी होगी देश की संपत्तियों को भी यह बेच न पाए। इस मौके पर प्रमुख रूप से प्रदेश सचिव वसीम अंसारी, पीसीसी सदस्य विनय दुबे, आशीष कुमार मिश्रा पप्पू, मिसबाउल ऐन, अनिल पांडे, जितेंद्र शर्मा, इफ्तेखार अहमद, अनुज पांडे, राजरानी, देवकली, सुमित्रा, प्रियंका, जीतदेवी, कमलाकांत शुक्ला सहित सैकड़ों की संख्या में कांग्रेसी मौजूद रहे।

प्रतिज्ञा यात्रा के माध्यम से गांव गांव कांग्रेस की नीतियों का प्रचार कर रहे कांग्रेस नेता

कोखराज कौशाम्बी। प्रियंका गांधी के नेतृत्व में कांग्रेस नेताओं द्वारा गांव-गांव प्रतिज्ञा यात्रा निकालकर कांग्रेस की नीतियों का प्रचार प्रसार किया जा रहा है इसी क्रम में सिराथू तहसील क्षेत्र के कशिया मलाक भायल काकरा बाद चाकवन चौराहा करेंटी रूपनारायण पुर सैलाबी सहित दर्जनों गांवों में कांग्रेस की प्रतिज्ञा यात्रा पूर्व विधायक राम सजीवन निर्मल के नेतृत्व में घूमी प्रतिज्ञा यात्रा के भ्रमण के दौरान कांग्रेस की नीतियों को प्रतिज्ञा यात्रा के माध्यम आम जनमानस के बीच में कांग्रेसी नेता बता रहे हैं प्रतिज्ञा यात्रा के दौरान कांग्रेसी नेताओं ने कहा कि भाजपा की सरकार में आम जनमानस परेशान है महंगाई अत्याचार अपराध से जनता जूझ रही है इस मौके पर कांग्रेसी नेताओं ने कहा कि देश का भला कांग्रेस की सरकार में ही हो सकता है वक्ताओं ने उत्तर प्रदेश विधानसभा चुनाव 2022 में कांग्रेस की सरकार बनाने के लिए लोगों को कांग्रेस की नीतियों के साथ जुड़ने के लिए प्रेरित किया प्रतिज्ञा यात्रा में रामबहादुर त्रिपाठी प्रदेश सचिव विष्णु सोनी जिला महासचिव मानवाधिकार प्रकोष्ठ,जिला सचिव छितानी दिवाकर पूर्व विधायक रामसजीवन निर्मल चन्द्रकेश त्रिपाठी दिनेश गौतम,गुड्डू,किस्मत अली सहित सैकड़ो लोग प्रतिज्ञा यात्रा में सम्मलित हुए।

रात में मुर्दों की मरघट की जमीन में कब्जा कर रहे दबंगों को मिला नेता का बल

अखंड भारत संदेश

सिराथू तहसील क्षेत्र में सफेद पोश नेता के बल पर मरघट की जमीन में कब्जा चल रहा हैं, खेल खेल रहे राजस्व निरीक्षक व नेता

कौशाम्बी। आज रात सिराथू तहसील क्षेत्र के जमीनों में कब्जा करने के बाद अब दबंगों के संरक्षण में मरघट की भूमि पर भी बेखौफ तरीके से रात में जाल बांध कर कब्जा कर रहे हैं तहसील प्रशासन से शिकायत के बाद राजस्व निरीक्षक ने नही रुकवाया काम अब सवाल उठता है कि रात में किसके आदेश से मरघट की जमीन पर कब्जा हो रहा हैं मुर्दे कहां दफन किए जाएंगे कौन हैं इसका जिम्मेदार। सिराथू तहसील क्षेत्र के सौरई खुर्द ग्राम की गाटा संख्या 75 मरघट पर गांव के ही दबंगो ने एक सफेद पोश नेता के बल पर कब्जा कर रात में मकान निर्माण शुरू करा दिया हैं जबकि ग्रामीणों ने इसकी शिकायत एसडीएम सिराथू से की जिस पर हल्का लेखपाल ने मौके पर जा कर निर्माण कर रहे लाल सिंह पुत्र हरिप्रसाद को निर्माण कार्य बंद करने को कहा लेकिन दबंगो ने लेखपाल की एक नही सुनी और आज रात में निर्माण कर रहे हैं आखिर सरकारी जमीन पर कब्जे के मामले में कब तक राजस्व निरीक्षक लुकाछिपी का खेल खेलते रहेंगे ग्राम सभा की मरघट की जमीन में रात को कब्जे से ग्रामीणों में आक्रोश बढ़ता जा रहा हैं। ग्रामीणों का कहना है कि एक नेता हैं जो रात में कब्जा करने के लिए प्रेरित किया जिससे दबंगों ने कब्जे करना सुरु कर दिया हैं।जिससे पूरे ग्रामीणों में दबंगों के खिलाफ कार्यवाही कर मरघट की जमीन को तत्काल रुकवाने व दबंगों के खिलाफ कार्यवाही कर रात में कब्जा कर रहे दबंगो को तत्काल रात में निर्माण से रोका जाए

चुनाव के हार के डर से सरकार ने लिया किसान बिल वापस

कौशांबी। किसानों पर लगाए गए तीन कृषि कानून के बिल को वापस लेने की मांग पर पूरे देश में किसान धरना प्रदर्शन आंदोलन कर रहे थे इस बीच तमाम किसानों की मौत भी हो गई है लेकिन केंद्र की मोदी सरकार किसान बिल को वापस न लेने की जिद पर अड़ी थी लेकिन अचानक केंद्र की मोदी सरकार ने किसान बिल वापस लेने की घोषणा कर दी है इस पर अपना दल कमेरा वादी के प्रवक्ता विनोद कसेरा ने कहा कि अन्य दाताओं के सत्याग्रह के आगे मोदी सरकार को झुकना पड़ा है तीनों काले कृषि बिल को केंद्र की मोदी सरकार को वापस लेना पड़ा है यह किसानों के संघर्ष का विजय है। अपना दल प्रवक्ता विनोद कसेरा ने कहा कि कृषि बिल लागू कर किसानों को पूंजीपतियों के हाथों में बेचने की तैयारी भाजपा सरकार ने की है जिससे किसानों ने लगातार 12 महीनों तक सत्याग्रह आंदोलन कर खेती को उद्योगपतियों के हाथों में जाने से बचाया है उन्होंने कहा कि कांटेक्ट खेती के द्वारा किसानों की जमीन छीन ली जाती है इससे कृषि उत्पादों में जबरदस्त महंगाई उछाल आता जिससे किसानों का बचना मुश्किल हो जाता यह किसानों की बड़ी जीत बताई है।

पुलिसकर्मियों के बीच खिंची तलवारों का खामियाजा भुगत रहे है तीन सिपाही

अखंड भारत संदेश

कौशाम्बी। पिपरी कोतवाली में पुलिसकर्मियों के बीच तलवारें खिंच गई हैं पुलिस कर्मियों के बीच गुट बंदी का खेल चल रहा है जिसके शिकार पिपरी थाने के 3 सिपाही हुए हैं आम जनता पीड़ित फरियादी पुलिसकर्मियों की गुटबंदी का रोज शिकार हो रही है जिससे योगीराज में आम जनमानस को न्याय नहीं मिल रहा है पिपरी थाने में सिपाहियों के बीच खिंची तलवार के खामियाजा के चलते फॉलोअर को मोहरा बनाकर पुलिस कप्तान के सामने पेश कराया गया थाने के अंदर सियासत करने वाले पुलिस जनों की चर्चा खुलेआम हो रही है पुलिस कर्मियों के बीच सियासत के खेल में तीन सिपाहियों को निलंबित कर दिया गया है आखिर कब तक थाने में यह द्वंद युद्ध चलता रहेगा इसी तरह द्वंद युद्ध चलता रहा तो थाने से आम जनता को न्याय मिलना कठिन होगा। पिपरी थाना राजनीति का अखाड़ा बन चुका है काली कमाई में हिस्सा बंटवारे को लेकर सिपाहियों के दो गुट एक दूसरे को नीचा दिखाने पर आमादा हैं। इसी का नतीजा रहा कि आपसी खींचतान के चलते सिपाहियों की सियासत के चलते फॉलोअर को मोहरा बनाया गया और इसी सियासत के चलते बेवजह तीन पुलिस कर्मियों को निलंबित होना पड़ा। जिस फालोअर ने दीवान पर दरवाजा खटखटाने और अश्लील हरकत का आरोप लगाया अब वही फालोअर लिखित रूप से यह बयान दे रहा है कि उसने कोई शिकायत नहीं की बल्कि उससे करवाया गया है। कुछ भी हो तीन पुलिस कर्मी निलंबित हो गए अब मामले की जांच सीओ चायल को करनी है। यदि मामला झूठा है तो पुलिस कर्मियों पर कार्यवाही कराने वाले कोतवाली के कौन-कौन से पुलिस के चेहरे हैं यह मामला सीओ चायल की जांच के लिए बड़ा विषय बन गया है। बता दें कि चार दिन पूर्व पिपरी कोतवाली में तैनात एक फालोअर ने पुलिस अधीक्षक को शिकायती पत्र देकर आरोप लगाया कि थाने में तैनात दीवान व दो अन्य पुलिस कर्मी रात्रि में उसके घर का दरवाजा खटखटाते हैं और उसकी पत्नी पर बुरी नजर रखते हैं। मीडिया में मामला आया तो एसपी ने फौरन तीनों पुलिस कर्मियों को निलंबित कर दिया। निलंबन की खबर मिलते ही पुलिस कर्मी में हडकंप मच गया। बुधवार को मामले ने तब नया मोड़ ले लिया जब शिकायत करने वाले फालोअर अपनी बातों से पलटी मार गया।

सम्पादकीय

हंगामा है क्यों बरपा

जाने-माने कमीडियन और ऐक्टर वीर दास ने वॉशिंगटन के केनेडी सेंटर में हुए अपने कार्यक्रम की एक विडियो क्लिप सोमवार को अपलोड करके एक नए विवाद को जन्म दे दिया। विडियो हालांकि देखते-देखते वायरल हो गया, लेकिन आई कम फ्रॉम टू इंडियाज... के जरिए इसमें कही गई बातें पीछे छूट गईं। बहस इस पर शुरू हो गई कि उन्हें विदेशी धरती पर ऐसी बातें कहनी चाहिए या नहीं। दिल्ली में एक बीजेपी नेता ने फटाफट पुलिस में शिकायत भी दर्ज करा दी। वीर दास के खिलाफ कार्रवाई की मांग करने वालों में बॉलिवुड ऐक्ट्रेस कंगना रनौत भी शामिल हैं। उन्होंने इन्स्टाग्राम पर एक पोस्ट में वीर दास को अपराधी और उनके कृत्य को सॉफ्ट टेररिज्म करार देते हुए उनके खिलाफ कड़ी कार्रवाई करने की मांग की। दिलचस्प बात है कि खुद कंगना अपने ताजा बयानों के कारण घिरी हुई हैं। उनका पद्मश्री सम्मान वापस लेने और उन्हें तत्काल गिरफ्तार करने की मांग कई पार्टियों ने की है। महाराष्ट्र कांग्रेस ने कहा है कि वह उनके खिलाफ पुलिस में शिकायत दर्ज कराएगी। हालांकि इसमें संदेह नहीं कि कंगना ने जिस तरह से 1947 में देश को मिली आजादी को भीख करार देते हुए हजारों स्वतंत्रता सेनानियों के बलिदानों का अपमान किया, उसका किसी भी रूप में समर्थन नहीं किया जा सकता।

यह भी सच है कि एक बार ऐसा कहकर वह चुप नहीं हुईं, पिछले बयान को सही साबित करने की कोशिश में ऐसी बातें दोहराईं , जिन्हें कोई भी समझदार व्यक्ति बेतुका ही मानेगा। लेकिन बेतुकी बातें करना अपराध नहीं है। न ही सजा देकर किसी को समझदार बनाया जा सकता है। ठीक ऐसे ही वीर दास की बातें किसी को अच्छी तो किसी को बुरी लग सकती हैं। कुछ लोग उन बातों से सहमत होते हुए भी यह राय रख सकते हैं कि वे विदेशी धरती पर नहीं कही जानी चाहिए थीं। मगर ये अलग-अलग राय वीर दास के कार्य को अपराध नहीं बना देतीं। आजकल देश में यह नया ट्रेंड ही चल गया है कि कोई भी किसी भी बात पर उठकर अपनी भावनाएं आहत होने की बात करने लगता है और इस क्रम में पुलिस और प्रशासन को शामिल कर लेता है। सरकारों और राजनीतिक दलों का रवैया भी इस ट्रेंड को किसी भी रूप में हतोत्साहित करने वाला नहीं लगता। इससे न केवल सरकारी तंत्र की सीमित ऊर्जा निरर्थक कार्यों में जाया होती है और उसकी कई जरूरी जिम्मेदारियां अनदेखी रह जाती हैं बल्कि विचार अभिव्यक्ति की संवैधानिक स्वतंत्रता पर बेवजह बंदिशें लगती हैं और समाज की रचनात्मकता प्रभावित होती है। जहां तक कानून-व्यवस्था से जुड़े पहलू का सवाल है तो यह बात अदालतों के फैसलों से भी बार-बार रेखांकित होती रही है कि किसी के भी, कैसे भी बयान मात्र को देशद्रोह नहीं माना जा सकता। सभ्य और लोकतांत्रिक आचरण का तकाजा है कि जब तक स्पष्ट रूप से किसी कानून का उल्लंघन न हो रहा हो, तब तक ऐसे मामलों में सहमति या असहमति जताना काफी माना जाए।

गांव शहर को बनाए खुशहाल

राजू ओझा

सामाजिक चेतना अभियान भोजपुर आरा के संयोजक राजू ओझा ने कहा कि मैं बिहार में बदलाव की निति किसी भी समाज में नहीं देख पा रहा हूं। ये आगे आने वाली पीढ़ी के लिए बहुत खतरनाक साबित हो सकता है,आज मैं पुरे शाहाबाद के समस्त आम आवाम से पुछना चाहता हूं कि क्या शाहाबाद में कल कारखाने, अच्छा स्कूल, अच्छा अस्पताल अच्छा ब्लौक अनुमंडल अच्छा थाना फाड़ी या पुलिस प्रशासन के लिए अच्छी गाड़ी नहीं होना चाहिए केवल रोड़ पुल पुलिया नल-जल योजना बिजली हि विकास हैं । हम लोगों मिल जुल कर इससे आगे सोचते नहीं है। क्यों क्योंकि हम तुरंत ये सोच लेते हैं कि स्वाथ संबंधित बाहर, शिक्षा संबंधित बाहर, रोजगार संबंधित बाहर निकल दूसरे राज्यों में चलें जाने का निर्णय तुरंत ले लेते हैं आखिर क्यों इसलिए की हम ये सोचलेते है कि मेरा या मेरे परिवार का सब कुछ बाहर विकास हो जाएगा ठिक है। मैं मानता हूं कि आपके परिवार का सामाधान बाहर हो जाएगा मगर क्या आपके साथ रहने वाले या पास पड़ोस वाले ,मित्र रिस्तेदार, गांव जिला, जवार के लोग किस हालत में रहते होंगे आपने कभी सोचा है। क्या आपका पुरा परिवार का परवरिष दुसरे राज्यों में फ्रि में होता है,या आपके राज्य से ज्यादा खर्चा लग जाता है। हम अपना और अपने परिवार का परवरिष या विकास तो करलेते है मगर अपने ही घर में या पास पड़ोस का नहीं हो पाता है। ठिक है आप अपने आत्मा से पुछे कि क्या आपके पास पड़ोस में किसी का बच्चा को अच्छा शिक्षा, स्वास्थ्य, कपड़ा के कारण पिछड़ जाते हैं तो आपके में तनिक भी तकलीफ नहीं होती है। होगा भी कैसे दुनिया ही होते जा रही है हम दो हमारे दो ये सोच को बदलना होगा। ठिक है

सबसे महत्वपूर्ण बात एक पुछना चाहता हूं कि हम क्यों नहीं सोचते हैं कि हम सभी गांव के लोग पंचायत के लोग पुरे विधानसभा क्षेत्र के जनता मिल कर स्कूल, अस्पताल,ब्लौक, अनुमंडल को सुधारने का प्रयास क्यों नहीं करते जाति धर्म लिंग भेदभाव से ऊपर उठकर इस पर क्यों नहीं चर्चा होती है । हम जाति वाद में क्यों बंटते जातें हैं। आज बिहार में क्या नहीं है केवल हमें युज नहीं करने आता है।हम सभी के बिच जब चूनाव आता है तो विधायक सांसद पांच वर्ष चुनाव के दौरान युज कर लेते हैं और जित कर चले जाते हैं।

ठिक बा और हम आप ब्राम्हण, भुमिहार,राजपुत,लाला,यादव मुसलमान, पिछड़ा अति पिछड़ा,सोशित ,गरिब गुरबा और क्या क्या जातियों में चुर होकर पांच वर्ष अपने घर बैठ जाते हैं।और नेता मंत्री, विधायक अपने मौज मस्ती में जितने के बाद विकास याद किसको आता है।आज नेता मंत्री भी जितने के बाद सोचते हैं कि ये जाति का भोट हमें नहीं मिला है इनकी दुःख दर्द से मुझे क्या मतलब ऐसा मौका देता कौन है।हम और आप आज हम जानना चाहते हैं कि किसी भी स्कूल में जाती के नाम पर पढ़ई होती है। किसी भी अस्पताल में जाती देखकर इलाज होता है किसी भी रोजगार में जाती देखकर बिजनेस होता है। किसी भी दुकान से जाती देखकर जरुरत मंद समान खरिदा जाता है। कोई भी दुकानदार जाती देखकर तराजू लगाता है। ठिक बा नहीं ऐसा कहीं भी जाति देखकर काम नहीं होता है।फिर राजनीतिक पार्टियों में जाती वाद का बढ़ावा क्यों स्कूल, अस्पताल, ब्लौक, अनुमंडल, बिजली, रोड़,पुल पुलिया,नलि गलि ये सभी के लिए है और इस कार्य में सभी जातियों का सहयोग है तथा संबंधित विभाग में सभी जाति के लोग कार्य करते हैं। हम सभी लोग विकास चाहते नहीं इसलिए क्षेत्र में गांव में विकास कार्य सम्भव नहीं है जब तक हम जाति में बंटे रहेंगे तब तक नेता मंत्री विधायक भी मजे लेते रहेंगे। वो भी जानते हैं कि यहां दस से बिस लोगों को खिला पिला दे तो सब ठिक ठाक हों जाएगा मगर हम सभी जाति धर्म के लिए घातक है। ठिक बा मेरा मानना है कि जिस दिन से हम लोग जाती ,पाती ,लिंग भेदभाव से अलग उठकर विकास के मुद्दे पर विधायक या सांसद से बात करते रहेंगे, उस दिन से किसी भी क्षेत्र में विकास की गंगा बहने लगेगी आज हम थोड़ी देर के लिए मानते हैं कि शहरी क्षेत्रों में किसी भी जाति को किसी दुसरे जाति का जरूरत नहीं पड़ता होगा वो भी जब तक एक दूसरे को कोई जानता नहीं हो तब तक,ठिक बा मगर गांव में हरेक जाती धर्म के लोग को हरेक जाती धर्म की जरूरत पड़ती है,शुभ हो या अशुभ यही किसी भी गांव का कल्चर और संस्कार है। इसको हम और आप खत्म करते जा रहे हैं केवल दो कौड़ी के नेताओं के वजह से ठिक है। चुनाव के बाद फिर हमलोग भी एक हो जाते हैं उसि तरह हम सभी को जाती धर्म में बांटने वाले नेता विधायक, सांसद भी एक हो जाते हैं चुनाव के बाद मगर विकास रुक जाता है। चुनाव खत्म होने के बाद हम लोग फिर वही भाग दौड़ में लग जाते हैं दूसरे राज्यों के तरफ पलायन करने को मजबुर हों जातें हैं ये कमी कोई विधायक या सांसद दुर नहीं करेगा हमें और आपको दूर करना होगा ।

ठिक है जिस दिन हम लोग मिलकर जुल कर हरेक विकास के मुद्दों पर चर्चा करने लगजाएंगे तो उसी दिन से हरेक जाती धर्म का विकास होना चालू हो जाएगा । आज कहीं भी जाती धर्म के नाम पर अस्पताल , स्कूल और ब्लौक,अनुमंडल या थाना फाड़ी या कोई भी सरकारी कार्यालय जाति धर्म लिंग भेद भाव के नाम पर नहीं और नहीं किसी के लिए कहीं रोक टोंक है। ठिक है।

इकॉनमी की राह में महंगाई बनी दीवार

मधुरेन्द्र सिन्हा

कोविड महामारी ने न केवल लाखों की जान ले ली बल्कि दुनिया में भुखमरी को भी बढ़ा दिया है। कई देशों में खेती पर भारी चोट पहुंची तो कई अन्य में मजदूरों की कमी हो गई। अमेरिका, इंग्लैंड और कनाडा जैसे देशों में खाद्यान्न ही नहीं, अन्य तरह के सामानों के भी ट्रांसपोर्टेशन में बाधा आई। कोविड के कारण दुनिया के कई देशों में सख्त लॉकडाउन लगा, जिससे मैन्युफैक्चरिंग इंडस्ट्री को धक्का पहुंचा। जितना उत्पादन चाहिए था, उतना हो नहीं पा रहा है जिससे उनकी कीमतें आसमान छू रही हैं। कच्चे तेल की कीमतें 50 डॉलर प्रति बैरल से बढ़कर 85 डॉलर तक जा पहुंचीं। इन सबसे सिर्फ हमें ही नहीं सारी दुनिया की इकॉनमी को झटका लगा है। हैरानी की बात है कि जिस देश पर महंगाई की सबसे ज्यादा मार पड़ी, वह है दुनिया का सबसे ताकतवर देश अमेरिका। वहां अक्टूबर महीने में इन्फ्लेशन की दर बढ़कर 6.2 हो गई, जो तीस सालों में सबसे ज्यादा है। इससे वहां की इकॉनमी को फिर से पटरी पर लाने की कवायदों को बड़ा धक्का लगा है। अमेरिका न केवल खाद्यान्न के मामले में बहुत समृद्ध है बल्कि कच्चा तेल भी वहां पर्याप्त मात्रा में होता है। बावजूद इसके, वहां एनर्जी महंगी हो गई और खाने-पीने के सामानों और दवाओं की कीमतें तेजी से बढ़ीं। इससे कई अन्य सेक्टर के सामानों की भी कीमतें चढ़ गईं।

सरकार ने वहां कोविड महामारी के दौरान खरबों डॉलर सोशल वेलफेयर स्कीम के तहत बांटे थे। इसका सबसे बुरा असर लेबर मार्केट पर पड़ा। मजदूरों ने काम करना बंद करके घरों में रहना बेहतर समझा। इससे लेबर की भारी कमी हो गई। कारखानों में काम धीमा हो गया। यहां तक कि ट्रक चलाने वाले ड्राइवर भी मिलने मुश्किल हो गए, जिससे सप्लाई चेन बाधित हुई और कीमतें अस्वाभाविक रूप से बढ़ गईं। आज पूरी दुनिया एक छोटे से गांव में तब्दील हो गई है, जिसमें सभी देश एक-दूसरे से जुड़े हैं। दूसरे देशों से आने वाला सामान अमेरिका देर से पहुंच रहा है और अमेरिका से जाने वाला समान भी गंतव्य तक समय पर नहीं पहुंच रहा। हालत यह है कि दुनिया का सबसे अमीर देश समझा जाने वाला अमेरिका इस समय अभूतपूर्व महंगाई का दंश झेल रहा है और कोई नहीं जानता कीमतें कब कम होंगी। अमेरिकी सरकार के सामने यह एक चुनौती है क्योंकि उसकी तमाम नीतियां इकॉनमी पर निर्भर करती हैं। सुस्त इकॉनमी उसे परेशान कर रही है। उभरते हुए सुपरपावर चीन में भी यही सीन है। आम तौर पर तो महंगाई बढ़ी ही है, खाने-पीने की चीजों के दाम विशेष रूप से बढ़ गए हैं। इसका कारण यह है कि वहां खाद्यान्न की भारी कमी है। चीन अपनी खपत का बड़ा हिस्सा आयात करता है। वहां का मुख्य भोजन चावल है, जिसका उसे इस समय बड़ी मात्रा में आयात करना पड़ रहा है। जनवरी से अगस्त तक उसने 32 लाख टन चावल का इंपोर्ट किया है, जो पिछले साल की तुलना में दोगुना है। चीन की सरकार इस तरह की खबरों पर पर्दा डालती है कि वहां अनाज की कमी हो गई है, लेकिन कुछ महीनों पहले जब वहां सरकार ने रेस्तरां में खाने वालों के लिए निर्देश दिया कि वे प्लेट में खाना न छोड़ें, तब यह बात खुली। वहां न केवल इंसानों के खाने-पीने की चीजों की शॉर्टेज हो गई है बल्कि सुअरों को खिलाने वाला चारा (जो मुख्य रूप से सोयाबीन है) भी बेहद महंगा हो गया। इससे मांस की कीमत बढ़ गई। एक्सपर्ट्स का कहना है कि वहां अगले साल भी महंगाई दर बढ़ने के आसार हैं। अभी ही वह बढ़ी हुई दरों पर अनाज इंपोर्ट कर रहा है। उधर, अफ्रीका और दक्षिण अमेरिका के देशों में महंगाई से ज्यादा परेशानी खाद्यान्नों की कमी के कारण है। फसलें खराब तो हो ही गईं, विदेशी मदद भी नहीं मिल पा रही क्योंकि अन्य देश भी कमोबेश उसी स्थिति से गुजर रहे हैं। कोविड महामारी के कारण हर जगह उत्पादन प्रभावित हुआ है। तमाम देशों में भी सप्लाई चेन प्रभावित हुई है। उत्पादों और खाद्यान्नों का अकाल सा हो गया है। खराब मौसम ने कई देशों में अनाज की भारी कमी पैदा कर दी है। आपसी लड़ाइयों, विद्रोही गतिविधियों ने आग में घी डालने का काम किया है। कुल आबादी का 26 प्रतिशत हिस्सा इस समय भूख की चपेट में है क्योंकि अनाज की भारी कमी है।

पड़ोसी देश पाकिस्तान की हालत भी नाजुक है। भारत से अनाज वगैरह न मंगाने का इमरान खान का फैसला देश को बहुत भारी पड़ा है। हर चीज महंगी हो गई है और आसानी से मिल भी नहीं रही है। रोजमर्रा की चीजें जैसे गेहूं, आटा, तेल-घी, मांस के दाम आसमान छू रहे हैं। वहां महंगाई दर 9 प्रतिशत है और कीमतें थमने का नाम नहीं ले रहीं। डॉलर पाकिस्तानी मुद्रा की तुलना में 176 रुपये का हो गया है और समझा जाता है कि यह 200 रुपये तक जाएगा। उसके महंगे होने से खाने-पीने का सामान भी महंगा हो गया है क्योंकि वहां गेहूं, चीनी सभी इंपोर्ट किए जाते हैं। ध्यान रहे, जब भारत ने कश्मीर से अनुच्छेद 370 के तहत मिला विशेष दर्जा वापस लिया था, तभी पाकिस्तान ने वहां से आने वाले रोजमर्रा के सामानों पर रोक लगा दी थी। इससे आटा, चीनी वगैरह की कीमतें काफी बढ़ गई थीं। यह भी एक विडंबना है कि जब बंटवारा हुआ था तो पंजाब के सबसे उपजाऊ 15 जिले पाकिस्तान में गए थे और वह देश कई वर्षों तक अनाज के मामले में हमसे आगे ही रहा। अब सरकार की गलत नीतियों के कारण वहां उनकी भारी कमी हो गई है। साफ है कि कोविड महामारी ने दुनिया भर में न केवल बड़े पैमाने पर जिंदगियां लील लीं बल्कि करोड़ों लोगों के मुंह से निवाला भी छीन लिया है।

सतगुरु नानक प्रगट्या, मिटी धुंध जग चानना होया

कुसुम चोपड़ा

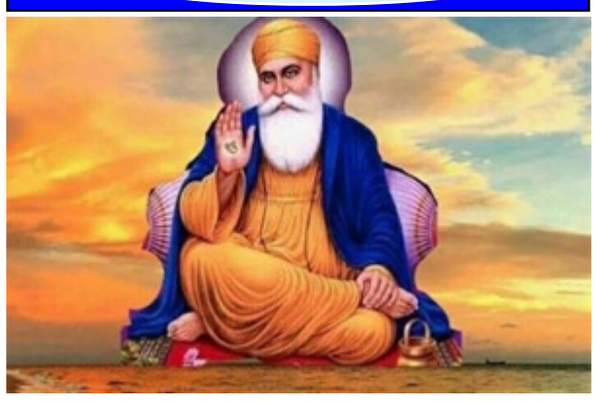

सिखों के पहले पातशाह श्री गुरु नानक देव जी महाराज, जिनका नाम लेने मात्र से मानो आत्मिक शांति का अहसास होने लगता है। श्री गुरु नानक देव जी सिखों के ही नहीं, अपितु समस्त मानव जाति के लिए आदर्श हैं। उनकी शिक्षाएं, उनके विचार और उनके कर्म आज हर मनुष्य को प्रकाश के मार्ग पर ले जाते हैं। गुरु साहब ने अपना पूरा जीवन लोक भलाई के लिए समर्पित कर दिया। श्री गुरु नानक देव जी का जन्म रावी नदी के किनारे स्थित तलवंडी नामक गाँव (जिसका नाम आगे चलकर ननकाना पड़ गया) में कार्तिक पूर्णिमा को एक खत्री परिवार में हुआ। कुछ विद्वान इनकी जन्मतिथि 15 अप्रैल, 1469 मानते हैं, परंतु इनका जन्म दिवस हर साल कार्तिक पूर्णिमा वाले दिन ही मनाया जाता है, जो अक्टूबर-नवंबर में दिवाली के करीब 15 दिनों बाद पड़ता है। उनके पिता का नाम मेहता कालू और माता का नाम तृप्ता देवी था, जबकि बहन बेबे नानकी थीं। गुरु साहिब बचपन से ही प्रखर बुद्धि के स्वामी थे। लड़कपन से वे सांसारिक मोहमाया के प्रति काफी उदासीन रहा करते थे।

पढ़ने-लिखने में बिल्कुल भी रुचि नहीं थी, लेकिन उनका सारा समय आध्यात्मिक चिंतन और सत्संग में व्यतीत होता था। उनके बाल्यकाल में कई ऐसी चमत्कारी घटनाएं हुई, जिसके बाद लोग उन्हे दिव्य शख्सियत मानने लगे। सोलह वर्ष की आयु में बाबा जी का विवाह पंजाब के गुरदासपुर जिले के तहत पड़ने वाले लाखौकी गांव की रहने वाली कन्या सुलक्खनी से हो गया। उनके दो पुत्र श्रीचंद और लखमीदास हुए। बेटों के जन्म के बाद बाबा नानक अपने परिवार के भरण-पोषण की जिम्मेदारी ससुर पर छोड़कर अपने चार साथियों मरदाना, लहना, बाला और रामदास के साथ तीर्थयात्रा पर निकल पडे.। गुरु साहिब चारों दिशाओं में घूम-घूम कर लोगों को उपदेश देने लगे। 1521 ईस्वी तक उन्होंने चार यात्रा चक्र पूरे किए, जिनमें भारत, अफगानिस्तान, फारस और अरब के मुख्य स्थान शामिल थे। इन यात्राओं को पंजाबी में उदासियाँ के नाम से जाना जाता है। गुरु नानक देव जी मूर्तिपूजा में विश्वास नहीं रखते थे। नानक जी के अनुसार ईश्वर कहीं बाहर नहीं, बल्कि हमारे अंदर ही है। उन्होंने हमेशा ही रुढ़ियों और कुरीतियों का विरोध किया। उनके विचारों से नाराज तत्कालीन शासक इब्राहिम लोदी ने उन्हें कैद तक कर लिया था। पानीपत की लड़ाई में इब्राहिम लोदी हार गया और राज्य बाबर के हाथों में आ गया, तो उन्हें कैद से मुक्ति मिली। श्री गुरुनानक देव जी का जीवन सदैव समाज के उत्थान में बीता। उस समय का समाज अंधविश्वासों और कर्मकांडों के मकड़जाल में फंसा हुआ था। ऐसे जटिल दौर में गुरुनानक देवजी ने प्रकट होकर समाज में आध्यात्मिक चेतना जगाने का जो काम किया, उसे कभी भी भुलाया नहीं जा सकता है। श्री गुरुनानक देव जी ने अपने उपदेशों में निरंकार पर जोर दिया। उन्होंने कहा धार्मिक ग्रंथ का ज्ञान ऐसी नैया है, जो अंधविश्वास के भवसागर से पार उतारती है। ये ज्ञान हमें निरंकार के देश की तरफ लेकर जाता है, जिसके समक्ष सिख आज भी नतमस्तक होते हैं। सिखमत का आगाज ही ₹एकर₹ से होता है। सिखों के धर्म ग्रंथ में ₹एकर₹ की ही व्याख्या है। एक को निरंकार, पारब्रह्म आदि नामों से जाना जाता है। निरंकार का स्वरूप श्रीगुरुग्रंथ साहिब की शुरूआत में बताया है जिसे आम भाषा में गुरु साहिब के उपदेशों का मूल मन्त्र भी कहते हैं। यह ग्रंथ पंजाबी भाषा और गुरुमुखी लिपि में है। इसमें मुख्यतः कबीर, रैदास और मलूकदास जैसे भक्त कवियों की वाणियाँ सम्मिलित हैं।

बाबा नानक बहुत ही पहुंचे हुए सूफी कवि थे। उनके भावुक और कोमल हृदय ने प्रकृति से प्यार दर्शाते हुए जो अभिव्यक्ति की, वो बेहद अनूठी और निराली है। उनकी भाषा ₹बहते पानी₹ की तरह थी जिसमें फारसी, मुल्तानी, पंजाबी, सिंधी, खड़ी बोली, अरबी के शब्द समा गए थे। श्री गुरुग्रन्थ साहिब में सम्मिलित 974 शब्द (19 रागों में), गुरबाणी में शामिल हैं। 15वीं शताब्दी में सिख धर्म की स्थापना पंजाब प्रांत में गुरुनानक देवजी ने ही की थी। सिख धर्म भारतीय संत परंपरा से निकला एक पंथ है, जिसमें सनातन धर्म का व्यापक प्रभाव देखने को मिलता है। भारत में सिख पंथ का अपना एक पवित्र एवं महत्वपूर्ण स्थान है। गुरुनानक देव जी ने उस समय के भारतीय समाज में व्याप्त कुप्रथाओं, अंधविश्वासों और पाखण्डों को दूर करते हुए प्रेम, सेवा, परिश्रम, परोपकार और भाई-चारे की मजबूत नींव पर सिख धर्म की स्थापना की। उस समय पंजाब में हिंदू और इस्लाम धर्म का बोलबाला था। गुरुनानक देव

जी ने लोगों को सिख धर्म के बारे में जानकारी देनी शुरू की, जो इस्लाम और हिंदू धर्म से काफी अलग था। एक उदारवादी दृष्टिकोण से गुरुनानक देव जी ने सभी धर्मों की अच्छाइयों को इस धर्म में समाहित किया। उनका मुख्य उपदेश था- परमात्मा एक है, उसी ने हम सबको बनाया है। हिन्दू-मुसलमान सभी एक ही परमात्मा की संतान हैं। जीवन के अंतिम दिनों में गुरु साहिब के लोकहित में किए गए कामों की प्रसिद्धि हवा में घुलती फूलों की महक की तरह हर तरफ फैल चुकी थी। अपने परिवार के साथ मिलकर वे मानवता की सेवा में पूरा समय व्यतीत करने लगे।

उन्होंने करतारपुर नाम से एक नगर बसाया, जो अब पाकिस्तान के नारोवाल जिले में स्थित है। अपनी चार उदासियों के बाद गुरुनानक देव जी 1522 में करतारपुर साहिब में बस गए। उनके माता-पिता का देहांत भी इसी जगह पर हुआ था। करतारपुर साहिब में ही गुरुनानक साहिब ने सिख धर्म की स्थापना की थी। उन्होंने रावी नदी के किनारे सिखों के लिए एक नगर बसाया और यहां खेती कर नाम जपो, किरत करो और वंड छको का उपदेश दिया। करतारपुर साहिब में उन्होंने अपने जीवन के आखिरी 17 साल बिताए। यहीं पर 22 सितंबर 1539 ईस्वी को उन्होंने समाधि ले ली। ज्योति-ज्योत समाने से पहले गुरु साहिब ने शिष्य भाई लहना को अपना उत्तराधिकारी घोषित किया जो बाद में गुरु अंगद देव जी के नाम से जाने गए। गुरु नानकदेव जी के बाद 9 गुरु और आए, जिन्होंने सिख धर्म को आगे बढ़ाया, लेकिन उन सबका भी एक ही उद्देश्य यानि भारतीय धर्म और संस्कृति की रक्षा करना ही था। पांचवें गुरु श्री गुरु अर्जन देव जी के समय तक सिख धर्म पूरी तरह से स्थापित हो चुका था। उन्होंने ही श्री गुरुग्रंथ साहिब का संकलन भी किया।

सलमान खुर्शीद कब तक उगलेंगे हिन्दुत्व पर जहर

आर.के. सिन्हा

सलमान खुर्शीद को वैसे तो खबरों में बने रहना आता है। पिछले काफी समय से वे खबरों की दुनिया से बाहर थे। उन्हें कोई पूछ नहीं रहा था। वे और उनकी पत्नी लुईस खुर्शीद चुनावों में तो बार-बार शिकस्त खाते ही रहते हैं। इसलिए उन्हें लगा कि क्यों न हिन्दुत्व की तुलना आतंकवादी संगठन आईएसआईएस व बोको हरम से कर दी जाए। इससे वे खबरों में जगह बना लेंगे। सलमान खुर्शीद अपनी नई किताब सनराइज ओवर अयोध्याः नेशनहुड इन अवर टाइम में यही तो प्लान करते हैं। इस किताब के विमोचन के बाद से वे मीडिया में छाए हुए हैं। उनके मन की मुराद पूरी हो गई। बेहतर तो यही होगा कि वे हिन्दू धर्म और हिन्दुओं को भी कोसा करें। उनके खिलाफ अब वे एक के बाद एक किताबें लिखें। उन्हें मीडिया हाथों-हाथ लेगा। जिस सलमान खुर्शीद ने अंग्रेजीदां दिल्ली पब्लिक स्कूल और सेंट स्टीफंस कॉलेज में शिक्षा हासिल की, उसे मदरसा नुमा अंदाज में अब मुसलमानों के हित सता रहे हैं। चलो कभी तो वे अपनों के हुए। वर्ना तो साउथ दिल्ली के जिस विशाल बंगले में वे रहते हैं वहां कोई दीन-हीन मुसलमान कभी घुस भी नहीं सकता। उनके सालाना बिरयानी और आम की दावत में उनके गैर-मुसलमान दोस्त और चाहने वाले ही ज्यादा होते हैं।

सलमान खुर्शीद और नसीरुद्दीन शाह जैसों से सवाल भी नहीं पूछे जाने चाहिए कि वे जो कह रहे हैं उसका आधार क्या है। भारत के पूर्व राष्ट्रपति जाकिर हुसैन के नाती सलमान खुर्शीद से एक खबरिया चैनल ने पूछा कि वे बताएं कि हिंदुत्व और आईएसआईएस की तुलना कहां तक वाजिब है। इसे सुनकर वे भड़क गए और इंटरव्यू बीच में ही छोड़ चले गए। अपनी किताब पर विवाद के बाद सलमान खुर्शीद लगातार कह रहे हैं कि वे चर्चा के लिए तैयार हैं लेकिन जब खबरिया चैनल ने उनसे सवाल किए तो वे भाग खड़े हुए। जब उनसे हिंदुत्व की आतंकवादी संगठनों से तुलना करने पर सवाल किया गया तो वे इंटरव्यू बीच में ही छोड़ गए। सबसे अच्छा तरीका तो यह होता कि उनसे कोई सवाल-जवाब नहीं करता। उन्हें चाहे बोलने की छूट दे दी जाए। वे बोलते-लिखते रहें। कम से कम देश को पता तो चले उनके और उन जैसों के चरित्र के बारे में। उन्हें पता है या नहीं, मैंने तो उनके नाना और बिहार के तत्कालीन राज्यपाल डॉक्टर जाकिर हुसैन को स्वयं अपनी आँखों से देवराहा बाबा के मचान के सामने बैठकर ह्लराम-रामह्व जपते देखा है। बात 1962 के फरवरी-मार्च की है। मैं अपने पिताजी के साथ देवराहा बाबा के मचान के सामने बैठा था तभी मोटर बोट की आवाज आई जो उन दिनों एक अजूबा चीज थी। जैसे ही राज्यपाल जाकिर हुसैन मोटर बोट से उतर कर मचान की ओर बढ़े, देवराहा बाबा ने मचान से ही कहा, ह्ललाट, बच्चा आ गया। वहीं बैठो और राम-राम जपो। मैं भक्तों की इस भीड़ को निपटाता हूँ।ह्व राज्यपाल महोदय गंगा की रेत पर बैठकर राम-राम जाप करने लगे। जब बाबा ने लगभग पूरी भीड़ को निपटा दिया तब उन्होंने राज्यपाल महोदय को बुलाया। कुछ फल दिये। आशीर्वाद दिया और कहा, ह्ल लाट बच्चा, रामजी तुम्हारी सेवा से प्रसन्न हैं। तुम अब दिल्ली जाने की तैयारी करो।ह्व इसके कुछ दिनों बाद यह खबर आ गई कि वे उपराष्ट्रपति बनने वाले हैं। दरअसल सलमान खुर्शीद से कहा गया कि 2014 से 2018 के बीच 19 देशों में आईएसआईएस ने 2000 से ज्यादा लोगों को मार दिया, उस आतंकी संगठन से आप हिंदुत्व की तुलना कर रहे हैं इस सवाल का जवाब देने की बजाय सलमान खुर्शीद ने हाथ जोड़ लिए और नमस्कार कह कर इंटरव्यू बीच में ही छोड़कर चलते बने। यह वही सलमान खुर्शीद हैं जिन्होंने 10 फरवरी 2012 को उत्तर प्रदेश के आजमगढ़ में कांग्रेस की एक रैली को संबोधित करते हुए सार्वजनिक रूप से यह दावा किया था कि ह्लमैंने जब बटला हाउस एनकाउंटर की तस्वीरें सोनिया गाँधी को दिखाईं तब उनकी आँखों से आंसू गिरने लग गये और उन्होंने मुझे प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह जी से बात करने की सलाह दी। जरा गौर करें कि सलमान खुर्शीद की किताब का विमोचन करने वालों में कांग्रेस नेता दिग्विजय सिंह भी मौजूद थे। दिग्विजय सिंह तो पहले ही कह चुके हैं कि जब केंद्र में उनकी पार्टी की सरकार आएगी तो वे संविधान के अनुच्छेद 370 को पुनः बहाल कर देंगे। उन्होंने कहा कि कश्मीर से अनुच्छेद 370 हटाने के लिए लोकतांत्रिक प्रक्रिया नहीं अपनाई गई। जिस अनुच्छेद 370 को हटाने के सवाल पर सारा देश एक है, उसे फिर से बहाल करने का दिग्विजय सिंह वादा कर रहे हैं। हालांकि उनका सपना कभी पूरा नहीं होगा। सलमान खुर्शीद की किताब के विमोचन के मौके पर पी. चिदंबरम भी मौजूद थे। सलमान खुर्शीद और दिग्गी राजा की तरह उनका भी कोई जनाधार नहीं है। कांग्रेस में इस तरह के कागजी और छपास वाले नेताओं की भरमार है। ये लुटियन दिल्ली के बड़े विशाल सरकारी बंगलों में रहकर राजनीति करते हैं। इनमें से कुछ मालदार कमाऊ वकील हैं। वकालत से थोड़ा बहुत जब वक्त मिल जाता है, तो सियासत का खेल भी करने लगते हैं। इन्हें लगता है कि खबरिया चैनलों की डिबेट में आने से ही वे पार्टी की महान सेवा कर रहे हैं। ये जनता के बीच उनके सवालों पर कभी आंदोलन नहीं करते, कभी जेल यात्राएं नहीं करते। सलमान खुर्शीद से ही पूछ लीजिए कि क्या कभी उन्होंने देश भर के वक्फ बोर्ड में फैली करप्शन के खिलाफ भी आवाज उठाई। उनसे पूछिए कि मुसलमानों में ट्रिपल तलाक के मसले पर उनकी क्या राय थी। उनसे जरा यह भी जान लें कि क्या उन्होंने कभी पसमांदा मुसलमानों के हक में कोई आंदोलन चलाया दरअसल देश का पूरा मुस्लिम समाज अशराफ, अजलाफ और अरजाल श्रेणियों में बंटा है। शेख, सैयद, मुगल और पठान अशराफ कहे जाते हैं। अशराफ का मतलब है, जो अफगान-अरब मूल या हिन्दुओं की अगड़ी जातियों से धर्मांतरित होकर मुसलमान बने हैं, वे ही अशराफ कहे जाते हैं। अजलाफ हिन्दुओं की पेशेवर जातियों से धर्मांतरित मुसलमानों का वर्ग है। एक तीसरा वर्ग उन मुसलमानों का है, जिनके साथ शेष मुसलमान भी संबंध नहीं रखते। यहां तक कि वे तो मस्जिद और सार्वजनिक कब्रिस्तान का उपयोग भी नहीं कर सकते हैं। दलित मुसलमानों के जनाजे का नमाज पढ़ने से भी ज्यादातर मौलवी इनकार कर देते हैं। इन्हें ही पसमांदा मुसलमान कहते हैं। यही मुसलमानों का 85% उपेक्षित वर्ग है। भारतीय मुस्लिम समाज भी जाति के कोढ़ से मुक्त नहीं है। हालांकि कहने को इस्लाम में जातिवाद नहीं है। क्या सलमान खुर्शीद या नसीरुद्दीन शाह ने मुसलमानों में जाति व्यवस्था के खिलाफ कोई सशक्त आंदोलन छेड़ा, नहीं न भारत में मुसलमानों का यह अभिजात समूह है जिसने सिर्फ मौज की है। ये सिर्फ हकों की बातें करते हैं। इन्हें कर्तव्य को याद दिलाते ही पसीना आने लगता है। सलमान खुर्शीद इसी खाए-पिए-अघाए रईस मुसलमानों की नुमाइंदगी करते हैं।

भारत ने कीवी टीम को 7 विकेट से हराकर टी-20 सीरीज पर किया कब्जा

रांची। केएल राहुल (65) और कप्तान रोहित शर्मा (55) की तूफानी पारियों की बदौलत भारत ने शुक्रवार को खेले गए दूसरे टी20 इंटरनेशनल मैच में न्यूजीलैंड को सात विकेट से हरा दिया। इस जीत के साथ भारत ने तीन मैचों की टी20 सीरीज पर कब्जा कर लिया है। सीरीज का तीसरा और अंतिम मैच 21 नवंबर को कोलकाता में खेला जाएगा। भारत ने पूर्व कप्तान महेंद्र सिंह धोनी के घर रांची के जेएससीए इंटरनेशनल स्टेडियम में टॉस जीतकर पहले गेंदबाजी करते हुए न्यूजीलैंड को छह विकेट पर 153 रन पर रोक दिया और फिर 17.3 ओवर में तीन विकेट खोकर लक्ष्य हासिल कर लिया। ऋषभ पंत ने लगातार दो छक्के जड़कर को टीम को शानदार जीत दिला दी। भारत ने इस मैदान पर अबतक तीन टी20 इंटरनेशनल मैच खेले हैं और तीनों में उसे जीत मिली है। राहुल ने 49 गेंदों पर छह चौके और दो छक्के लगाए। उन्होंने कप्तान रोहित के साथ पहले विकेट के लिए 117 रनों की शतकीय साझेदारी की। राहुल ने छक्के के साथ टी20 इंटरनेशनल में अपना 16वां अर्धशतक पूरा किया। उन्हें कप्तान टिम साउदी ने आउट किया। उनके आउट होने के बाद वेंकटेश अय्यर (नॉट आउट 12) बल्लेबाजी के लिए आए। हालांकि इसके कुछ देर बाद

ही कप्तान रोहित भी अपना 25वां अर्धशतक पूरा करने के बाद आउट हो गए। साउदी ने रोहित को आउट करके अपना दूसरा विकेट हासिल किया। साउदी ने फिर सूर्यकुमार यादव (1) को भी बोल्ड करके भारत को तीसरा झटका दिया। रोहित ने 36 गेंदों पर एक चौका और पांच छक्के लगाए। इसके बाद वेंकटेश और ऋषभ पंत (नॉट आउट 12) ने भारत को और कोई नुकसान नहीं होने दिया और सात विकेट से जीत दिला दी। इससे पहले, भारतीय गेंदबाजों के शानदार प्रदर्शन से न्यूजीलैंड की टीम शुक्रवार को यहां दूसरे टी20 इंटरनेशनल मैच में बल्लेबाजी का न्यौता मिलने के बाद छह विकेट पर 153 रन ही बना सकी। मैच शुरू होने से पहले ही मैदान पर ओस गिर चुकी थी जिससे गेंदबाजों को पहली ही गेंद से इससे निपटना पड़ा। इससे न्यूजीलैंड ने पावरप्ले में अच्छी शुरूआत करते हुए पावरप्ले में एक विकेट गंवाकर 64 रन बनाए जिससे लग रहा था कि टीम 180 से ज्यादा का स्कोर खड़ा कर लेगी लेकिन भारतीय गेंदबाजों ने उन पर अंकुश लगाया। भारत के लिए डेब्यू करने वाले हर्षल पटेल ने 25 रन देकर दो विकेट झटके।

टीम के दोनों स्पिन गेंदबाजों ने इन परिस्थितियों के बावजूद अच्छा प्रदर्शन किया। अनुभवी रविचंद्रन अश्विन ने 19 रन और अक्षर पटेल ने 26 रन देकर एक एक विकेट चटकाए। भुवनेश्वर कुमार, अक्षर पटेल और दीपक चाहर को एक एक विकेट मिला। न्यूजीलैंड ने सलामी बल्लेबाज मार्टिन गप्टिल (15 गेंद में 31 रन) और डेरिल मिशेल (31 रन) की बदौलत अच्छी शुरूआत की। इन दोनों ने पहले विकेट के लिये 26 गेंद में 48 रन जोड़े। गप्टिल इस दौरान 10 रन पूरे करते ही विराट कोहली (95 मैचों में 3227 रन) को पीछे छोड़कर टी20 इंटरनेशनल क्रिकेट में सर्वाधिक रन बनाने वाले बल्लेबाज भी बन गए। उनके अब 111 मैचों में 3248 रन हो गए हैं।

भुवनेश्वर पर न्यूजीलैंड के इस बल्लेबाज ने आक्रामक रूख अपनाते हुए उनके दूसरे ओवर की शुरूआत छक्का जड़कर की। भारत को पहली सफलता दीपक चाहर ने गप्टिल को आउट कर दिलायी जिन्होंने इस गेंदबाज की पहली गेंद को छक्के के लिए भेजा था। पर गप्टिल दूसरी गेंद पर ऊंचा खेलने के प्रयास किया और विकेटकीपर ऋषभ पंत ने उनका कैच लपक लिया। फिर बल्लेबाजी के लिए मार्क चैपमैन उतरे, जिन्होंने पहले मैच में अर्धशतकीय पारी खेली थी। वह यहां भी बड़ी पारी की ओर बढ़ रहे थे, उन्होंने और मिशेल ने 27 गेंद में 31 रन जोड़ लिये थे। पर नौंवे ओवर में अक्षर पटेल पर चौका लगाने के बाद बड़ा शॉट खेलने के प्रयास में केएल राहुल को कैच देकर आउट हो गये। उन्होंने 17 गेंद में तीन चौके से 21 रन बनाए।

दस ओवर के बाद न्यूजीलैंड का स्कोर दो विकेट पर 84 रन था। अगले ओवर में अक्षर पटेल ने फिर एक और विकेट लपकने का मौका दिलाया, पर वेंकटेश अय्यर ग्लेन फिलिप्स का कैच लपकने से चूक गये। इंडियन प्रीमियर लीग के इस चरण में 'पर्पल कैप' हासिल करने वाले पहले अनकैप्ड गेंदबाज हर्षल पटेल ने 12वें ओवर में मिशेल (28 गेंद में तीन चौके) के रूप में अपना पहला अंतरराष्ट्रीय विकेट झटका। मिशेल ने गुडलेंथ गेंद को लांग आन में खेलने का प्रयास किया और न्यूजीलैंड ने बड़ा विकेट गंवा दिया। न्यूजीलैंड को चौथा झटका 125 रन के स्कोर पर टिम सिफर्ट (13) के रूप में लगा जो अश्विन के अंतिम ओवर में शार्ट थर्डमैन पर खड़े भुवनेश्वर को आसान कैच दे बैठे।

बीसीसीआई ने बताया, मोहम्मद सिराज को दूसरे टी-20 में क्यों नहीं मिला मौका

नई दिल्ली। भारतीय तेज गेंदबाज मोहम्मद सिराज न्यूजीलैंड के खिलाफ तीन मैचों की टी20 सीरीज के पहले मैच में फील्डिंग के दौरान बाएं हाथ में चोट लगा बैठे थे, जिसके कारण उन्हें शुक्रवार को दूसरे टी20 मैच से बाहर होने के लिए मजबूर होना पड़ा। सिराज से बाहर होने के बाद आईपीएल 2021 में सबसे ज्यादा विकेट लेने वाले तेज गेंदबाज हर्षल पटेल को टीम में मौका मिला है। हर्षल इस मैच से टी20 इंटरनेशनल क्रिकेट में डेब्यू कर रहे हैं। पूर्व तेज गेंदबाज अजीत आगरकर ने हर्षल पटेल को डेब्यू कैप दिया। हर्षल ने 30 साल और 361 दिन में टी20 इंटरनेशनल क्रिकेट में डेब्यू किया है। भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड (बीसीसीआई) ने एक बयान में कहा, 'जयपुर में पहले टी20 इंटरनेशनल मैच में अपनी गेंदबाजी पर फील्डिंग के दौरान सिराज के बाएं हाथ के ऊंगलियों के बीच (वेब) में चोट लग गई थी। बीसीसीआई की चिकित्सा टीम उनकी प्रगति पर नजर रखे है।' भारत ने पहले टी20 में पांच विकेट से जीत हासिल की थी जिसमें सिराज ने चार ओवर में 39 रन दिये थे और एक विकेट लिया था। रांची के जेएससीए इंटरेशनल स्टेडियम में खेले जा रहे दूसरे टी20 मुकाबले में भारत ने टॉस जीतकर पहले गेंदबाजी का फैसला लिया है। टीम इंडिया इस समय सीरीज में 1-0 से आगे है।

न्यूजीलैंड के पूर्व कोच माइक हेसन ने बताया, क्या है भारतीय बल्लेबाजों की सबसे बड़ी कमी

नई दिल्ली। न्यूजीलैंड के पूर्व कोच माइक हेसन ने इन दावों का खंडन किया है कि न्यूजीलैंड टीम ऑस्ट्रेलिया से डरती है।उन्होंने कहा कि ऑस्ट्रेलियाई खिलाड़ी स्विंग गेंदबाजी को बेहतर खेल लेते हैं जिसमें भारत को दिक्कत आती रही है। न्यूजीलैंड को टी-20 वर्ल्ड कप फाइनल में ऑस्ट्रेलिया ने हराया । इससे पहले 2015 वनडे वर्ल्ड कप फाइनल में भी उसे ऑस्ट्रेलिया ने मात दी थी। हेसन ने 'सेन न्यूजीलैंड' से कहा,'हमने उन्हें चैपल हैडली ट्रॉफी में पिछले छह सात साल में कई बार हराया।' दूसरी ओर भारत का आईसीसी टूर्नामेंटों में न्यूजीलैंड के खिलाफ खराब रिकॉर्ड रहा है। आखिरी बार 2003 वर्ल्ड कप में सौरव गांगुली की कप्तानी में आखिरी बार भारतीय टीम ने किसी आईसीसी टूर्नामेंट में न्यूजीलैंड को मात दी थी।

मार्टिन गप्टिल ने रचा इतिहास, विराट कोहली का वर्ल्ड रिकॉर्ड तोड़कर टी-20 के नए 'बॉस' बने

रांची। न्यूजीलैंड के सलामी बल्लेबाज मार्टिन गप्टिल टी-20 इंटरनेशनल मैचों में सर्वाधिक रन बनाने वाले बल्लेबाज बन गए हैं। गप्टिल ने इस मामले में भारत के पूर्व टी20 कप्तान विराट कोहली का रिकॉर्ड तोड़ दिया है। टी20 इंटरनेशनल क्रिकेट में सबसे ज्यादा छक्के लगाने वाले गप्टिल के नाम अब इस फॉर्मेट में सबसे ज्यादा रन भी हो गए हैं। गप्टिल ने भारत और न्यूजीलैंड के बीच रांची के जेएससीए इंटरनेशनल स्टेडियम में खेले जा रहे तीन टी-20 मैचों की सीरीज के दूसरे मुकाबले में शुक्रवार को यह उपलब्धि हासिल की। उन्होंने मुकाबले में 15 गेंदों पर तीन चौके और दो छक्कों की मदद से 31 रनों की पारी खेली। गप्टिल के अब 111 टी20 इंटरनेशनल मैचों में 3248 रन हो गए हैं। इसमें उनके नाम दो शतक और 19 अर्धशतक दर्ज है।

गप्टिल को कोहली का रिकॉर्ड तोड़ने के लिए 11 रनों की जरूरत थी और कीवी बल्लेबाज ने भुवनेश्वर कुमार के पहले ही ओवर में तीन चौके लगाकर यह उपलब्धि हासिल कर ली। पहले टी-20 मैच में गप्टिल ने 70 रनों की पारी खेली थी। अपनी इस पारी में उन्होंने तीन चौकों और 4 छक्कों की मदद से 42 गेदों में ये रन बनाए। कोहली ने 95 टी-20 मैचों की 87 पारियों में 52.04 की औसत से 3227 रन बनाए हैं। रोहित शर्मा इस लिस्ट में तीसरे नंबर पर हैं। उन्होंने 117 मैचों में 3086 रन बनाए। कोहली इस टी20 सीरीज से आराम दिया गया है। भारतीय टी-20 टीम के नए कप्तान रोहित ने पहले टी-20 मैच में 36 गेंदों में 48 रन बनाए। गप्टिल की बात करें तो अच्छे टच में दिख रहे हैं।

अपने 450वें टी-20 मैच में शोएब मलिक की बड़ी लापरवाही आई सामने

नई दिल्ली। टी-20 वर्ल्ड कप में शानदार प्रदर्शन करने वाली पाकिस्तान क्रिकेट टीम इस समय बांग्लादेश दौरे पर तीन मैचों की टी20 सीरीज खेल रही है। पहले ही मैच में पाकिस्तान ने बांग्लादेश को चार विकेट से हराकर सीरीज में 1-0 की बढ़त बना ली है।

इस मैच में पाकिस्तान के अनुभवी ऑलराउंडर शोएब मलिक टी20 में अपना 450वां मैच खेलने उतरे। बड़े मैच में मलिक की एक बड़ी लापरवाही सामने आई, जिस वजह से वह खाता खोले बिना पवेलियन लौट गए। 128 रन के लक्ष्य को पाकिस्तान ने 19.2 ओवर में हासिल किया। शादाब खान ने

सिक्स मारकर टीम को जीत दिलाई। पाकिस्तान की तरफ से फखर जमां ने सर्वाधिक 34 रन बनाए। शादाब खान 21 और मोहम्मद नवाज 18 रन बनाकर नॉटआउट रहे।

पाकिस्तान ने एक समय तक 5 ओवर में 23 रन पर तीन विकेट गंवा दिए थे। इसके बाद मलिक बल्लेबाजी के लिए आए। मलिक मैच में अजीबोगरीब अंदाज में रन आउट हो गए। उनके आउट होने के बाद सोशल मीडिया इसके काफी चर्चे हो रहे हैं। मलिक ने पाकिस्तान की पारी के छठे ओवर में मुस्तफिजुर रहमान की गेंद को डिफेंस किया। गेंद सीधे विकेटकीपर नरुल हसन के पास चली गई और मलिक क्रीज के बाहर टहल रहे थे। तभी हसन ने गेंद को विकेट पर मार दी और तीसरे अंपायर ने उन्हें आउट करार दे दिया। वह तीन गेंदों का सामना करने के बाद भी खाता खोले पवेलियन लौट गए। इससे पहले, बांग्लादेश ने पहले बल्लेबाजी करते हुए निर्धारित 20 ओवरों में 7 विकेट गंवाकर 127 रन बनाए। बांग्लादेश की तरफ से अफिफ हुसैन ने 34 गेंदों में दो चौकों और दो छक्कों की मदद से सर्वाधिक 36 रन बनाए।

नोडल शिक्षकों ने सीखा ड्राप आउट बच्चों को शिक्षा से जोडने का गुर

अखंड भारत संदेश

ज्ञानपुर। बेसिक शिक्षा से कट चुके बच्चों को फिर से शिक्षा की मुख्य धारा से जोड़ा जाएगा। इसके लिए नोडल शिक्षकों को प्रशिक्षित किया गया।

विकास खंड अभोली में शारदा अभियान के तहत नोडल शिक्षकों का प्रथम बैच के प्रशिक्षण शिविर का आज समापन हुआ। प्रशिक्षण में पांच वर्ष से 14 वर्ष की आयु वाले ड्रॉप आउट बच्चो को चिंहित करना एवम उनका नामांकन करने और शिक्षा की मुख्य धारा से किस प्रकार जोड़ा जाए इस पर अध्यापको को प्रशिक्षित किया गया।

खंड शिक्षा अधिकारी नीरज श्रीवास्तव ने कहा कि बच्चे हमारे देश के भविष्य हैं। इन्हे प्राथमिक शिक्षा प्रदान करना हम सबका दायित्व है। यदि कोई बच्चा नामांकन के बाद 45 दिन तक लगातार अनुपस्थित रहता है, तो

शारदा अभियान के तहत नोडल शिक्षकों के प्रथम बैच के प्रशिक्षण शिविर का समापन

प्रशिक्षण देते संदर्भदाता व मौजूद बीईओ नीरज श्रीवास्तव

वह ड्रॉप आउट बच्चों की श्रेणी में आएगा। ऐसे बच्चों को चिह्नित कर उन्हे मुख्य धारा से जोडना है। संदर्भदाता के रूप में संतोष पाल, संतोष सिंह, भैरवानंदतक ने विषयवार बच्चों को किस प्रकार शिक्षित किया जाए, इसके बारे में विधिवत जानकारी प्रदान की गई। इस अवसर पर संध्या सिंह, इंद्रजीत सोनकर, सूबेदार यादव, केके गुप्ता, धनंजय गुप्ता, जगदीश चंद श्रीवास्तव, शिवशंकर यादव, चंद्रेश, राधा केवट, इत्यादि उपस्थिति रहे।

विशेष अदालत में निपटाए जाएंगे वैवाहिक मामले

अखंड भारत संदेश

भदोही। वैवाहिक/पारिवारिक मामलों के निस्तारण के लिए जिला विधिक सेवा प्राधिकरण के बैनर तले विशेष लोक अदालत का आयोजन किया जा रहा है। इस विशेष अदालत में उक्त प्रकार के प्रकरणों का निपटारा सुलह-समझौते के आधार पर करवाया जाएगा। इसमें किसी भी प्रकार क्षति के बिना सुलभ न्याय दिया जाएगा।

इस विशेष अदालत के आयोजन से पक्षकारों को न सिर्फ समय से न्याय मिल पाएगा, बल्कि आर्थिक क्षति से भी राहत मिलेगी। राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण के निदेशानुसार जिला जज के मार्गदर्शन में दीवानी न्यायालय परिसर में आगामी 22 जनवरी को पति एवं पत्नी के मध्य विभिन्न कारणों से उत्पन्न हुए पारिवारिक व वैवाहिक विवादों के त्वरित व सुलभ निस्तारण के लिए विशेष लोक अदालत का आयोजन किया जाएगा। कोई भी पक्षकार अपने

22 जनवरी को होगा विशेष लोक अदालत का आयोजन

वैवाहिक व परिवारिक मामलों के निस्तारण के लिए जिला विधिक सेवा प्राधिकरण में प्रार्थना पत्र दे सकता है। यदि पति व पत्नी के बीच विवादों के संबंध में थाना पर अभियोग पंजीकृत है और मामला अभी विवेचनाधीन है, तो ऐसे मामलों के निस्तारण के लिए भी प्रकरण को जिला विधिक सेवा प्राधिकरण में दे सकते हैं, जहां दोनों पक्षों के पक्षकारों से आपसी सहमति से किए गए सुलह समझौते के माध्यम से निस्तारण

सुलह-समझौतों के आधआर पर किया जाएगा निपटारा

का प्रयास किया जाएगा। जिला विधिक सेवा प्राधिकरण के द्वारा विपक्षी को नोटिस भेजकर उसे बुलाया जाएगा और लोक अदालत के माध्यम से विशेषज्ञों द्वारा समझा-बुझाकर समझौता कराया जाएगा। पक्षों द्वारा आपसी सहमति से किए गए समझौते के संबंध में लोक अदालत अपना निर्णय पारित करेगा और उक्त निर्णय पक्षों के मध्य सिविल न्यायालय की डिक्री के समान बाध्यकारी होगा। यदि सुलह समझौता हो जाता है तो इसके लिए गठित पीठ द्वारा, जो आदेश पारित किया जाएगा उसे किसी न्यायालय में चुनौती नहीं दी जा सकती। यह आदेश अंतिम आदेश होगा। ऐसे पारिवारिक व वैवाहिक विवादों के आपसी सहमति से समझौतों के माध्यम के निस्तारण से पति व पत्नी के साथ ही उनके बच्चों का भविष्य भी सुरक्षित रहेगा, साथ ही पक्षकारों का समय व आर्थिक नुकसान नहीं होगा और न्यायालयों के लंबित मुकदमों की संख्या में भी कमी आएगी।

सपा करेंगी स्व.डा.अशोक पाल के परिजनों को एक लाख रुपए की मदद

अखंड भारत संदेश

सुरियावां। समाजवादी पार्टी के प्रदेश महासचिव श्यामलाल पाल शुक्रवार को क्षेत्र के भिखारीरामपुर गांव में स्थित स्व.डा.अशोक कुमार के घर पहुंचे। जहां पर उन्होंने उनके परिजनों से मुलाकात की और शोक संवेदना जताई। साथ ही समाजवादी पार्टी की तरफ से एक लाख रुपए के आर्थिक मदद देने की घोषणा की।

इस दौरान समाजवादी पार्टी के प्रदेश महासचिव ने कहा कि स्व.डा.अशोक कुमार पाल पढ़ने में काफी अच्छे थे और पिता की मौत व गरीबी के बावजूद भी उनकी माता उनको मेडिकल की पढ़ाई पढ़ा रही थी। एमबीबीएस के अंतिम वर्ष के छात्र की महाराष्ट्र के उसी कालेज कैंपस में हत्या कर दी गई। जहां से वे पढ़ाई कर रहे थे। उन्होंने कहा कि समाजवादी पार्टी महाराष्ट्र सरकार से मांग करेगी कि स्व.डा.अशोक कुमार पाल के परिवार को आर्थिक सहायता प्रदान करें। वहीं पर शोक सभा का आयोजन किया गया। जहां पर दो मिनट का मौन रख गतात्मा की शांति के लिए ईश्वर से प्रार्थना की गई।

जयंती पर याद की गयी पूर्व प्रधानमंत्री

ज्ञानपुर। देश की प्रथम महिला प्रधानमंत्री भारतरत्न स्व. श्रीमती इंदिरा गांधी के जन्म दिवस पर जिला कांग्रेस कमेटी के तत्वावधान में शुक्रवार को आयोजित समारोह में कांग्रेस जनों ने उनके बताए रास्ते पर चलने का संकल्प लिया। इस मौके पर जिला अध्यक्ष डॉ राजेंद्र कुमार दूबे राजन ने कहा कि आज देश में जाति धर्म के नाम पर समाज को बांटने वाली शक्तियों के मंसूबों को नाकाम करने के लिए श्रीमती गांधी के विचारों पर चलने की आवश्यकता है। पूर्व जिला पंचायत सदस्य सुरेश चन्द्र मिश्र ने श्रीमती गांधी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर प्रकाश डाला तथा सभी कांग्रेस जनों से एकजुट होकर कार्य करने का आह्वान किया। इसके पूर्व लोगों ने श्रीमती गांधी के चित्र पर माल्यार्पण कर दिवंगत नेता के प्रति श्रद्धा सुमन अर्पित किया।

नगर में निकाली गई भारत माता की भव्य शोभायात्रा

अखंड भारत संदेश

भदोही। भारतीय जनता पार्टी द्वारा शुक्रवार को नगर के स्टेशन रोड स्थित मिडिल स्कूल के पास से आजादी के 75 वीं अमृत महोत्सव के उपलक्ष्य में भारत माता की भव्य शोभायात्रा निकाली गई। जिसका नई बाजार में स्थित काली माता मंदिर के पास पहुंचने पर समापन किया गया।

इस दौरान भारत माता शोभायात्रा का शुभारंभ नगर के स्टेशन रोड स्थित मिडिल स्कूल से पालिकाध्यक्ष अशोक कुमार जायसवाल ने शोभायात्रा में शामिल भारत माता की झांकी का आरती कर किया। उसके बाद डीएम व रथ के साथ वहां से शोभायात्रा प्रस्थान कर आगे के लिए रवाना हो गई। जो नगर के लिप्पन तिराहा, कल्लन शाह तकिया, अजीमुल्लाह चौराहा, भरत तिराहा, मर्यादपट्टी, एकमा तिराहा व गुलौरा होते हुए

शोभायात्रा में लगाएं गए भारत माता की जय व बंदे मातरम

नई बाजार नगर में प्रवेश की। काली माता मंदिर के पास पहुंचने पर उसका समापन किया गया। शोभायात्रा में शामिल लोग भारत माता की जय, बंदे मातरम आदि नारे लगाते हुए चल रहे थे। वहीं डीजे पर देश भक्ति के गीत बच रहे थे। शोभायात्रा में शामिल युवा आगे-आगे तिरंगा लहराते हुए चल रहे थे। इस मौके पर भाजपा के वरिष्ठ नेता ओमप्रकाश पांडेय, दिलीप गुप्ता, संदेश योगी, विनीत बरनवाल, विनय उमर, लालता सोनकर, दिलीप दुबे, राजीव मोदनवाल, स्नेहलता श्रीवास्तव, प्रिंस गुप्ता, गिरधारी जायसवाल, करुणा शंकर दुबे, अरविंद मौर्य, मो.अली सिद्दिकी, ओमप्रकाश श्रीवास्तव आदि प्रमुख रूप से मौजूद रहे।

जिला क्रिकेट लीग का आयोजन 1 दिसंबर से

भदोही। जिला क्रिकेट एसोसिएशन के तत्वाधान में 1 दिसंबर से जिला स्टेडियम मूंसीलाटपुर में जिला क्रिकेट लीग अंडर 16 का आयोजन होने जा रहा है। खिलाडीयो का ट्रायल 27 व 28 नवंबर को किया जायेगा। जानकारी देते एसोसिएशन के सचिव खालिद अंसारी ने बताया कि ट्रायल के पश्चात 8 टीमो का चयन होगा। प्रत्येक टीमे 13 सदस्यीय रहेगी। 8 टीमों को दो ग्रुप में बाटा जायेगा। प्रत्येक टीम को 3 लीग मैच खेलने का अवसर दिया जायेगा। सभी मैच कलर ड्रेस व सफेद बाल से खेला जायेगा। चार टीम जिसके अंक अधिक होगें वही सेमिफाइनल खेलेंगा।

अमृत महोत्सवः सिर पर कलश रख छात्राओं ने निकाली प्रभातफेरी

अखंड भारत संदेश

चौरी। स्वतंत्रता की 75वीं वर्षगांठ के अवसर पर शुक्रवार को अमृत महोत्सव कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसमें महिलाओं एवं स्कूली छात्राओं के द्वारा कलश के साथ प्रभात फेरी निकाली गई। इसके अलावा एक रथ पर भारत माता की झांकी भी निकाली गई। कलश यात्रा का समापन भारतीय इंटर कॉलेज परसीपुर के प्रांगण में किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता वरिष्ठ नेता मिठाई लाल दुबे ने की। अमृत महोत्सव में सर्वप्रथम छात्राओं के द्वारा राष्ट्रीय गीत प्रस्तुत किया गया। तत्पश्चात भारत माता की विधिविधान से पूजा-अर्चना की गई।

सम्मानित किए गए स्वतंत्रता संग्राम सेनानी

कलश फेरी निकालती छात्राएं

वहीं भदोही विकास खंड के अंतर्गत आने वाले सभी स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों व लोकतंत्र सेनानियों को अंगवस्त्रम एवं राम दरबार देकर सम्मानित किया गया। इस अवसर पर प्रमुख वक्ता प्रमोद चतुवेर्दी व डॉ. गिरीश मिश्रा ने अपने उद्बोधन में देश के स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों के त्याग और बलिदान पर प्रकाश डाला। और, लोगों में राष्ट्र के प्रति कुछ कर गुजरने की भावना पैदा करने के लिए प्रेरित किया। कहा कि देश प्रेम के जरिए ही हम अपने देश को दुनिया का सबसे श्रेष्ठ राष्ट्र बना सकते हैं।कलश यात्रा के दौरान भारत माता की जय, हरहर महादेव के नारे लगाते हुए पुष्प वर्षा की गई। कार्यक्रम में मुख्य रूप से संदेश योगी, बसंत लाल गुप्ता, श्याम बिहारी पटेल, अखिलेंद्र सिंह, गौरव, धर्मेंद्र दुबे, सर्वेश सिंह, राकेश दुबे, लड्डू तिवारी, अवनीश दुबे, अमित उपाध्याय, राकेश मिश्र आदि उपस्थित रहे।

जब तक नायडू सीएम नहीं बन जाते तब तक आधी मूंछ और बाल ही रखूंगा, बोले टीडीपी नेता

नई दिल्ली। तेलुगु देशम पार्टी के एक नेता ने कहा है कि वो तब तक अपनी आधी मूंछे और बाल मुंडवाते रहेंगे जब तक कि चंद्रबाबू नायडू मुख्यमंत्री नहीं बन जाते है। टीडीपी नेता केप्पेरा श्रीनिवासुलू ने अपने आधे बाल और मूंछ मुंडवा लिये हैं। मीडिया से बातचीत में उन्होंने कहा कि वो अपनी आधी मूंछे और आधी बाल ही रखेंगे जब तक कि चंद्रबाबू नायडू आंध्र प्रदेश के सीएम नहीं बन जाते।

केप्पेरा श्रीनिवासुलू के हाथ में एक स्लेट भी नजर आया जिसमें वो लोगों से अपील कर रहे थे वो मुख्यमंत्री वाईएस जगनमोहन रेड्डी को सत्ता से बेदखल कर चंद्रबाबू नायडू को सीएम बनाएं। केप्पेरा श्रीनिवासुलू को हाल ही में नेल्लोर कॉरपोरेशन चुनाव में हार का सामना करना पड़ा है। केप्पेरा श्रीनिवासुलू ने दावा किया है कि सत्तारुढ़ वाईएसआरसीपी ने उन्हें हराने के लिए मतों की हेराफेरी की है। उनका यह भी आरोप है कि राज्य के मंत्री अनिल कुमार और उनके सपोटर्स ने नेल्लोर में पैसे देकर मतदाताओं को खरीदा है। चंद्रबाबू नायडु के समर्थन में केप्पेरा श्रीनिवासुलू का यह ऐलान उस वक्त आया जब पूर्व सीएम ने ऐलान किया कि वो विधानसभा में तब ही आएंगे जब वो राज्य के सीएम बन जाएंगे। तेलुगु देशम पार्टी के अध्यक्ष और आंध्र प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री एन चंद्रबाबू नायडू ने शुक्रवार को घोषणा की कि वह सत्तारूढ़ वाईएसआर कांग्रेस पार्टी के सदस्यों द्वारा उन्हें अपमानित किए जाने के विरोध में वर्तमान कार्यकाल के शेष समय में विधानसभा में प्रवेश नहीं करेंगे।

उन्होंने कहा, मैं इसके बाद इस सभा में शामिल नहीं होउंगा। मैं फिर से मुख्यमंत्री बनने के बाद ही सदन में लौटूंगा।ह्व विधानसभा से बाहर निकलने से पहले नायडू काफी भावुक दिखे। उनके आंखों में आंसू थे। उन्होंने हाथ जोड़ रखा था। उन्होंने शीतकालीन सत्र के दूसरे दिन महिला सशक्तिकरण पर बहस के दौरान विधानसभा में उनके और उनकी पत्नी के खिलाफ वाईएसआरसीपी सदस्यों द्वारा की गई कथित अपमानजनक टिप्पणियों पर कड़ी नाराजगी व्यक्त की। इतना ही नहीं मंगलागिरी में टीडीपी के राज्य मुख्यालय में संवाददाता सम्मेलन को संबोधित करते हुए, 71 वर्षीय नायडू फूट-फूट कर रो पड़े। वह कुछ मिनटों के लिए नहीं बोल सके, क्योंकि उसकी आवाज भावनाओं से बंधी हुई थी। वह कुछ मिनटों के लिए अपने चेहरे को हाथों से ढंक कर रो रहे थे। उन्होंने कहा कि उनकी पत्नी कभी राजनीति में नहीं रहीं। रोते हुए नायडू ने कहा, ह्लचाहे मैं सत्ता में रहूं या बाहर, मेरे जीवन के हर कदम पर मुझे प्रोत्साहित करने के अलावा, उन्होंने कभी भी राजनीति में हस्तक्षेप नहीं किया। फिर भी, उन्होंने मेरी पत्नी को अपमानित करने की कोशिश की।

नदी के बीचों बीच फंसे 10 लोगों की अटकी सांसे, वायुसेना ने बचाई जान

नई दिल्ली। आंध्र प्रदेश के कई जिलों में भारी बारिश का कहर जारी है। ताजा घटनाक्रम के मुताबिक अनंतपुर जिले में चित्रावती नदी का जलस्तर बढ़ गया। नदी में 10 लोग फंस गए। वे लगातार मदद की गुहार लगा रहे थे। ऐसे में भारतीय वायुसेना के एमआई-17 विमान के जरिए इन लोगों को रेस्क्यू किया गया। मिली जानकारी के अनुसार, आंध्रप्रदेश में मौसम विभाग ने भारी बारिश की चेतावनी जारी की है। यहां अनंतपुर जिले में चितत्रावाती नदी में अचानक जलस्तर बढ़ गया। जलस्तर इतना बढ़ गया कि पानी पुल के ऊपर से बह रहा था, तभी एक कार में सवार चार लोग पुल पार कर रहे थे। लेकिन वे बाढ़ के पानी में फंस गए। देखते ही देखते कार बह गई। इस बीच लोग मदद की गुहार लगाने लग गए। उन्हें बचाने के लिए स्थानीय स्तर पर 6 लोग जेसीबी लेकर पहुंचे। लेकिन पानी में जेसीबी भी फंस गई। ऐसे में 10 लोग मदद के लिए चीख-पुकार मचाने लगे। इस बीच किनारे पर मौजूद कुछ लोगों ने रस्सियों के

सहारे से उन लोगों को रेस्क्यू करने की कोशिश की लेकिन वे कामयाब नहीं हो सके। ऐसे में भारतीय वायुसेना के एमआई-17 हेलीकॉप्टर से चित्रावती नदी में फंसे 10 लोगों को सफलता पूर्वक रेस्क्यू किया गया। बता दें, बंगाल की खाड़ी में बने दबाव की वजह से आंध्र प्रदेश के कई तटीय जिलों में बारिश कहर बरपा रही है। नेल्लूर, चित्तूर, कड़पा, जिलों में बीते रोज से भारी बारिश हो रही है, कई निचले इलाकों में बाढ़ जैसे हालात बने हुए है।

बारिश का सबसे ज्यादा असर चित्तूर, कड़पा और नेल्लूर जिलों में देखने को मिल रहा है। इन जिलों के कई निचले इलाकों में जल भराव हो गया है, नदी नहर सब कुछ ऊफान पर हैं। सड़कों में भी पानी भर गया है। कई इलाकों में पानी की तेज बहाव में सड़कें कट गई है, जिसकी वजह से लोगों की आवाजाही में काफी दिक्कत हो रही है। उधर, प्रशासन की टीम रेस्क्यू अभियान चला रही है। प्रशासन ने संवेदनशील इलाके में रह रहे लोगों से सुरक्षित स्थानों पर ही रहने के निर्देश दिए हैं।

काश! हेडलाइनजीवी के पास नोटबंदी वाले फैसले को रद्द करने का कोई तरीका होता...जयराम रमेश का पीएम पर तंज

नई दिल्ली। पीएम मोदी के तीनों कृषि कानूनों को निरस्त करने के फैसले के बाद देशभर से प्रतिक्रियाएं सामने आ रही हैं। कांग्रेस के वरिष्ठ नेता जयराम रमेश ने पीएम मोदी को हेडलाइनजीवी कहते हुए संबोधित किया और कहा कि काश हेडलाइनजीवी के पास 8 नवंबर 2016 के फैसले को भी रद्द करने का कोई तरीका होता। दरअसल, इस साल की शुरूआत में संसद की कार्यवाही के दौरान पीएम मोदी ने विरोध करने वालों के लिए आंदोलनजीवी शब्द का प्रयोग किया था। ड्डशुक्रवार को देश को संबोधित करते हुए पीएम मोदी ने कहा कि सरकार संसद के शीतकालीन सत्र में कृषि कानूनों को निरस्त करने की प्रक्रिया शुरू करेगी, जो 29 नवंबर से शुरू होने की संभावना है। छोटे किसानों को सशक्त और मजबूत करने के लिए कानून लाए गए थे लेकिन यह दुर्भाग्यपूर्ण है कि सरकार किसानों के एक वर्ग को सुधारों के लाभों के बारे में नहीं

समझा सकी। इस फैसले को उत्तर प्रदेश और पंजाब में चुनाव से पहले प्रदर्शन कर रहे किसानों की जीत और भाजपा के मास्टरस्ट्रोक के रूप में देखा जा रहा है। इस पर देशभर के विभिन्न पार्टियों के नेताओं की प्रतिक्रियाएं सामने आ रही है। इसी कड़ी में वरिष्ठ कांग्रेसी नेता और पूर्व केंद्रीय मंत्री जयराम रमेश ने ट्वीट करते हुए पीएम मोदी पर तंज कसा है। उन्होंने लिखा, ₹पहले संसद में बुलडोज कानून। फिर अभूतपूर्व विरोध का सामना किया। उसके बाद उत्तर प्रदेश और पंजाब में चुनाव से पहले वास्तविकताओं का सामना करते हुए अंत में निरस्त किया। इसमें निश्चित ही किसानों की जीत हुई है। मैं हमारे किसानों के परिश्रम को सलाम करता हूं जिन्होंने आखिर तक हार नहीं मानी।

फिर इस ट्वीट को रिट्वीट करते हुए जयराम रमेश लिखते हैं, ₹काश हेडलाइनजीवी के पास 8 नवंबर 2016 के फैसले को निरस्त करने का कोई तरीका होता। यह वास्तव में एक क्रूर चाल थी, जिसकी कीमत देश आज भी चुका रहा है। बता दें कि करीब एक साल पहले किसानों के मुद्दे पर सरकार की ओर से पलटवार करते हुए पीएम मोदी ने संसद की कार्यवाही के दौरान प्रदर्शनकारियों को आंदोलनजीवी कहा था। पीएम मोदी ने कहा था, ₹हाल के दिनों में लोगों का एक नया वर्ग उभरा है जो सभी आंदोलनों और विरोधों में देखा जा सकता है।

इससे मोदी सरकार सीख लेगी, तीन कृषि कानून वापस लेने पर बोलीं सोनिया गांधी-

700 किसानों का बलिदान रंग लाया

नई दिल्ली। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने तीन कृषि कानूनों को वापस लेने का ऐलान कर दिया है। पीएम के इस ऐलान के बाद कई राजनीतिक दलों की प्रतिक्रिया सामने आई है। कांग्रेस की अंतरिम अध्यक्ष सोनिया गांधी ने केंद्र सरकार के इस फैसले को सत्य और न्याय की जीत करार दिया है। सोनिया गांधी ने कहा, आज 700 से अधिक किसान परिवारों, जिनके सदस्यों ने न्याय के लिए इस संघर्ष में अपने प्राणों की आहुति दी, का बलिदान रंग लाया है। आज सत्य, न्याय और अहिंसा की जीत हुई है। सोनिया गांधी ने आगे कहा कि प्रजातंत्र में कोई भी फैसला प्रत्येक शेयर होल्डर और विपक्ष से चर्चा के बाद ही लेना चाहिए। मुझे आशा है कि मोदी सरकार इससे भविष्य के लिए जरुरी कुछ सीखेगी।

कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष राहुल गांधी ने तीनों केंद्रीय कृषि कानूनों को वापस लिए जाने की प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की घोषणा के बाद शुक्रवार को कहा कि देश के अन्नदाताओं ने सत्याग्रह से अहंकार का सिर झुका दिया है। उन्होंने ट्वीट किया, देश के अन्नदाता ने सत्याग्रह से अहंकार का सिर झुका दिया। अन्याय के खिलाफ ये जीत मुबारक हो! जय हिंद, जय हिंद का किसान! राहुल गांधी ने कृषि कानूनों के खिलाफ कुछ महीने पहले पंजाब में निकाली गई अपनी एक यात्रा के दौरान दिए गए अपने उस बयान एक वीडियो भी साझा किया जिसमें उन्होंने दावा किया था कि केंद्र सरकार एक दिन ये कानून वापस लेने को मजबूर होगी। उल्लेखनीय है कि प्रधानमंत्री मोदी ने पिछले करीब एक वर्ष से अधिक समय से विवादों में घिरे तीन कृषि कानूनों को वापस लिए जाने की घोषणा की और कहा कि इसके लिए संसद के आगामी सत्र में विधेयक लाया जाएगा। तीनों कृषि कानूनों के विरोध में किसान आंदोलन कर रहे थे।

सभा में कांग्रेस के नेता अधीर चौधरी ने शुक्रवार को कहा कि आगामी विधानसभा चुनावों में अशुभ नतीजों को भांपते हुए भाजपा सरकार ने अपमान का घूंट पी लिया। कांग्रेस की कार्यकारी समिति के सदस्य चौधरी ने कहा कि पार्टी के वरिष्ठ नेता राहुल गांधी ने पहले ही कहा था कि केंद्र को तीनों कानूनों को वापस लेने के लिए विवश होना पड़ेगा और उनकी भविष्यवाणी सच हो गयी है। उन्होंने कहा, यह निश्चित ही किसानों के लिए ऐतिहासिक जीत है। आजादी के बाद से देश ने किसानों का कभी इतना बड़ा प्रदर्शन नहीं देखा। भाजपा ने शुरूआत में सोचा कि यह प्रदर्शन शांत हो जाएगा, जैसा कि वह मानती है कि देश में केवल वही अनुशासित राजनीतिक ताकत है। भाजपा और हमारे प्रधानमंत्री ने किसानों की लड़ाई की भावना को गलत समझा। यह भाजपा के अहंकार की हार है। एनसीपी मुखिया शरद पवार ने कृषि कानूनों का निरस्त किये जाने को देश के कुछ राज्यों में अगले साल होने वाले विधानसभा चुनाव से जोड़ते हुए कहा, जैसे-जैसे यूपी, पंजाब के चुनाव नजदीक आए और हरियाणा, पंजाब में लोगों ने बीजेपी का बहिष्कार करना शुरू कर दिया।

कृषि कानूनों की वापसी के बाद फिर बीजेपी-एसएडी का होगा गठबंधन सुखबीर बादल ने दिया जवाब

चंडीगढ़। केंद्र सरकार ने तीनों कृषि कानूनों को वापस ले लिया है। पंजाब, यूपी सहित 5 राज्यों में विधानसभा चुनाव से पहले मोदी सरकार के इस फैसले से कई राजनीतिक समीकरण बदल सकते हैं। ऐसे में सवाल यह भी उठ रहा है कि क्या भारतीय जनता पार्टी और शिरोमणि अकाली दल के बीच दोबारा गठबंधन होगा क्योंकि कृषि कानूनों के विरोध में ही अकाली दल ने भगवा दल से नाता तोड़ लिया था। इस बीच, सुखबीर बादल ने इस संभावना को खारिज किया है।

सुखबीर बादल ने मोदी सरकार के फैसले पर कहा, 700 जानें (आंदोलन के दौरान) चली गई हैं, शहादतें हो गई हैं, यही बात मैंने संसद में पीएम से कहा था कि जो आपने काले कानून बनाए हैं, इन्हें देश के किसान नहीं मानते। आप मत कानून लेकर आएं, जो हमने बात कही थी वह सच हुई। सुखबीर बादल से जब पूछा गया कि क्या अकाली दल दोबारा बीजेपी से गठबंधन करेगी तो उन्होंने इसका जवाब ना में दिया।

कृषि कानूनों की वजह से ही बीजेपी का अकाली दल से दो दशक पुराना नाता 2020 में टूट गया था। अकाली दल का भगवा दल के साथ गठबंधन ऐसे समय में हुआ था, बीजेपी को राष्ट्रीय

राजनीति में अछूत माना जाता था। सितंबर 2020 में यह गठबंधन टूट किया। अकाली दल के कोटे से मोदी सरकार में खाद्य प्रसंस्करण मंत्री हरसिमरत कौर बादल ने इस्तीफा दे दिया था। हालांकि, अध्यादेश जारी करते समय अकाली दल ने सरकार का साथ दिया था, लेकिन संसद से कानून पास होते समय यूटर्न ले लिया।

चीनी कम्युनिस्ट पार्टी के नेता पर यौन आरोप लगाने के बाद टेनिस स्टार पेंग गायब, सरकार ने कहा- हमें कुछ नहीं पता

नई दिल्ली। 2 नवंबर को टेनिस स्टार पेंग शुआई ने चीनी कम्युनिस्ट पार्टी के एक नेता पर #टीळङ्घङ्घ का आरोप लगाया तो चीन सरकार मामले को दबाने में लगी हुई है। अब दो हफ्ते से अधिक से 35 साल की पेंग के गायब होने के बाद से दुनिया की महिला टेनिस समुदाय के साथ ही खेलप्रेमी उनके लिए आवाज उठा रहे हैं। बता दें कि पेंग चीन के लिए तीन ओलंपिक मेडल जीत चुकी हैं। पेंग ने 2 नवंबर को चीन के पूर्व प्रधानमंत्री झांग गाओली पर आरोप लगाया कि उन्होंने जबरन सेक्स करने को मजबूर किया था। यह बात उन्होंने सोशल मीडिया पर भी लिखी थी। इसके बाद से वेंग गायब है और उनके हक में आवाज उठा रहे लोग जानना चाहते हैं कि वेंग आखिर कहां है। चीनी सरकारी मीडिया ने हाल ही में पेंग के ईमेल का एक स्क्रीनशॉट जारी कर बताया है कि पेंग ने यौन आरोपों को वापस ले लिया है और उन्होंने बताया है कि सब कुछ ठीक है। यह जानकारी वर्ल्ड टेनिस एकेडमी को भी दी गई है। हालंकि पेंग के समर्थक इस बात पर यकीन नहीं कर रहे हैं। सोशल मीडिया साइट्स पर लोग जरिए पेंग के समर्थन में लिख रहे हैं। फरवरी 2022 में चीन में शीतकालीन ओलंपिक होने हैं। ऐसे में एक्सपर्ट्स का कहना है कि अगर उससे पहले यह मसला नहीं सुलझता है तो खेल समुदाय और बीजिंग के कड़वाहट बढ़ सकती है और कई देश और

खिलाड़ी ओलंपिक में भाग लेने से मना भी कर सकते हैं। पेंग को चुप कराकर बीजिंग की मुश्किलें और बढ़ गई हैं। चीनी सरकार ने पेंग के मामले पर कमेंट करने से बार-बार इनकार किया है। चीनी विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता झाओ लिजियन ने कहा है कि पेंग का आरोप एक राजनयिक मुद्दा नहीं है और आगे कमेंट करने से इनकार कर दिया।

दिल्ली : 1984 के सिख विरोधी दंगों में लापता युवक की मौत की घोषणा की मांग वाली याचिका खारिज

नई दिल्ली। दिल्ली की एक अदालत ने 1984 के सिख विरोधी दंगों के दौरान लापता हुए एक व्यक्ति को मृत घोषित करने और उसका मृत्यु प्रमाण पत्र जारी करने की मांग वाली याचिका खारिज कर दी है। 31 अक्टूबर 1984 को तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी की हत्या के बाद दंगे भड़क उठे थे। एक 80 वर्षीय व्यक्ति ने अदालत का रुख करते हुए यह दावा किया था कि उसका बेटा अजीत सिंह मोटर पार्ट्स खरीदने के लिए अक्टूबर 1984 के अंतिम सप्ताह में दिल्ली के कश्मीरी गेट आया था, जो नवंबर के पहले सप्ताह में सिख विरोधी दंगों के बाद लापता हो गया था।जम्मू-कश्मीर के रहने वाले मियां सिंह ने अपने लापता बेटे को मृत घोषित करने और उत्तरी दिल्ली नगर निगम के जन्म और मृत्यु रजिस्ट्रार को मृत्यु प्रमाण पत्र जारी करने का निर्देश देने के लिए एक दीवानी मुकदमा दायर किया था। मुकदमे को खारिज करते हुए सिविल जज हेली फर कौर ने कहा कि रिकॉर्ड में ऐसा कुछ भी नहीं है जो यह दशार्ता हो कि अजीत सिंह अक्टूबर 1984 के अंतिम सप्ताह में दिल्ली आए थे। सिविल जज ने 18 नवंबर को दिए एक आदेश में कहा कि अंतिम बहस के दौरान अदालत द्वारा एक प्रश्न पूछे जाने के बावजूद, वादी ने अजीत सिंह का कोई आईडी प्रूफ और ना ही किसी भी तरह का दस्तावेज दिया, जो अदालत को उसकी पहचान और अस्तित्व के बारे में उचित रूप से संतुष्ट कर सके। इसके अलावा, न्यायाधीश ने कहा कि मियां सिंह द्वारा दिए गए दस्तावेजों में प्रबंधक समिति गुरुद्वारा गुरु नानक सत्संग द्वारा जारी प्रमाण पत्र की आंशिक रूप से सुपाठ्य प्रति, पुनर्वास, रिट याचिका, दिल्ली पुलिस कमिश्नर के बीच पत्राचार के लिए प्रधानमंत्री और जम्मू-कश्मीर के एसडीएम को लिखे पत्रों की प्रतियां शामिल हैं।

न्यायाधीश ने कहा कि कोई गुमशुदगी रिपोर्ट उपलब्ध नहीं है क्योंकि पुलिस ने इसे दर्ज करने से इनकार कर दिया और दिल्ली प्रशासन के पास दर्ज कराई गई रिपोर्ट मियां सिंह ने खो दी। न्यायाधीश ने कहा कि मैंने इन दस्तावेजों का सावधानीपूर्वक अध्ययन किया है। हालांकि, कोई भी ठोस सबूत नहीं मिला है जो वादी के दावे का पर्याप्त और संतोषजनक समर्थन करता है क्योंकि सभी दस्तावेज केवल वादी के अभ्यावेदन पर आधारित हैं। वास्तव में, ऐसा हुआ है इसे लेकर वादी और दस्तावेजों के बीच कुछ विरोधाभास है। न्यायाधीश ने उल्लेख किया कि एक रिट याचिका में मियां सिंह ने उल्लेख किया था कि उनका बेटा नवंबर के अंतिम सप्ताह में लापता हो गया था, जबकि शिकायत में यह दावा किया गया था कि वह अक्टूबर के अंतिम सप्ताह में लापता हो गया था।

बैंक के दो सीनियर अधिकारियों पर सीबीआई का शिकंजा, घूस लेते गिरफ्तार

नई दिल्ली। सीबीआई की टीम ने शुक्रवार को बड़ी कार्रवाई करते हुए रत्नाकर बैंक लिमिटेड (आरबीएल) के दो सीनियर अधिकारियों को लाखों की घूस लेने के आरोप में गिरफ्तार किया है। दोनों अधिकारियों पर कथित रूप से 30 लाख रुपए की घूस लेने का आरोप है। मिली जानकारी के अनुसार, सीबीआई की टीम ने शुक्रवार को आरबीएल बैंक के दो अधिकारियों निमेश और सौरभ भसीन को गिरफ्तार किया। निमेश अहमदाबाद में रत्नाकर बैंक लिमिटेड में एग्रो डिविजन का रिजनल हेड मैनेजर है। जबकि सौरभ पुणे में रत्नाकर बैंक लिमिटेड में रिकवरी हेड है। सीबीआई अधिकारी ने अपने बयान में कहा कि मूल्यांकन प्रमाण पत्र जारी करने के लिए एक करोड़ रुपये का अनुचित लाभ मांगने के आरोप में दोनों के खिलाफ मामला दर्ज किया गया है। एएनआई के मुताबिक, सीबीआई ने कहा कि शिकायतकर्ता ने अपने परिवार के 12 सदस्यों के साथ राष्ट्रीय बागवानी बोर्ड की बागवानी योजना के उत्पादन और कटाई के बाद प्रबंधन के माध्यम से वाणिज्यिक बागवानी के विकास के तहत कृषि सावधि ऋण के लिए आवेदन किया था। जिसमें सरकार 50 प्रतिशत की सब्सिडी देती है। इस स्कीम के तहत प्रति योजना के लिए अधिकतम 56 लाख रुपए प्रस्तावित है। सीबीआई अधिकारियों ने कहा, 'सब्सिडी की अनुपलब्धता के कारण शिकायतकर्ता और उसके परिवार के सदस्यों के सभी कृषि ऋण गैर-निष्पादित संपत्ति (एनपीए) बन गए और सब्सिडी प्राप्त करने के लिए गिरवी रखी गई संपत्तियों के लिए एक मूल्यांकन प्रमाण पत्र की आवश्यकता थी। इसके लिए बैंक अधिकारियों ने इस काम के लिए शिकायतकर्ता के साथ 30 लाख रुपए की घूस मांगी थी। सीबीआई टीम ने शिकायत के आधार पर अहमदाबाद, पुणे और दिल्ली समेत पांच जगहों पर छापेमारी की थी। सीबीआई टीम दोनों को कोर्ट में पेश करेगी। अधिकारियों के मुताबिक आगे की कार्रवाई जारी है।

कोविड को लेकर ऑस्ट्रिया में फिर से पूर्ण लॉकडाउन, वैक्सीन लेना हुआ अनिवार्य

वियना। यूरोप में एक बार फिर से कोरोना वायरस से संक्रमण के मामले लगातार बढ़ते जा रहे हैं। ब्रिटेन, जर्मनी, पोलैंड और ऑस्ट्रिया जैसे देशों में कोविड से फिर से बुरा हाल है। ऑस्ट्रिया ने कोविड ने नई लहर को देखते हुए फिर से इस सर्दी पूर्ण लॉकडाउन की तैयारी में है। ऑस्ट्रिया सरकार ने कहा है कि पूरी आबादी को फरवरी 2022 तक वैक्सीनेट कर लिया जाएगा। सरकार ने टीकाकरण को अनिवार्य कर दिया है। ऑस्ट्रिया की दो तिहाई आबादी को पूरी तरह से कोविड वैक्सीन लग चुकी है। यह पश्चिमी यूरोप में सबसे धीमा है। पिछले एक हफ्ते से ऑस्ट्रिया में हर दिन 10 हजार से अधिक केस सामने आ रहे हैं। पिछले 24 घंटे में कोरोना संक्रमण के 15,145 मामले देखे गए हैं। ऑस्ट्रिया ने उन सभी लोगों के लिए लॉकडाउन लगा दिया है जिनका सोमवार तक टीकाकरण नहीं हुआ है। साल्जबर्ग और ऊपरी ऑस्ट्रिया जैसे प्रदेश कोविड की इस नई लहर से बुरी तरह से प्रभावित हैं। ये दोनों प्रदेश लॉकडाउन लगाने जा रहे हैं। सर्दियां आने के साथ ही यूरोप के कई देश लॉकडाउन की ओर देख रहे हैं। नीदरलैंड सरकार ने रात 8 बजे के बाद रेस्तरां बंद करने का ऐलान किया है और आंशिक लॉकडाउन की शुरूआत कर दी है। ऑस्ट्रिया के स्वास्थ्य मंत्री वोल्फगैंग म्यूकस्टीन ने रात्रि कर्फ्यू की अपील की है।

जो बाइडेन की जगह कमला हैरिस बनेंगी राष्ट्रपति

नई दिल्ली। यूनाइटेड स्टेट की उपराष्ट्रपति कमला हैरिस अमेरिका की राष्ट्रपति बनेंगी। कमला हैरिस अमेरिका की पहली महिला होंगी जिनके पास राष्ट्रपति के पावर होंगे। शुक्रवार को जो बाइडन के स्वास्थ्य की नियमित जांच होगी। इस दौरान उन्हें एनेसथिसिया दिया जाएगा। एनेसथिसिया के प्रभाव से बाहर आने तक कमला हैरिस के पास राष्ट्रपति की ताकतें रहेंगी। 79 साल के बाइडन का शुक्रवार को जन्मदिन भी है। अमेरिका के राष्ट्रपति जो बाइडन वाल्टर रीड नेशनल मिलिट्री मेडिकल सेंटर पहुंचे जहां राष्ट्रपति के तौर पर पहली बार उनकी नियमित चिकित्सा जांच की जाएगी। व्हाइट हाउस की प्रेस सचिव जेन साकी ने ट्वीट कर उनकी चिकित्सा जांच की योजना के बारे में बताया। बाइडन ने दिसंबर 2019 में अपने शरीर की पूरी जांच कराई थी और तब चिकित्सकों ने पूर्व उपराष्ट्रपति को "स्वस्थ" और "राष्ट्रपति का कर्तव्य सफलतापूर्वक निभाने के लिए उपयुक्त" पाया था। 2009 से बाइडन के चिकित्सक डॉ. केविन ओ कोनोर ने तीन पन्नों के नोट में लिखा कि तब राष्ट्रपति के उम्मीदवार रहे बाइडन पूरी तरह स्वस्थ थे।

अंखड भारत संदेश के लिए स्वामी श्री योगी सत्यम क्रियायोग आश्रम एवं अनुसंधान संस्थान झूंसी, प्रयागराज 211019 से प्रकाशित एवं रामा प्रिंटिंग प्रेस 53/25/1ए बेली रोड नया कटरा प्रयागराज से मुद्रित।

मुद्रक/प्रकाशक

स्वामी श्री योगी सत्यम पी.आर.बी. एक्ट के अन्तर्गत समाचारों के चयन के लिए उत्तरदायी। इस समाचार पत्र में प्रकाशित समस्त समाचारों से संबंधित विवादों का न्याय क्षेत्र प्रयागराज होगा। आरएनआई नं.

UPHIN 2001/9025